संस्कृत

ऋजुव्याकरण

प्रथम भाग

पण्डित आदित्यराम भट्टाचार्य्य ने

बनाया

RIJUVYAKARANA

A

SANSKRIT GRAMMAR

IN

HINDI

PART I

BY

ADITYARAM BHATTACHARYA, M. A.

Professor of Sanskrit, Muir Central College.

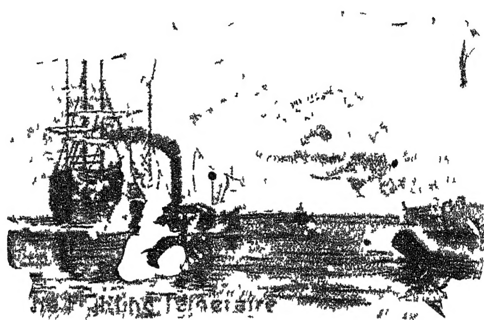
Eighth Edition.

ALLAHABAD.

PRINTED AT THE "INDIAN PRESS

1902

8 ANNAS.] [दाम आठ आने


Temeraire



INSCRIBED

TO

DR. G THIBAUT, PH.D

SUPERINTENDENT OF SANSKRIT STUDIES,

NORTH WESTERN PROVINCES & OUDH,

WITH FEELINGS OF GRATEFUL REGARD

FOR HIS CORDIAL SYMPATHIES

WITH THE CAUSE OF THE ADVANCEMENT

OF SANSKRIT STUDIES





PREFACE

An elementary work on Sanskrit grammar together with exercises for the use of the lower forms in English schools preparing for the Middle Class Examination in the United Provinces is a great *desideratum*. The present book has been prepared to meet this want. The chief difficulty hindering the progress of this work which has taken several months to plan and prepare was its adaptation to the capacities of the very young beginners of so complicated a system of grammar as that of the "language of the gods." That difficulty was intensified by my having to take into consideration the average capacities of the young pupils who read in the lower classes of our schools and the very low state of Sanskrit education here in comparison to that in the schools of Bombay and Bengal.

For reasons, which it would be out of place to enumerate in this place, the vernacular (Hindi) and the classics of the Hindus of the United Provinces are in imminent danger of falling into total disuse in the English schools. The ever increasing preponderance of the number of candidates who take up Urdu and Persian in the Middle Class and higher examinations, over those who take up Hindi and Sanskrit, affords unmistakable signs of the approach of the doom of the people's secular and sacred language. The only gratifying ray of hope amidst this gloom of despondency is that the Head of the Department of Public Instruction and his learned coadjuter, the Superintendent of Sanskrit Studies, are both alive to the dangers that threaten Sanskrit and are willing at heart to restore the Hindu classics to their proper status in the Schools and Colleges.

The present undertaking is the outcome of an order issued by the Director of Public Instruction to introduce the study of Sanskrit in the lower forms preparing for the Middle Class Examination It was necessary therefore to place before the young beginners, in their own vernacular, an elementary text containing as much of grammar and illustrative exercises as would enable them to understand their Middle Class Sanskrit Reader

The preparation of an abridgment of Sanskrit grammar for young boys is not an easy task The compiler must, on the one hand, avoid the temptation of entering too deeply into details, which would make an excessive claim on the time and intelligence of the students And on the other hand, to reduce the bulk of the book, at the expense of thoroughness would mar its general usefulness and create difficulties to the students by not supplying to them instructions on difficulties that crop up in every page of their Reader.

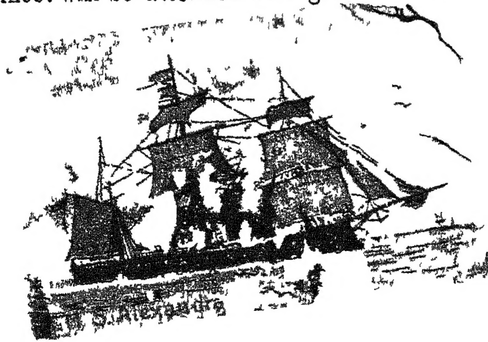
The language of the rules had also to be made as simple as possible, so as to suit the capacities of the average lad reading in the fifth class of an English school And this has to be done for the sake of popularising the study of Sanskrit even at the risk of incurring the ill opinion of the old class of Pundits who will perhaps ridicule it as a vulgar innovation To further adapt it to the use of boys of an English school, all the declensions of cases have not been presented before them at once lest they be frightened at the long array of forms to the like of which they have not before been used Only the first and second class declensions (together with those of the vocative case which do not always differ from the class) have been given in the first part of this work. The remainder will form their second year's course

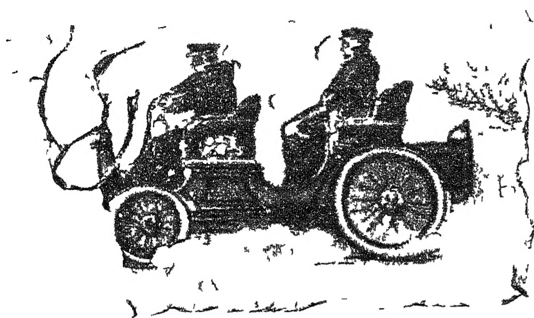
In the same way only the *sarvadhatuka* conjugations popularly known as the first four conjugations, have been embodied in lessons together with the nominal declensions, and to the end of each lesson, a list of nominal bases and verbal roots have been appended with instructions to decline and conjugate them respectively

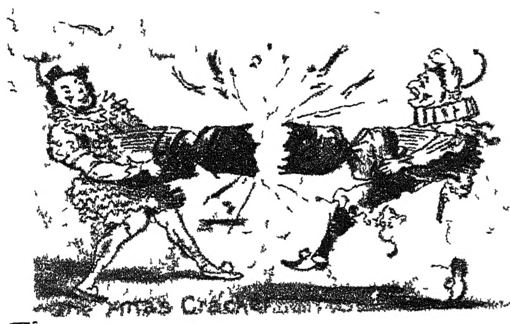
Sentences illustrating the use of the case and conjugational forms that have been given in their lessons have also been added The number of these sentences has been necessarily kept low as this Part will form the course of study for one year only.

The rules of *Sandhi* have been given in footnotes (but not in small type) illustrating the practical application of *Sandhi* occurring in sentences at the end of each lesson. It is hoped that their study separately and incidentally as they may occur at intervals and not *en masse* will render it a less irksome task to master and remember them

Altogether my own impression is that this attempt to prepare a kind of *Principia Sanskrit* in the vernacular of these Provinces will be attended with good results






Cracker

संस्कृत

ऋजुव्याकरणम्

भूमिका

हिन्दीव्याकरणसे वर्णविचार और सन्धिके नियमादि कुछ ज्ञान लेनेके पीछे संस्कृत व्याकरणका आरम्भ पाठशालाओंकी ऊपरी कक्षाओंमें होता है। इस कारण इस संस्कृतके ऋजुव्याकरण नाम पुस्तक में उन अंशों का मुख्य रूपसे विचार नही किया गया जिनको विद्यार्थी हिन्दीव्याकरण में पढ़ चुके हैं॥

संस्कृतव्याकरण में पहिलेही सन्धि पढ़ाई जाती है इससे बालकोंके शिर पर अखरता बोझ सा पड़ जाता है। वे उसे रुचि से नही सीख सकते और वैसा लाभ भी नहीं उठाते हैं। इसी बातके ध्यान से इस ग्रन्थ के आरम्भ में सन्धि के नियम एकत्र नही लिखे गये, किन्तु अवसर अनुसार स्थान २ पर डाले गये हैं। प्रसङ्ग से उन नियमों के अभ्यास करने में विद्यार्थियों को एक साथ अधिक श्रम न होगा, वरन् नियम सुखसे स्मरण रहेंगे॥

कुछ नायक संज्ञा और क्रिया शब्दों के रूप दिखा कर वाक्य रचनाके उदाहरण दिये गये हैं जिससे आगे चलके छोटी २ संस्कृत

पाठर पुस्तकें समझ में आने लगे। शब्दोंके रूप बनानेके नियमोंका जानना बालकोंको कठिन है सो उनके लिये रूपोंको घोषके कण्ठ कर लेना बस है। हां जब ऊपरकी कक्षामें वे जायेंगे तब नियमोंको भी जान लेंगे ॥

इस प्रथम भागमें संज्ञा और सर्व्वनाम शब्दोंके केवल प्रथमा, द्वितीया और सम्बोधनके रूप दिये गये हैं। और प्रत्येक गणके धातु रूप चुन २ कर वर्त्तमानादि चार लकारोमें दर्साये गये हैं ॥

बीच २ में बहुधा प्रचलित अव्यय शब्द भी लिखे गये हैं ॥

व्याकरणके और २ अंश इस पुस्तकके अन्यभागोंमें रक्खे जांयगे ॥

सङ्केतोंका विवरण

ए० = एकवचन
द्वि० = द्विवचन
ब० = बहुवचन

संज्ञाशब्दोंके रूपोंमें

प्र० = प्रथमा
स = सम्बोधन
द्विती० = द्वितीया
पुं० वा पुँ० = पुंलिङ्ग
स्त्री० = स्त्रीलिङ्ग
नपुं० = नपुंसकलिङ्ग

व० = वचन
इ० = इत्यादि
(स०) = सन्धि

धातुओंके रूपोंमें

प्र० = प्रथम पुरुष
म० = मध्यम पुरुष
उ० = उत्तम पुरुष
परस्मै० = परस्मैपद वा परस्मैपदी
आत्मने० = आत्मनेपद वा आत्मनेपदी
उभय० = उभयपद वा उभयपदी
वर्त्त० = वर्त्तमानकाल
(परस्मै० से वर्त्त० तक) } यथास्थल
अन० भूत = अनद्यतनभूत

सूचना

१—यद्यपि आदेशके स्थलोंमें उच्चारणकी सुगमतानिमित्त सस्वर व्यञ्जन लिखित हैं तथापि वे स्वररहित ही स्वररहित व्यञ्जनोंके स्थानमें अथवा स्वरोंके स्थानमें आदेश होते हैं।

२—सन्धिके नियमोंके उदाहरणोंको शिक्षक गद्यपद्यसंग्रहसे सङ्कलित करके विद्यार्थियोंको अभ्यासके लिये सिखलावें॥

संस्कृत

ऋजुव्याकरणम्

प्रथम भाग

ग्रन्थका उपक्रम

संस्कृत व्याकरणमें वर्णमाला और वर्णविभाग का क्रम प्रायः वैसाही है जैसा कि हिन्दीमें सिखाया जाता है। यथा स्वर, व्यञ्जन, ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत, वर्गादिकोंका भेद और वर्णों के उच्चारणस्थान इत्यादि॥

संस्कृतमें लिङ्ग तीन हैं। हिन्दीमे दो ही माने जाते हैं परन्तु पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्गसे अधिक संस्कृत मे नपुंसकलिङ्ग भी है॥

अङ्गरेजीमें बहुत करके पुरुषबोधक प्राणिवाचक शब्द पुंलिङ्ग, स्त्रीबोधक प्राणिवाचक शब्द स्त्रीलिङ्ग और अप्राणिवाचक शब्द नपुंसकलिङ्ग समझे जाते हैं। पर संस्कृतमें यह लिङ्गकी पहिचानका ढङ्ग नहीं है। इसमें तो शब्दोंके लिङ्ग, शुद्धव्यवहार और प्रत्ययों से जाने जाते हैं जो व्याकरण और कोशोमें बतलाये गये हैं॥

संस्कृतमें वचन तीन हैं। हिन्दी और अङ्गरेजी में केवल

एकवचन और बहुवचन होते हैं परन्तु संस्कृतमें उनसे अधिक द्विवचन भी होता है जो दो व्यक्तियों का बोध कराता है ॥

संस्कृतमें सञ्ज्ञाशब्दके उत्तर प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, और सप्तमी ये सात विभक्तियाँ लगती हैं जिनके चिन्ह विसर्ग, औ इत्यादि हैं। उनमेंसे कौनसी विभक्ति किस अर्थ में आती है इसका निरूपण स्थल २ पर किया जायेगा ॥

जिस संज्ञा शब्दके अन्तमें स्वर रहता है उसे स्वरान्त और जिसके अन्तमें व्यञ्जन रहता है उसे व्यञ्जनान्त कहते हैं ॥

अकारान्तादि क्रमसे विशेष सहज प्रचलित संज्ञा शब्दोंके और बीच २ मे सर्वनाम शब्दोंके रूप (अ) दिखाये जायेंगे ॥

जैसे अकारान्तादि विशेष्य शब्दोंके रूप होते हैं वैसे ही अकारान्तादि विशेषण शब्दोंके भी होते हैं। विशेष्य और विशेषण शब्द समान ही लिङ्ग, वचन, और विभक्तिके होते हैं ॥

(अ) इस ग्रन्थमे जो सञ्ज्ञा शब्द दिखाये गये है उनमे जिस स्वरान्त अथवा व्यञ्जनान्त शब्दको न पाओ तो समझो कि वैसा स्वरान्त वा व्यञ्जनान्त शब्द विशेष सहज प्रचलित नही है ॥

प्रथम पाठ

संज्ञा

अकारान्त पुँलिङ्ग बालक शब्द

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	बालकः	बालकौ	बालकाः
सम्बोधनम् (अ)	हे बालक	बालकौ	बालकाः
द्वितीया	बालकम्	बालकौ	बालकान्

प्रायः सब अकारान्त पुँलिङ्ग शब्दोंके रूप बालक शब्दके समान होते हैं ॥

अकारान्त नपुंसकलिङ्ग पुस्तक शब्द

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	पुस्तकम्	पुस्तके	पुस्तकानि
सं०	हे पुस्तक	पुस्तके	पुस्तकानि
द्विती०	पुस्तकम् (आ)	पुस्तके	पुस्तकानि

प्रायः सब अकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्दोंके रूप पुस्तक शब्द के समान होते हैं ॥

(अ) सम्बोधन अर्थ मे प्रथमा विभक्ति लगती है। परन्तु उसके ए० व० मे बहुधा रूप भेद होता है।

(आ) नपुसकलिङ्ग शब्दो के रूप प्रथमा विभक्ति मे जैसे होते है वैसेही क्रमसे द्वितीया विभक्ति मे भी होते हैं। यथा पुस्तक शब्द मे देखते हो।

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग विद्या शब्द

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	विद्या	विद्ये	विद्याः
सं०	हे विद्ये	विद्ये	विद्याः
द्विती०	विद्याम्	विद्ये	विद्याः (अ)

प्रायः आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दोंके रूप विद्या शब्द के समान होते हैं ॥ आकारान्त स्त्रीलिङ्ग अम्बा (माता) शब्दके सं० के ए० व० में हे अम्ब ऐसा रूपभेद होता है ॥

तीनों लिङ्गोंमें समान सर्वनाम शब्द

युष्मद् (तू)

	ए०	द्वि	ब०
प्र०	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्विती०	त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः

तीनों लिङ्गोंमें समान सर्वनामशब्द

अस्मद् (मैं)

	ए०	द्वि	ब०
प्र०	अहम्	आवाम्	वयम्
द्विती०	माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः

युष्मद् इत्यादि सर्वनाम शब्दोंका प्रयोग सम्बोधन विभक्ति में नहीं पाया जाता है ॥

(अ) स्त्रीलिङ्ग शब्दोंकी द्वितीयाके बहु० व० के अन्तमे नकार कभी नहीं होता है। यथा विद्याः इत्यादिक रूपोंमे ॥

द्वितीय पाठ

क्रिया

जैसे बहुतसे द्रव्यादिवाचक सज्ञाशब्द हैं वैसे बहुतसे क्रियावाचक शब्द भी हैं। उनको संस्कृत में धातु कहते हैं ॥

धातुके उत्तर, कालादि अर्थ बोध कराने के लिये क्रियाकी ति, ते, इत्यादि विभक्तियां आती हैं। वे दो प्रकारकी होतो हैं। एक परस्मैपद दूसरी आत्मनेपद ॥

कुछ धातु ऐसे हैं जिनके उत्तर, केवल परस्मैपद विभक्तियां आती हैं इससे वे परस्मैपदी कहलाते हैं। जैसे पठ् इत्यादि। कुछ धातु ऐसे हैं जिनके उत्तर, केवल आत्मनेपद विभक्तियां आती हैं इससे वे आत्मनेपदी कहे जाते हैं। जैसे भाष् इत्यादि। और कुछ धातु ऐसे भी हैं जिनके उत्तर, उक्त दोनों प्रकारकी विभक्तियां आती हैं इस से वे उभयपदी कहाते हैं। जैसे वप् इत्यादि धातु ॥

हिन्दीमें तो लिङ्ग के कारण क्रियाके रूपमें विकार होता है परन्तु संस्कृतमें नही होता है ॥

क्रियाकी विभक्तियों के समुदाय दश हैं जो भिन्न २ अर्थ बोध करानेके लिये लगाये जाते हैं। उनमेंके प्रत्येक समुदायका नाम सस्कृतव्याकरणमें "लकार" कहा जाता है ॥

धातुपाठमें दो सहस्रके लगभग धातु हैं और वे दश विभागोंमें विभक्त हैं। कारण इस विभाग के करने का यह है कि

वर्त्तमानकाल, आज्ञा, विधि और अनद्यतनभूत (अ) इन चार लकारोंमें धातुओं के रूप दश भिन्न २ रीतिसे बनते हैं। उक्त दश विभागोंका नाम गण है।

इस ग्रन्थके प्रथम भागमें उक्त वर्त्तमानादि चार लकारोंमें दशों गणोंके चुन २ के ऐसे धातुओंके सिद्ध रूप रक्खे गये हैं जिनके अनुरूप बहुतेरे सहज प्रचलित धातुओं के रूप होते हैं॥

गणके नायकधातुके उत्तर, आदि शब्दको लगाके गणका नाम व्यवहार किया जाता है। जैसे भू+आदि=भ्वादि यह एक गणका नाम है॥

दशो गणके नाम यथा भ्वादि, तुदादि, दिवादि, चुरादि, स्वादि तनादि, क्र्यादि, रुधादि, अदादि, और ह्वादि॥

दशो गणोंके धातुओंके अभी वे रूप लिखे जाते हैं जिनका कर्त्ता प्रथमा और कर्म द्वितीया विभक्ति पाता है॥

(अ) अनद्यतनभूत उस काल को कहते है जिस की क्रिया बोलने से आठ प्रहर पहिले हो चुकी हो अथवा जो आसन्नभूत, वा पूर्णभूतका अर्थ देती हो॥

भ्वादिगणका उभयपदी धातु
वप् (बोना)

परस्मैपद में

वर्त्तमान

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	वपति	वपतः	वपन्ति
म०	वपसि	वपथः	वपथ
उ०	वपामि	वपावः	वपामः

आज्ञा

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	वपतु	वपताम्	वपन्तु
म०	वप	वपतम्	वपत
उ०	वपानि	वपाव	वपाम

विधि

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	वपेत्	वपेताम्	वपेयुः
म०	वपेः	वपेतम्	वपेत
उ०	वपेयम्	वपेव	वपेम

अनद्यतनभूत

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	अवपत्	अवपताम्	अवपन्
म०	अवपः	अवपतम्	अवपत
उ०	अवपम्	अवपाव	अवपाम

आत्मनेपद में

वर्त्तमान

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	वपते	वपेते	वपन्ते
म०	वपसे	वपेथे	वपध्वे
उ०	वपे	वपावहे	वपामहे

आज्ञा

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	वपताम्	वपेताम्	वपन्ताम्
म०	वपस्व	वपेथाम्	वपध्वम्
उ०	वपै	वपावहै	वपामहै

विधि

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	वपेत	वपेयाताम्	वपेरन्
म०	वपेथाः	वपेयाथाम्	वपेध्वम्
उ०	वपेय	वपेवहि	वपेमहि

अनद्यतनभूत

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	अवपत	अवपेताम्	अवपन्त
म०	अवपथाः	अवपेथाम्	अवपध्वम्
उ०	अवपे	अवपावहि	अवपामहि

वाक्य रचना

कुछ अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

बुध (पण्डित), नर, शिष्य, पुत्र, शृगाल, कृषक, पवन, हस्त, पाद, व्याघ्र, गज, कुक्कुर, मृग, अश्व, रासभ (गर्दभ), वृक्ष इत्यादि ॥

कुछ अकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

फल, बीज, औषध, सत्य, सुख, दुःख, धन, वन, ज्ञान, शस्त्र, (१) शास्त्र, पत्र, वस्त्र, जल, अनृत (झूठ), मुख, नयन, मित्र, नक्षत्र इत्यादि ॥

कुछ आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

लता, वार्त्ता, धरा (पृथ्वी), माला, बाला, कन्या, भिक्षा, शिक्षा, बुभुक्षा (भूख), पिपासा (प्यास), गङ्गा, यमुना, इत्यादि ॥

(सं०) (१) किसी पदके बीच ऋ, ॠ, र, वा ष, इनमेंका कोई अक्षर हो और उसके अनन्तर दन्त्य नकार आवे तो उस (नकार)-के स्थानमें मूर्द्धन्य णकार आदेश होता है । और यदि एक ही पदके बीच ऋ, ॠ, र, वा ष इनके उत्तर कोई स्वर, कवर्ग, पवर्ग, अथवा य, र, व, ह वा अनुस्वार इनमेंसे एक वा अनेक आवें और उनके अनन्तर दन्त्य नकार आवे तो भी उस (नकार) के स्थानमें मूर्द्धन्य णकार आदेश होता है । जैसे शस्त्राणि इत्यादि रूपोंमें ॥

पदके अन्तके दन्त्य नकारके स्थानमें मूर्धन्य णकार आदेश नही होता है जैसे नरान् इत्यादि रूपोंमें ॥

त, थ, द, ध वा प, भ इनके पूर्वमें इनसे संयुक्त दन्त्य नकारके स्थानमें मूर्धन्य णकार आदेश नही होता है । यथा ग्रन्थ इत्यादिमें ॥

भ्वादिगणके कुछ परस्मैपदी धातु जिनके रूप परस्मैपद में वप् धातु के समान होते हैं।

पठ् (पढ़ना), हस् (हँसना), वद् (बोलना), पत् (गिरना), वस् (बसना), चल् (चलना), फल् (फलना), व्रज् (चलना), दह् (दाह करना), ज्वल् (जलना), त्यज् (छोड़ना), रक्ष् (रखना), नम् (नमस्कार करना) इत्यादि ॥

कुछ आत्मनेपदी धातु जिनके रूप आत्मने०में वप् धातु के समान होते हैं।

लभ् (पाना), सह् (सहना), सेव् (सेवना), वन्द् (प्रणाम-करना), यत् (यत्न करना), कम्प् (कांपना), शिक्ष् (सीखना), बाध् (पीड़न करना वा सताना), भाष् (बोलना) इत्यादि ॥

कुछ उभयपदी धातु जिनके रूप दोनों पदोंमें वप् धातुके समान होते हैं।

पच् (पकना वा पकाना अथवा पचना), याच् (मांगना), खन् (खनना), राज् (विराजमान होना), वह (बहना, वा ढोना) इत्यादि ॥

वाक्य (अ)

(संस्कृत)	(हिन्दी)
बालकः पुस्तकं (२) पठति ॥	दो लड़कियां हँसती हैं ॥
फले पततः ॥	हे मित्र तू सत्य बोल ॥
बुधाः सत्यं वदन्ति (३)॥	मैं दुःख को सहता हूं । तू सह ॥
अम्ब (आ) त्वां वन्दे (इ) ॥	बेटो तुम विद्या सीखो ॥
त्वमौषधं (४) सेवस्व ॥	सूर्य्य चमकता है ॥

(अ) संस्कृतसे हिन्दीमें और हिन्दीसे संस्कृतमें उल्था करने के लिये ॥

(सं०) (२) पदके अन्तमें मकारको अनुस्वार करके भी पढ़ सकते हैं। यथा (पुस्तकम्) इसको पुस्तकं कहके भी पढ़ सकते हैं ॥

(सं०) (३) पदके मध्य में स्पर्श वर्णके पूर्वमें अनुस्वार कभी नही रहने पाता किन्तु जिस वर्ग का अक्षर उस (अनुस्वार) के उत्तर हो उसी वर्गका पञ्चम अक्षर उस (अनुस्वार) के स्थानमें आदेश होता है । जैसे वदन्ति सदा ऐसा ही होगा, वदंति ऐसा नही ॥

(आ) सम्बोधन पदके पहिले "हे" शब्द रक्खा जाता है पर चाहे उसे न भी रक्खें तो उसका अर्थ समझ लिया जाता है ॥

(इ) मध्यम वा उत्तम पुरुष की क्रियाके साथ युष्मद् अथवा अस्मद् शब्दका प्रयोग जब नहीं किया जाता है तब वहां अपने मनसे वह समझ लिया जाता है। जैसे वन्दे इस क्रियाका कर्त्ता अहपद अध्याहार कर लिया जाता है ॥

(सं०) (४) स्वररहित व्यञ्जनके अनन्तर जो अक्षर आता है उस अक्षरसे उस स्वररहित व्यञ्जनको मिला देते हैं। जैसे त्वम् + औषधम्=त्वमौषधम् इत्यादि

उक्त नियममें यदि किसी सन्धि की प्राप्ति हो तो उस सन्धिको पहिले करके तब मिला देते हैं ॥

वाक्य

संस्कृत	हिन्दी
वयं वीजान्यवपामहि (५) ॥	शिर कांपता है ॥
हे कृषका (६) यूयं वर्पेध्वम् ॥	लड़की अन्न रींधती है ॥
शिष्या ज्ञानं लभन्ते ॥	भूख मुझको सताती है ॥

(स) (५) ह्रस्व वा दीर्घ इकार, उकार, अथवा ऋकारके अनन्तर कोई असवर्ण स्वर आवे तो उस ह्रस्व वा दीर्घ इकार, उकार, अथवा ऋकारके स्थानमें क्रमसे यकार, वकार अथवा रेफ आदेश होता है यथा वीजानि + अवपामहि = वीजान्यवपामहि इत्यादि ॥

(सं०) (६) पदके अन्तमें आकारके अनन्तर विसर्ग हो और उसके अनन्तर स्वर, किसी वर्गका तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम अथवा य, र, ल, व, ह इनमें से कोई अक्षर आवे तो उस विसर्गका लोप हो जाता है और लोप हो जाने पीछे फिर कोई सन्धि प्राप्त हो तौ भी वह नहीं होती है। यथा (६) से अङ्कित वाक्यमें कृषकाः + यूयम् = कृषका यूयम् इत्यादि ॥



तृतीय पाठ

संज्ञा

ह्रस्व इकारान्त शब्द

पुं० कवि

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	कविः	कवी	कवयः
सं०	हे कवे	कवी	कवयः
द्विती०	कविम्	कवी	कवीन्

पुं० सखि (सखा)

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	सखा	सखायौ	सखायः
सं०	हे सखे	सखायौ	सखायः
द्विती०	सखायम्	सखायौ	सखीन्

प्रायः ह्रस्व इकारान्त पुंलिङ्ग शब्दोंके रूप कवि शब्द के समान होते हैं।

सखि शब्दके कुछ रूप इकारान्त शब्दोंके रूपोंसे भिन्न होते हैं। सो ऊपर दिखा दिये हैं।

ह्रस्व इकारान्त स्त्रीलिङ्ग स्तुति इत्यादि शब्दोंके भी रूप कवि-शब्दके समान होते हैं। केवल द्वितीयाका बहुब० स्तुतीः इत्यादि ऐसा होता है।

ह्रस्व इकारान्त नपुंसलिङ्ग शब्द

वारि (जल)

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	वारि	वारिणी	वारीणि
सं०	हे वारि, हे वारे	वारिणी	वारीणि
द्विती०	वारि	वारिणी	वारीणि

ह्रस्व इकारान्त नपुं० लिङ्ग शब्दोंके रूप वारि शब्दके समान होते हैं॥

दीर्घ ईकारान्त शब्द

स्त्री० नदी

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	नदी	नद्यौ	नद्यः
सं०	हे नदि	नद्यौ	नद्यः
द्वितो०	नदीम्	नद्यौ	नदीः

स्त्री० श्री

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	श्रीः	श्रियौ	श्रियः
सं०	हे श्रीः	श्रियौ	श्रियः
द्वितो०	श्रियम्	श्रियौ	श्रियः

स्त्री० स्त्री

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रियः
सं०	हे स्त्रि	स्त्रियौ	स्त्रियः
द्वितो०	स्त्रियम्, स्त्रीम्	स्त्रियौ	स्त्रियः, स्त्रीः

दीर्घ ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दोंके रूप नदी शब्द के समान होते हैं।

लक्ष्मी शब्द की प्रथमाके एक व० में लक्ष्मीः ऐसा रूपभेद होता है। शेष रूप नदीके समान होते हैं ॥

श्री इत्यादि शब्दोंके और स्त्री शब्द के रूपमें जो कुछ भेद होता है सो दिखा दिया। पुल्लिङ्ग सुधी इत्यादि शब्दोंके रूप श्री-शब्द के समान होते हैं ॥

चतुर्थ पाठ

क्रिया

उभयपदी नी (ले जाना वा पहुंचाना)

परस्मै०

वर्त्तमान

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	नयति	नयतः	नयन्ति
म०	नयसि	नयथः	नयथ
उ०	नयामि	नयावः	नयामः

आज्ञा

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	नयतु	नयताम्	नयन्तु
म०	नय	नयतम्	नयत
उ०	नयानि	नयाव	नयाम

विधि

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	नयेत्	नयेताम्	नयेयुः
म०	नयेः	नयेतम्	नयेत
उ०	नयेयम्	नयेव	नयेम

अनद्यतनभूत

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	अनयत्	अनयताम्	अनयन्
म०	अनयः	अनयतम्	अनयत
उ०	अनयम्	अनयाव	अनयाम

आत्मने०

वर्त्तमान

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	नयते	नयेते	नयन्ते
म०	नयसे	नयेथे	नयध्वे
उ०	नये	नयावहे	नयामहे

आज्ञा

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	नयताम्	नयेताम्	नयन्ताम्
म०	नयस्व	नयेथाम्	नयध्वम्
उ०	नयै	नयावहै	नयामहै

विधि

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	नयेत	नयेयाताम्	नयेरन्
म०	नयेथाः	नयेयाथाम्	नयेध्वम्
उ०	नयेय	नयेवहि	नयेमहि

अनद्यतनभूत

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	अनयत	अनयेताम्	अनयन्त
म०	अनयथाः	अनयेथाम्	अनयध्वम्
उ०	अनये	अनयावहि	अनयामहि

श्रि (सहारा लेना) सेवा करना

	परस्मै०	आत्मने०
वर्त्तमा०	श्रयति	श्रयते

ह्वे (पुकारना)

	परस्मै०	आत्मने०
वर्त्तमा०	ह्वयति	ह्वयते

नीके उभयपद्के समान रूप होते हैं ॥

परस्मैपदी गै (गान करना) के गायति इ० और आत्मनेपदी त्रै (त्राण करना) के त्रायते इ० रूप नीके समान ले जाओ ॥

वाक्यरचना

संज्ञाशब्द

ह्रस्व इकारान्त

पुं०—अग्नि, कपि (वानर), ऋषि, मुनि, पति, (अ) भूपति इत्यादि ॥

स्त्री०—लिपि (वर्णमाला वा हस्ताक्षर), वृत्ति (जीविका), गति, बुद्धि, रात्रि, वल्लि (लता) इत्यादि ॥

दीर्घ ईकारान्त

स्त्री०—जननी, पुत्री, भगिनी, सखी, कुमारी इत्यादि ॥

धातु

परस्मै० जि (जीतना), ग्लै (खिन्न होना), म्लै (मुरझाना) और ध्यै (ध्यान करना) इत्यादि ॥

आत्मने० स्मि (मुसक्याना) इत्यादि

(अ) इस भागमे जो रूपोंके सादृश्य वा भेद कहे जायगे उन्हे संज्ञाशब्दो की प्रथमा द्वितीया और सम्बोधन इन तीन विभक्तियोमे और धातुओ के वर्त्तमानादि च्यार लकारोंमे समझना चाहिए ॥

वाक्य

संस्कृत	हिन्दी
दासी कुम्भं नदीं (अ) नयति ॥	मा लड़कीको पुकारती है ॥
सखयो (७) गीतं गायन्ति ॥	बेटी तू पोथी लेजा ॥
स्त्री पतिं श्रयते ॥	बहिन मुझको बचा ॥
मुनिरीश्वरं (८) ध्यायति ॥	लता मुर्झाती है ॥
सखायः स्मयन्ते ॥	सखाओ तुम मुसक्याते हो ॥

(अ) संस्कृतमें नी धातुके दो कर्म होते हैं इसी हेतुसे कुम्भ और नदी दोनो शब्दोने द्वितीया विभक्ति पाई है

(सं०) (७) पदके अन्तमें विसर्गके पूर्वमें यदि ह्रस्व अकार हो और उसी विसर्ग के अनन्तर ह्रस्व अकार, किसी वर्गका तृतीय, चतुर्थ वा पंचम अथवा य, र, ल, व, ह इनमेंसे कोई अक्षर हो तो पूर्वका अकार और विसर्ग दोनों मिल के एक ओकारके रूपमें हो जाते हैं और जो अनन्तर ह्रस्व अकार हो तो उसका लोप करके उस लोप का ऽ ऐसा चिन्ह लिख दिया जाता है। यथा सखयः+गायन्ति= सखयो गायन्ति इ०। कृषकः+अवपत्= कृषकोऽवपत् इत्यादि ॥

(सं) (८) पदके अन्तमें यदि विसर्गके पूर्व ह्रस्व वा दीर्घ अकारको छोड़ के शेष स्वर वर्णोंमेंसे कोई आवे और उसी विसर्गके अनन्तर स्वर, किसी वर्गका तृतीय, चतुर्थ वा पंचम, किंवा य, ल, व, ह इनमेंसे कोई अक्षर आवे तो उस विसर्गके स्थानमें रेफ आदेश हो जाता है। यथा मुनिः+ईश्वरं=मुनिरीश्वरं इत्यादि ॥

पञ्चम पाठ

संज्ञा

ह्रस्व उकारान्त शब्द

पुँलिङ्ग शिशु

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	शिशुः	शिशू	शिशवः
सं०	हे शिशो	शिशू	शिशवः
द्विती०	शिशुम्	शिशू	शिशून्

नपुंसकलिङ्ग मधु

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	मधु	मधुनी	मधूनि
सं०	हे मधु, मधो	मधुनी	मधूनि
द्विती०	मधु	मधुनी	मधूनि

ह्रस्व उकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दोंके रूप शिशु शब्दके समान होते हैं।

ह्रस्व उकारान्त स्त्रीलिङ्ग धेनु इत्यादि शब्दोंके भी रूप वैसेही होते हैं परन्तु द्विती० के ब० व० में धेनूः ऐसा रूपभेद होता है ॥

ह्रस्व उकारान्त नपुं०लिङ्ग शब्दोंके रूप मधु शब्दके समान होते है ॥

दीर्घ ऊकारान्त शब्द

स्त्री० वधू (बहू)

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	वधूः	वध्वौ	वध्वः
सं०	हे वधु	वध्वौ	वध्वः
द्विती०	वधूम्	वध्वौ	वधूः

स्त्री० भू (पृथ्वी)

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	भूः	भुवौ	भुवः
सं०	हे भूः	भुवौ	भुवः
द्विती०	भुवम्	भुवौ	भुवः

भू शब्दके रूपोंमें जो भेद होता है सो ऊपर दिखा दिया है ॥ पुँल्लिङ्ग प्रतिभू (ज़ामिन्दार) इत्यादि शब्दोंके रूप भू शब्दके समान होते हैं ॥

क्रिया

परस्मैपदी भू (होना)

वर्त्तमान

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	भवति	भवतः	भवन्ति
म०	भवसि	भवथः	भवथ
उ०	भवामि	भवावः	भवामः

आज्ञा

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	भवतु	भवताम्	भवन्तु
म०	भव	भवताम्	भवत
उ०	भवानि	भवाव	भवाम

विधि

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
म०	भवेः	भवेतम्	भवेत
उ०	भवेयम्	भवेव	भवेम

अनद्यतनभूत

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
म०	अभवः	अभवतम्	अभवत
उ०	अभवम्	अभवाव	अभवाम

आत्मनेपदी प्लु (पौंड़ना)

वर्त्तमान

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	प्लवते	प्लवेते	प्लवन्ते
म०	प्लवसे	प्लवेथे	प्लवध्वे
उ०	प्लवे	प्लवावहे	प्लवामहे

आज्ञा

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	प्लवताम्	प्लवेताम्	प्लवन्ताम्
म०	प्लवस्व	प्लवेथाम्	प्लवध्वम्
उ०	प्लवै	प्लवावहै	प्लवामहै

विधि

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	प्लवेत	प्लवेयाताम्	प्लवेरन्
म०	प्लवेथाः	प्लवेयाथाम्	प्लवेध्वम्
उ०	प्लवेय	प्लवेवहि	प्लवेमहि

अनद्यतनभूत

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	अप्लवत	अप्लवेताम्	अप्लवन्त
म०	अप्लवथाः	अप्लवेथाम्	अप्लवध्वम्
उ०	अप्लवे	अप्लवावहि	अप्लवामहि

वाक्यरचना

संज्ञा शब्द

ह्रस्व उकारान्त

पुं० प्रभु विधु (चन्द्र), बन्धु, साधु, शत्रु इत्यादि ॥
स्त्री० रेणु (धूलि), तनु, रज्जु, (रस्सी) इत्यादि ॥
नपुं० वस्तु, जतु (लाह) इत्यादि ॥

दीर्घ ऊकारान्त

पुं० स्वयम्भू (ब्रह्मा) इत्यादि ॥
स्त्री० तनू (शरीर), खर्जू (खाज), दद्रू (दाद) इत्यादि ॥

धातु

परस्मै०	आत्मने०
द्रु (दौड़ना), स्रु (चूके वहना)	च्यु (पतन होना) ॥

वाक्य

संस्कृत	हिन्दी
विधू (१) राजते ॥	मुझको दाद सताती है ॥
नद्यः सागरं (अ) व्रजन्ति	गायें दौड़ती हैं ॥
साधुरपसधान् लभते ॥	दो लड़के पौंड़ते थे ॥
मण्डूकाः प्लवन्ते ॥	बहू रसरीको ले जाती ॥
शत्रुः प्रभुरभवत् ॥	हे प्रभु तू मुझको बचा ॥

(स०) (१) यदि विसर्गके परे रेफ रहे तो विसर्गका लोप होता है और उस विसर्गके पूर्वका ह्रस्व स्वर दीर्घ हो जाता है। यथा—विधुः + राजते = विधूराजते इत्यादि ॥

(अ) गत्यर्थक धातु संस्कृत में सकर्म्मक भी होते हैं इसी हेतु से सागर शब्द ने द्वितीया विभक्ति पाई है ॥

षष्ठ पाठ

संज्ञा

ह्रस्व

पुं० दातृ (दाता)

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	दाता	दातारौ	दातारः
सं०	हे दातः	दातारौ	दातारः
द्विती०	दातारम्	दातारौ	दातॄन्

पुं० पितृ (पिता)

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	पिता	पितरौ	पितरः
सं०	हे पितः	पितरौ	पितरः
द्विती०	पितरम्	पितरौ	पितॄन्

ह्रस्व ऋकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्दोंके रूप बहुधा दातृ शब्दके समान होते हैं। पितृ शब्दके रूपोंमें जो भेद हैं सो ऊपर दिखा दिए। भ्रातृ (भाई), जामातृ (दामाद) आदि शब्दोंके रूप पितृशब्द के समान होते हैं ॥

ह्रस्व ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग मातृ आदि शब्दोंके रूप पितृशब्द के समान होते हैं परन्तु द्वितीयाके ब० व० में मातृः ऐसा रूपभेद होता है ॥ और स्वसृ (बहिन) शब्दके रूप दातृशब्दके समान होते हैं। पर द्वितीयाके ब० व० में स्वसॄः ऐसा रूपभेद होता है ॥

क्रिया

उभयपदी हृ (हरना) धातुके रूप परस्मै० में हरति इ० वपति इ० के समान, और आत्मने० में हरते इ०, वपते इ० के समान क्रम से होते हैं ॥

परस्मैपदी कृष् (खींचना वा हल चलाना)

		वर्त०	आज्ञा	विधि	अन० भूत
प्र०	पु०	कर्षति	कर्षतु	कर्षेत्	अकर्षत्

आत्मनेपदी वृत् (वर्तमान होना)

		वर्त०	आज्ञा	विधि	अन० भूत
प्र०	पु०	वर्तते	वर्तताम्	वर्तेत	अवर्तत

पृथक् २ धातो लकारोंमें अलग से धातुके समान रूप होते हैं।

ऋकारान्ता

संज्ञा शब्द

पुं०-कर्तृ, भर्तृ (स्वामी) इ० ॥

स्त्री० दुहितृ (बेटी), ननान्दृ (ननद), यातृ (देवरानी वा जिठानी) ॥

धातु

परस्मै०—स्मृ (स्मरण करना), धृ (धारना), तॄ (पार करना वा तैरना), वृष् (बरसना), घृष् (घिसना), मृद् (मिड़ना) इ० ॥

आत्मने०—वृध् (बढ़ना) इत्यादि ॥

वाक्य

संस्कृत	हिन्दी
दातारो वर्धन्ताम् ॥	मनुष्य ईश्वर को स्मरण करें ॥
भ्रातरावावां (१०) पुनीतः (अ) ॥	हे मा बहिनें दुःख को सोचती हैं।
दुहितरो मातरं स्मरन्ति ॥	किसान खेत जोतता है ॥
स्वसा भ्रातॄन् वदति । हे भ्रातरः क्षेत्रं कर्षत ॥	दो सांप रेंगते हैं॥
मेघा वारि वर्षन्ति ॥	राम सागरके पार उतरे थे ॥
रावणस्सीतां(११)हरति स्म (आ) ॥	

(स०) (१०) ऐकार वा औकारके परे यदि स्वर वर्ण रहे तो ऐकारके स्थानमें आय् और औकारके स्थानमें आव होता है परन्तु प्रस्तुत सन्धिमें पदान्तमें स्थित ऐ वा औ के स्थानमें आ भी हो सकता किन्तु तब फिर सन्धि नहीं होती है। यथा भ्रातरौ+आवाम्=भ्रातरावावाम् वा भ्रातरा आवाम् इत्यादि ॥

(अ) यद्यपि क्रियाका प्रयोग नहीं किया गया है तथापि अवाव इस क्रियापदका बोध कर लेना चाहिये ॥

(सं०) (११) विसर्गके परे यदि श, ष, वा स, आवे तो विसर्ग ज्योंका त्यों रहता है। अथवा उस (विसर्ग) के स्थानमें क्रमसे श, ष वा स, हो जाता है ॥ यथा रावणः+सीता=रावणः सीतां वा रावणस्सीताम् इ० ॥

(आ) वर्त्तमानकालके साथ स्म अव्यय (शब्द) लगानेसे वह अनद्यतन अथवा परोक्षभूत कालका अर्थ देता है ॥

सप्तम पाठ

संज्ञा

ओकारान्त शब्द					औकारान्त शब्द		
पु० वा स्त्री० गो (गाय वा बैल)				स्त्री०	नौ (नाव)		
	ए०	द्वि०	ब०		ए०	द्वि०	ब०
प्र०	गौः	गावौ	गावः	प्र०	नौः	नावौ	नावः
सं०	हे गौः	गावौ	गावः	सं०	हे नौः	नावौ	नावः
द्विती०	गाम्	गावौ	गाः	द्वि०	नावम्	नावौ	नावः

इति स्वरान्त संज्ञाशब्द

क्रिया

परस्मैपदी रुह (झड़ुर उगना)

वर्त्त०	आज्ञा	विधि	अन० भूत
प्र०ए० रोहति	रोहतु	रोहेत्	अरोहत्

आत्मनेपदी रुच् (चमकना वा अच्छा लगना)

वर्त्त०	आज्ञा	विधि	अन० भूत
प्र०पु० रोचते	रोचताम्	रोचेत	अरोचत

पृथक् २ चारो लकारोमें रूप ले जाओ ।

वाक्यरचना

संज्ञाशब्द

स्त्री० द्यो आकाश ॥ पु० ग्लौ (चन्द्र) ॥

धातु

परस्मै०	आत्मने०
शुच् (शोक करना), क्रुश् (रोना वा चिल्लाना) इ० ।	द्युत् (चमकना), मुद् (हर्षित होना), शुभ् (शोभित होना) इ० ॥

वाक्य

संस्कृत	हिन्दी
मात (१२) र्मास्म (अ) शोचः ।	चांद शोभता है ॥
स्वसारौ स्वस्थे वर्त्तेते ॥	दो तारे चमक रहे हैं ॥

(ख०) (१२) रेफके स्थानमें जो विसर्ग (अर्थात् ऋकारान्त सज्ञाके सम्बोधनके एक वचनका किंवा अन्य किसी रकारके स्थानमें आदेश भया विसर्ग अथवा पुनरादि शब्दका विसर्ग) होता है उसकी सन्धि, सन्धिके (७) अङ्कके नियमके अनुसार नहीं होती किन्तु उक्त विसर्गके स्थानमें फिरसे रेफ ही हो जाता है॥ और यदि रेफ परे रहे तो सन्धिके (९) अङ्कके अनुसार सन्धि होती है ॥ यथा मातः (मातर्) + मा = मातर्मा, पुनः (पुनर्) + रमते = पुनारमते इत्यादि ॥

(अ) निषेधज्ञापक अव्यय मा स्म शब्दोंके साथ आनेसे अनद्यतनभूत लकारमें धातुके पूर्व अकार नहीं लगता है इस लिये मा स्म + अशोचः ऐसा रूप नहीं किन्तु मा स्म शोचः ऐसा रूप भया । मा स्म के लगानेसे अनद्यतनभूतका अर्थ नहीं होता किन्तु आज्ञा वा विधि लकारका अर्थ होता है। यथा मातर्मा स्म शोचः—हे माता तू शोक मत कर ॥

वाक्य

संस्कृत	हिन्दी
कृषका बीजान्यवपन्त । अङ्कुरा रोहेयुः (अ) ॥	दो अङ्कुर उगते हैं ॥
सिंहो गामकर्षत् । वत्सा अद्रवन् ॥	हे लड़की शोक मत करो
मोदस्व दुहितर्मोदस्व । भ्रातरो धनानि लभन्ते ॥	हर्ष करो ॥
नक्षत्राणि द्योतन्ते । द्यौः शोभते ॥	दो नावें बहती हैं ॥

अष्टम पाठ

संज्ञा

सर्वनाम शब्द

तद् (वह)				एतद् (यह)			
पुंलिङ्ग				पुंलिङ्ग			
	ए०	द्वि०	ब०		ए०	द्वि०	ब०
प्र०	सः	तौ	ते	प्र०	एषः	एतौ	एते
द्विती०	तम्	तौ	तान्	द्विती०	एतम्	एतौ	एतान्
स्त्रीलिङ्ग				स्त्रीलिङ्ग			
प्र०	सा	ते	ताः	प्र०	एषा	एते	एताः
द्विती०	ताम्	ते	ताः	द्विती०	एताम्	एते	एताः
नपुंसकलिङ्ग				नपुंसकलिङ्ग			
प्र०	तद्	ते	तानि	प्र०	एतद्	एते	एतानि
द्विती०	तद्	ते	तानि	द्विती०	एतद्	एते	एतानि

(अ) सम्भावना और शक्ति अर्थमें भी विधि प्रकारका प्रयोग होता है ॥

क्रिया

परस्मैपदी

दृश् (देखना)

वर्त्तमान्

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
म०	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
उ०	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः

आज्ञा

प्र०	पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु
म०	पश्य	पश्यतम्	पश्यत
उ०	पश्यानि	पश्याव	पश्याम

विधि

प्र०	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयुः
म०	पश्येः	पश्येतम्	पश्येत
उ०	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम

अनद्यतनभूत

प्र०	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
म०	अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत
उ०	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम

गम् (जाना)

वर्त्तमान

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
म०	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
उ०	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः

आज्ञा

प्र०	गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु
म०	गच्छ	गच्छतम्	गच्छत
उ०	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

विधि

प्र०	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
म०	गच्छेः	गच्छेताम्	गच्छेत
उ०	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

अनद्यतनभूत

प्र०	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन
म०	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
उ०	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

		वर्त्तमान	आज्ञा	विधि	अनद्यतनभूत
प्र० ए० पा	(पीना)	पिबति	पिबतु	पिबेत्	अपिबत्
प्र० ए० स्था	(ठहरना)	तिष्ठति	तिष्ठतु	तिष्ठेत्	अतिष्ठत्
प्र० ए० घ्रा	(सूंघना)	जिघ्रति	जिघ्रतु	जिघ्रेत्	अजिघ्रत्
प्र० ए० ध्मा	(फूंकना)	धमति	धमतु	धमेत्	अधमत्
प्र० ए० दन्श्	(डॅसना)	दशति	दशतु	दशेत्	अदशत्
प्र० ए० सद्	(दुखपाना:)	सीदति	सीदतु	सीदेत्	असीदत्

यों क्रम से पृथक् २ चारों लकारोंमें रूप ले जाओ ॥

वाक्यरचना

कुछ सहज प्रचलित अव्यय (अ) शब्द ॥

च (और), वा, न, तु किन्तु, परन्तु (तो), पुनर् (फिर), बहिस् (बाहिर) (१३) अपि (भी) ॥

कुछ परस्मै० धातु जिनमें रूप सीदति इ० की नाईं होते हैं— जीव्-(जीना), क्रीड् (खेलना), मील् (आंखें मूंदनी) इ० ॥

इति भ्वादिगण के धातु

(अ) अव्यय शब्दों के उत्तर विभक्तियां नहीं लगती । तथापि वे पद कहे जाते हैं।

(सं०) (१३) पदान्तमें स्थित रेफ वा सकारके स्थानमें विसर्ग आदेश होता है । यथा पुनर=पुनः । बहिस्=बहिः इत्यादि ॥

वाक्य

संस्कृत	हिन्दी
स पश्यति। एष क्रीड़ति (१४)॥ [illegible]। त्वमपि गृहं गच्छ॥ ते पुष्पाण्यजिघ्रन्। वयं मध्वपिबाम॥ पुत्रा जीवन्तु। विद्यां धनञ्च (१५) लभन्ताम्॥ सर्पो बालकमदशत्। जीवति तु सः॥ स शङ्खं धमति॥	आगको फूंको। मैं भी दूध पीऊं॥ वह बालक माको देखता और हर्ष करता है॥ गाय खेतको गई थी। उसको सांपने डसा॥ देखो लड़के पाठशालाको जाते हैं॥ ये लड़कियां खेलती हैं। वे तो पढ़ती हैं॥ उस फूल को सूंघो। उन पेड़ों को देखो॥

(सं०) (१४) सः वा एषः के परे ह्रस्व अकारको छोड़ के दूसरा कोई अक्षर आवे तो सः वा एषः के विसर्ग का लोप हो जाता है॥ यथा सः + पश्यति = स पश्यति। एषः + क्रीड़ति = एष क्रीड़ति इत्यादि॥

(सं०) (१५) पदके अन्तमें स्थित अनुस्वारके स्थानमें उसी वर्णका पञ्चम अक्षर भी आदेश हो सकता है जिस वर्ग का (स्पर्श) अक्षर उस अनुस्वारके अनन्तर हो। यथा धनं + च = धनञ्च वा धनं च इ०॥

नवम पाठ

संज्ञा

चकारान्त शब्द

स्त्री त्वच् (त्वचा) खाल

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	त्वक्	त्वचौ	त्वचः
स०	हे त्वक्	त्वचौ	त्वचः
द्विती०	त्वचम्	त्वचौ	त्वचः

प्रायः चकारान्त पुं० अथवा स्त्री० शब्दोंके रूप त्वच् शब्दके समान होते हैं ॥

जकारान्त शब्द

पुं० वणिज् (बनिया)

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	वणिक्	वणिजौ	वणिजः
सं०	हे वणिक्	वणिजौ	वणिजः
द्विती०	वणिजम्	वणिजौ	वणिजः

पुं० सम्राज् (चक्रवर्त्ती राजा)

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	सम्राट्	सम्राजौ	सम्राजः
सं०	हे सम्राट्	सम्राजौ	सम्राजः
द्विती०	सम्राजम्	सम्राजौ	सम्राजः

नपुं० असृज् (लोहू)

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	असृक्	असृजी	असृञ्जि
स०	हे असृक्	असृजी	असृञ्जि
द्विती०	असृक्	असृजी	असृञ्जि

क्रिया

तुदादि गण

उभयपदी कृष् (खींचना वा हल जोतना)

परस्मै०

वर्त्तमान

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	कृषति	कृषतः	कृषन्ति
म०	कृषसि	कृषथः	कृषथ
उ०	कृषामि	कृषावः	कृषामः

आज्ञा

प्र०	कृषतु	कृषताम्	कृषन्तु
म०	कृष	कृषतम्	कृषत
उ०	कृषाणि	कृषाव	कृषाम

विधि

प्र०	कृषेत्	कृषेताम्	कृषेयुः
म०	कृषेः	कृषेतम्	कृषेत
उ०	कृषेयम्	कृषेव	कृषेम

अनद्यतनभूत

प्र०	अकृषत्	अकृषताम्	अकृषन्
म०	अकृषः	अकृषतम्	अकृषत
उ०	अकृषम्	अकृषाव	अकृषाम

आत्मने०

वर्त्तमान

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	कृषते	कृषेते	कृषन्ते
म०	कृषसे	कृषेथे	कृषध्वे
उ०	कृषे	कृषावहे	कृषामहे

आज्ञा

प्र०	कृषताम्	कृषेताम्	कृषन्ताम्
म०	कृषस्व	कृषेथाम्	कृषध्वम्
उ०	कृषै	कृषावहै	कृषामहै

विधि

प्र०	कृषेत	कृषेयाथाम्	कृषेरन्
म०	कृषेथाः	कृषेयाथाम्	कृषेध्वम्
उ०	कृषेय	कृषेवहि	कृषेमहि

अनद्यतनभूत

प्र०	अकृषत	अकृषेताम्	अकृषन्त
म०	अकृषथाः	अकृषेथाम्	अकृषध्वम्
उ०	अकृषे	अकृषावहि	अकृषामहि

	परस्मै०	आत्मने०	परस्मै०	आत्मने०
	उभय० तुद् (कोंचना)		मज्ज् (डूबना)	लज्ज् (लजाना)
प्र० ए० वर्त्त०	तुदति	तुदते	मज्जति	लज्जते
प्र० ए० आज्ञा	तुदतु	तुदताम्	मज्जतु	लज्जताम्
प्र० ए० विधि	तुदेत्	तुदेत	मज्जेत्	लज्जेत
प्र० ए० अ०भू०	अतुदत्	अतुदत	अमज्जत्	अलज्जत

	वर्त्तमान	आज्ञा	विधि	अनद्यतनभूत
परस्मै० इष् (इच्छाकरनी) प्र० ए०	इच्छति	इच्छतु	इच्छेत्	ऐच्छत् (अ)
परस्मै० प्रच्छ् (पूछना) प्र० ए०	पृच्छति	पृच्छतु	पृच्छेत्	अपृच्छत्
उभय०मुच् (छोड़ना) प्र० ए०	मुञ्चति	मुञ्चतु	मुञ्चेत्	अमुञ्चत्
	मुञ्चते	मुञ्चताम्	मुञ्चेत	अमुञ्चत
उभ० सिच् (सींचना) प्र० ए०	सिञ्चति	सिञ्चतु	सिञ्चेत्	असिञ्चत्
	सिञ्चते	सिञ्चताम्	सिञ्चेत	असिञ्चत

परस्मै० कृत् (काटना) के कृन्तति इ०, उभय लिप् (लीपना) के लिम्पति, लिम्पते इ० रूप, मुञ्चति मुञ्चते इत्यादिके समान होते हैं ॥

(अ) अनद्यतनभूत लकार मे धातुके आदि मे स्थित इ, ई वा ए के स्थानमें ऐ, और उ ऊ वा ओ के स्थानमे औ आदेश होता है। यथा इष = ऐच्छत इ०। परन्तु मा स्म इन अव्यय शब्दोंके साथ आनेसे यह नियम नही होता है। किन्तु धातुके आदिमे स्थित अक्षर ज्योंका त्यों रहता है। यथा मा स्म इच्छत इ० ॥

वाक्यरचना

संज्ञा शब्द

चकारान्त

पुं० जलमुच् (मेघ) इ० । स्त्री रुच् (कान्ति), शुच् (शोक) इत्यादि ॥

जकारान्त

पुं० ऋत्विज् (याज्ञिक), भिषज् (वैद्य) इ० । स्त्री० रुज् (रोग), स्रज् (माला) इ० वणिज्के समान ॥

पुं० विराज् (विश्वरूप भगवान्), विश्वसृज् (विश्वकर्त्ता), परिव्राज् (संन्यासी) इ० सम्राज्के समान ॥

धातु

परस्मै० सृज् (सृजना), स्पृश् (छूना), रुज् (भग्न करना) इ० ॥

वाक्य

संस्कृत	हिन्दी
परिव्राट् (३६) विश्वसृजति ॥	संन्यासी वनको जाता है ॥
जलमुचा शुच सिञ्चति ॥	इसको मत छू ॥

(सं०) (११) पदान्तमें स्थित क के स्थानमें ग, ट के स्थानमें ड, और त् के स्थानमें द हो जाता है जब स्वर या किसी वर्गका तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम अथवा य, र, ल, व, ह इनमेंसे कोई अक्षर परे रहे । यथा—विश्वसृट् + विश्वं = विश्वसृड्विश्वम् । भिषक् + औषधम् = भिषगौषधमित्यादि ॥

वाक्य

संस्कृत	हिन्दी
वधूर्लज्जते । वाचञ्च न वदति ॥	मैं लजाता हूं ॥
वणिक्छुच शुश्च (१७) ॥	वह फूल उतराता है । पर यह
एषा स्रक् शोभते ॥	फल बूड़ता है ॥
सजूँस्त्वचमनुदति ॥ (१८)	चक्रवर्ती राजाने पृथ्वीको जय
पाषाणो मज्जति काष्ठन्तु प्लवते ॥	कर लिया है ॥
रुङ् मां (१९) रुजति ॥	
भिषङ्नायमन्दिशति ॥	

(सं०) (१७) पदान्तमें स्थित क, ट, त, द, वा न इनमेंसे किसी अक्षरके परे श रहे और उस श के परे स्वर म, य, र, ल, अथवा व इनमेंसे कोई अक्षर हो तो उस श के स्थानमें छ भी होता है । यथा वणिक्+शुचम्= वणिक् छुचम् वा वणिक्शुचम् इ० ॥

(स०) (१८) विसर्गके अनन्तर च व छ हो तो श, ट वा ठ हो तो ष, त वा थ हो तो स उस विसर्गके स्थान में आदेश हो जाता है । यथा सजूः+त्वचम्=सजूँस्त्वचम् इ० ॥

(सं०) (१९) पदान्तमें स्थित क के स्थानमें ग वा ङ, च के स्थानमें ज व ञ, ट के स्थानमें ड वा ण, त के स्थानमें द व न और प के स्थानमें ब वा म आदेश होता है यदि न व म परे हो । यथा रुक्+मां=रुग्मां वा रुङ् माम् । अच्+नास्ति=अज्नास्ति वा अञ्नास्ति । अमज्जत्+नौः=अमज्जद्नौः वा अमज्जन्नौः । और लुप्+न=लुब्न वा लुम्न इत्यादि ॥

दशम पाठ

संज्ञा

तकारान्त शब्द

स्त्री० सरित् (नदी)

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	सरित्	सरितौ	सरितः
सं०	हे सरित्	सरितौ	सरितः
द्विती०	सरितम्	सरितौ	सरितः

पुं० धावत् (दौड़ता हुआ)

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	धावन्	धावन्तौ	धावन्तः
सं०	हे धावन्	धावन्तौ	धावन्तः
द्विती०	धावन्तम्	धावन्तौ	धावतः

सर्वनाम पुं० भवत् (आप)

प्र०	भवान्	भवन्तौ	भवन्तः
सं०	हे भवन्	भवन्तौ	भवन्तः
द्विती०	भवन्तम्	भवन्तौ	भवतः

पुं० महत् (बड़ा)

प्र०	महान्	महान्तौ	महान्तः
सं०	हे महन्	महान्तौ	महान्तः
द्विती०	महान्तम्	महान्तौ	महतः

तकारान्त पुं० कुछ शब्द धावत्के और कुछ भवत्के समान रूप पाते हैं। महत् शब्दके रूपोंके भेद दर्शा दिये। शेष तकारान्त पुंलिङ्ग वा शब्दोंके रूप सरित् शब्दके समान होते हैं ॥

नपुं० जगत्

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	जगत्	जगती	जगन्ति
सं०	हे जगत्	जगती	जगन्ति
द्विती०	जगत्	जगती	जगन्ति

प्र० सं० और द्विती०के ब० व०में नपुं० महत्का रूप महान्ति होता है शेष रूप जगत्के समान होते हैं ॥

क्रिया

उभय० क्षिप् (फेंकना)

		वर्त्तमान	आज्ञा	विधि	अन० भूत
परस्मै०	प्र० ए०	क्षिपति	क्षिपतु	क्षिपेत्	अक्षिपत्
आत्मने०	प्र० ए०	क्षिपते	क्षिपताम्	क्षिपेत	अक्षिपत

वप् धातुके समान रूप होते हैं ॥

आत्मने० मृ (मरना)

म्रियते इत्यादि रूप नी धातुके आत्मने० के नयते इत्यादिके समान होते हैं ॥

परस्मै० कॄ (बिखेरना वा छितराना)

	वर्त्तमान	आज्ञा	विधि	अन०भूत
प्र० ए०	किरति	किरतु	किरेत्	अकिरत् इ० रूप ले जाओ ।

परस्मै० गॄ (निगलना) के रूप कॄ के समान होते हैं और गिरति इ० रूपोंके समान गिलति इ० भी रूप होते हैं ॥

[illegible]

संज्ञाशब्द—तकारान्त

पुं०—भूभृत् (पहाड़ का राजा) इ० सरित्के समान ॥

पुं०—गच्छत् (जाता हुआ), पचत् (रींधता हुआ), हसत् (हँसता हुआ), भवत् (होता हुआ) (अ) इ० धावत् के समान ॥ और श्रीमत्, भगवत् (ऐश्वर्ययुक्त) इ० भवत् (आप) के समान ॥

धातु

उभय० दिश् (देना), क्षिप् (गिराना),

परस्मै० लिख् (लिखना), विश् (प्रवेश करना) इ० ॥

इति तुदादि गणके धातु

अव्यय शब्द

भोः (हे), मिथः (परस्पर), मा (निषेधवाचक), एवं (ऐसा, इस प्रकारसे), एव (ही), कथं (क्यों, किस प्रकारसे), यावत् (जबलों), तावत् (तबलों), यदि तर्हि (तो), हि (हेतु-बोधक), किम् (क्या, क्यों), अवश्यम्, नाम (प्रसिद्धिबोधक) ॥

(अ) यह भवत् शब्द जिसका अर्थ होता हुआ है उस भवत् शब्दसे जिसका अर्थ आप है भिन्न है। और संस्कृतमें भवत् (आप) शब्द प्रथम पुरुष माना जाता है यथा भवान् लिखति इ० प्रयोगोंमें देखो ॥

वाक्य

संस्कृत	हिन्दी
भ्रातर्मा क्षिप लोष्टं ।	आप क्यों नहीं लिखते ॥
तद्धि (२०) गच्छन्तं बालकमर्दत् ॥	तमसा नाम नदी है ॥
यावद्भवाल्लिँखति (२१) पत्रं, तावदहं पुस्तकं पठामि ॥	आपको नमस्कार करता हूं ॥
किं हससि । गुरुस्त्वां पश्येत् ॥	वट नामका पेड़ बड़ा होता है ॥
हिमालयो नाम महान् भूभृद् वर्तते ॥	

(सं०) (२०) पदान्तमें स्थित किसी वर्गके प्रथम वा तृतीय अक्षर के अनन्तर हकार आवे तो दोनों मिलके क्रमसे ग्घ, वा ग्ह ज्झ वा ज्ह, ड्ढ वा ड्ह, द्ध वा द्ह, और ब्भ वा ब्ह हो जाते हैं। यथा तत्+हि=तद्धि वा तद्हि इ०

(सं) (२१) नकारके अनन्तर ज, झ वा श, इनमेंसे कोई हो तो ञ, ड वा ढ, इनमेंसे कोई हो तो ण; और ल हो तो लँ, उस नकारके स्थानमें आदेश होता है। यथा राजन्+जय=राजञ्जय, अधावन्+शशाः=अधावञ्शशाः वा अधावञ्छशाः. भवान्+ढुढगति=भवाण्ढुण्ढति । भवान्+लिखति=भवाल्लिँखति इ० ॥

वाक्य

संस्कृत	हिन्दी
भो (२२) बालका मिथो मिलध्वम्	किस लिये फूलोंको छितराते हो ॥

एकादश पाठ

संज्ञा

दकारान्त शब्द

पुं० सुहृद्				नपुं० हृद् (हृदय)		
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	सुहृत्	सुहृदौ	सुहृदः	प्र० हृत्	हृदी	हृन्दि
सं०	हे सुहृत्	सुहृदौ	सुहृदः	सं० हे हृत्	हृदी	हृन्दि
द्विती०	सुहृदम्	सुहृदौ	सुहृदः	द्विती० हृत्	हृदी	हृन्दि

दकारान्त पुं० वा स्त्री० शब्दोंके रूप सुहृद् शब्दके समान होते हैं ॥

धकारान्त शब्द

स्त्री० क्षुध् (भूख)

प्र०	क्षुत्	क्षुधौ	क्षुधः
सं०	हे क्षुत्	क्षुधौ	क्षुधः
द्विती०	क्षुधम्	क्षुधौ	क्षुधः

धकारान्त पुं० वा स्त्री० शब्दोंके रूप क्षुध् शब्दके समान होते हैं ॥

(सं०) (२२) भोः शब्दके विसर्गके स्थानमें आठवीं सन्धिके नियमसे रेफ नहीं होता किन्तु उस (विसर्ग) का लोप हो जाता है यदि स्वर, किसी वर्गका तृतीय, चतुर्थ वा पञ्चम अथवा य, ल, व, ह इनमेंसे कोई अक्षर उस विसर्गके उत्तर हो। यथा भोः+बालकाः= भो बालकाः इ० ॥

क्रिया

दिवादि गण

परस्मै० धातु—नृत (नाचना)

वर्त्तमान

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	नृत्यति	नृत्यतः	नृत्यन्ति
म०	नृत्यसि	नृत्यथः	नृत्यथ
उ०	नृत्यामि	नृत्यावः	नृत्यामः

आज्ञा

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	नृत्यतु	नृत्यताम्	नृत्यन्तु
म०	नृत्य	नृत्यतम्	नृत्यत
उ०	नृत्यानि	नृत्याव	नृत्याम,

विधि

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	नृत्येत्	नृत्येताम्	नृत्येयुः
म०	नृत्येः	नृत्येतम्	नृत्येत
उ०	नृत्येयम्	नृत्येव	नृत्येम

अनद्यतनभूत

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	अनृत्यत्	अनृत्यताम्	अनृत्यन्
म०	अनृत्यः	अनृत्यतम्	अनृत्यत
उ०	अनृत्यम्	अनृत्याव	अनृत्याम

आत्मने० धातु मन् (समझना)

वर्त्तमान

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	मन्यते	मन्येते	मन्यन्ते
म०	मन्यसे	मन्येथे	मन्यध्वे
उ०	मन्ये	मन्यावहे	मन्यामहे

आज्ञा

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	मन्यताम्	मन्येताम्	मन्यन्ताम्
म०	मन्यस्व	मन्येथाम्	मन्यध्वम्
उ०	मन्यै	मन्यावहै	मन्यामहै

विधि

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	मन्येत	मन्येयाताम्	मन्येरन्
म०	मन्येथाः	मन्येयाथाम्	मन्येध्वम्
उ०	मन्येय	मन्येवहि	मन्येमहि

अनद्यतनभूत

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	अमन्यत	अमन्येताम्	अमन्यन्त
म०	अमन्यथाः	अमन्येथाम्	अमन्यध्वं
उ०	अमन्ये	अमन्यावहि	अमन्यामहि

	वर्त्त०	आज्ञा	विधि	अन०भूत
परस्मै० श्रम् (श्रम करना) प्र० ए०	श्राम्यति	श्राम्यतु	श्राम्येत्	अश्राम्यत्
परस्मै० व्यध् (वेधना) प्र० ए०	विध्यति	विध्यतु	विध्येत्	अविध्यत्
परस्मै० जॄ (जीर्ण होना) प्र० ए०	जीर्यति	जीर्यतु	जीर्येत्	अजीर्यत्

	वर्त्तमान	आज्ञ	विधि	अन०भूत
परस्म०दिव् (जूआ खेलना) प्र०ए०	दीव्यति	दीव्यतु	दीव्येत्	अदीव्यत्
परस्मै० क्रम् (चलना) प्र० ए०	क्राम्यति	क्राम्यतु	क्राम्येत्	अक्राम्यत्
परस्मै० ष्ठिव (थूकना) प्र० ए०	ष्ठीव्यति	ष्ठीव्यतु	ष्ठीव्येत्	अष्ठीव्यत्

क्रम् और ष्ठिव् ये दोनों धातु भ्वादिगणमें भी पठित हैं और उनके रूप क्रमसे क्रामति इ० और ष्ठीवति इत्यादि होते हैं ॥

आत्मने० जन् (जन्म पाना) के जायते इत्यादि भ्वादिके त्रै धातुके त्रायते इत्यादिके समान रूप होते हैं ॥

डी (उड़ना) के डीयते इत्यादि भ्वादिके नी धातुके आत्मने० के नयते इ० रूपोंके समान होते हैं ॥

परस्मै० नश् (नष्ट होना) के नश्यति इ० रूप भ्वादि के दृश् धातु के पश्यति इ० के समान होते हैं ॥

वाक्यरचना

संज्ञा शब्द

दकारान्त

स्त्री०—प्रतिपद् (पड़िवा), मृद् (मिट्टी), दृषद् (चटान), शरद् (एक ऋतु) इ० ॥

धकारान्त

स्त्री०— क्रुध् (क्रोध), युध् (युद्ध), समिध् (यज्ञकाष्ठ) इ० ॥

धातु

परस्मै० क्रुध् (क्रोध करना), कुप् (कोप करना), क्षुध् (भूखा होना), सिध् (सिद्ध होना वा पूरा होना), रध (रींधना) इ० नृत् धातुके समान ॥

शम् (शान्त होना), मद् (मत्त होना) इ० श्रम्के समान ॥

आत्मने० युध् (युद्ध करना), बुध् (समझना), खिद् (खेद करना), विद् (होना) इ० मन् धातुके समान ॥

इति दिवादि गणके धातु

अव्यय शब्द

अत्र (यहां), तत्र (वहां), कुत्र (कहां), यत्र (जहां), सर्वत्र (सब ठौर) ॥

वाक्य

संस्कृत	हिन्दी
क्षुध्यत्येष बालकः । माता किं न रध्यत्यन्नम् ॥	क्यों खेद करते हो ॥
	शत्रु तो मरा ॥
बालका अक्षान्मा दीव्यत ॥	हम तुमको सुहृद् समझते हैं ॥
नश्यन्त्येतानि धनानि ॥	वहां मयूर नाचता है ॥
कि पुत्रोऽजायत कन्या वा ॥	जहां लड़के जूआ खेलते हैं
बहवो विघ्ना विद्यन्ते ॥	वहां मत जाओ ।

संस्कृत	
कथमेतांस्तरेयम् (२३) ॥	
अनृत्यन्नत्र (२४) मयूराः ॥	

द्वादश पाठ

सञ्ज्ञा

नकारान्त शब्द

पुं० राजन्

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	राजा	राजानौ	राजानः
सं०	हे राजन्	राजानौ	राजानः
द्विती०	राजानम्	राजानौ	राज्ञः

युवन् (जवान)

प्र०	युवा	युवानौ	युवानः
सं०	हे युवन्	युवानौ	युवानः
द्विती०	युवानम्	युवानौ	यूनः

पुं० आत्मन्

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः
सं०	हे आत्मन्	आत्मानौ	आत्मानः
द्वि०	आत्मानम्	आत्मानौ	आत्मनः

श्वन् (कुत्ता)

प्र०	श्वा	श्वानौ	श्वानः
सं	हे श्वन्	श्वानौ	श्वानः
द्विती०	श्वानम्	श्वानौ	शुनः

(सं०) (२३) पदान्तमें स्थित न के अनन्तर च, छ, ट, त वा थ आवे तो उस न के स्थानमें अनुस्वार होता है, और च इत्यादि के स्थानमें क्रमसे श्च, श्छ, ष्ट, ष्ठ, स्त वा स्थ आदेश होते हैं। यथा एतान्+तरेयम्=एतांस्तरेयम् इ० ॥

(सं०) (२४) पदान्तमें ह्रस्व स्वरके अनन्तर नकार हो और उस नकारके अनन्तर कोई स्वर हो तो उस नकारको दो कर देते हैं यथा अनृत्यन्+अत्र =अनृत्यन्नत्र इ० ॥

जिन नकारान्त पुं० वा स्त्री शब्दोंके अन्तमें अन् हो प्रायः उनके रूप राजन् शब्दके समान होते हैं। युवन् और श्वन् शब्दोंके रूपमें जो भेद होता है सो दिखा दिया ॥

जिन नकारान्त पुं० वा स्त्री० शब्दोंके अन्तमें मन् वा वन् हो और उस मन् अथवा वन्के पूर्वमें कोई व्यञ्जन वर्ण मन् अथवा वन्के मकार वा वकारसे संयुक्त हो ऐसे शब्दोंके रूप आत्मन् शब्दके समान होते हैं ॥

स्वामिन्

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	स्वामी	स्वामिनौ	स्वामिनः
स०	हे स्वामिन्	स्वामिनौ	स्वामिनः
द्वि०	स्वामिनम्	स्वामिनौ	स्वामिनः

जिन नकारान्त शब्दोंके अन्तमें इन् हो उनके रूप स्वामिन् शब्दके समान होते हैं ॥

पथिन् (पथ)

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	पन्थाः	पन्थानौ	पन्थानः
स०	हे पन्थाः	पन्थानौ	पन्थानः
द्वि०	पन्थानम्	पन्थानौ	पथः

पथिन् शब्दके रूपोंमें जो भेद होता है सो दिखा दिया ॥

नपुंसकलिङ्ग

जन्मन्

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	जन्म	जन्मनी	जन्मानि
सं०	हे जन्म, जन्मन्	जन्मनी	जन्मानि
द्वितो०	जन्म	जन्मनी	जन्मानि

नामन्

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	नाम	नामनी, नाम्नी	नामानि
सं०	नाम, नामन्	नामनी, नाम्नी	नामानि
द्विती०	नाम	नामनी, नाम्नी	नामानि

अहन् (दिन)

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	अहः	अहनी, अह्नी	अहानि
सं०	हे अहः	अहनी, अह्नी	अहानि
द्विती०	अहः	अहनी, अह्नी	अहानि

जिन नकारान्त नपुं० शब्दोंके अन्तमें अन् हो उनके रूप नामन् शब्दके समान होते हैं ॥

अहन् और जन्मन् शब्दोंके रूपोंमें जो भेद होता है उसको दिखा दिया ॥

आत्मन् शब्द जिस प्रकारके नकारान्त पुं० शब्दोंका नायक है जन्मन् शब्द उसी प्रकारके नकारान्त नपुं० शब्दोंका नायक है जिनके अन्तमें उक्तविध मन् अथवा वन् हो ॥

नकारान्त नपुं० जिनके अन्तमें इन् हो, यथा स्थायिन् इत्यादि, उनके रूप वारि शब्दके समान होते हैं। केवल सं० के ए० व० में स्थायि वा हे स्थायिन् इतना भेद होता है ॥

चुरादि गण

उभयपदी रच् (रचना करनी)

परस्मै०				आत्मने०			
वर्त्तमान				वर्त्तमान			
	ए०	द्वि०	ब०		ए०	द्वि०	ब०
प्र०	रचयति	रचयतः	रचयन्ति	प्र०	रचयते	रचयेते	रचयन्ते
म०	रचयसि	रचयथः	रचयथ	म०	रचयसे	रचयेथे	रचयध्वे
उ०	रचयामि	रचयावः	रचयामः	उ०	रचये	रचयावहे	रचयामहे
आज्ञा				आज्ञा			
प्र०	रचयतु	रचयताम्	रचयन्तु	प्र०	रचयताम्	रचयेताम्	रचयन्ताम्
म०	रचय	रचयतम्	रचयत	प्र०	रचयस्व	रचयेथाम्	रचयध्वम्
उ०	रचयानि	रचयाव	रचयाम	उ०	रचयै	रचयावहै	रचयामहै
विधि				विधि			
प्र०	रचयेत्	रचयेताम्	रचयेयुः	प्र०	रचयेत	रचयेयाताम्	रचयेरन्
म०	रचयेः	रचयेतम्	रचयेत	म०	रचयेथाः	रचयेयाथाम्	रचयेध्वम्
उ०	रचयेयम्	रचयेव	रचयेम	उ०	रचयेय	रचयेवहि	रचयेमहि
अनद्यतनभूत				अनद्यतनभूत			
प्र०	अरचयत्	अरचयताम्	अरचयन्	प्र०	अरचयत	अरचयेताम्	अरचयन्त
म०	अरचयः	अरचयतम्	अरचयत	म०	अरचयथाः	अरचयेथा	अरचयध्वम्
उ०	अरचयम्	अरचयाव	अरचयाम	उ०	अरचये	अरचयावहि	अरचयामहि

उभयपदी

लल् (लाड़ करना)	तिज् (तीक्ष्ण करना)
परस्मै० आत्मने०	परस्मै० आत्मने०
प्र० ए० वर्त्त० लालयति लालयते	प्र० ए० वर्त्त० तेजयति तेजयते

	परस्मै०	आत्मने०		परस्मै०	आत्मने०
प्र०ए० आज्ञा	लालयतु	लालयताम्	प्र०ए०आज्ञा	तेजयतु	तेजयताम्
प्र०ए०विधि	लालयेत्	लालयेत	प्र०ए०विधि	तेजयेत्	तेजयेत
प्र०ए०अन०भूत	अलालयत्	अलालयत	प्र०ए०अन०भूत	अतेजयत्	अतेजयत

यों रचयति और रचयते इत्यादि के समान रूप ले जाओ ॥

वीज् (पङ्खा झालना) के वीजयति और वीजयते इ० । चुर् (चोरी करनी) के चोरयति और चोरयते इ० । पूज् (पूजा करनी) के पूजयति और पूजयते इ० । वृज् (वर्जना) के वर्जयति और वर्जयते इ० । स्पृह (चाहना) के स्पृहयति और स्पृहयते. इ० । वृ (आड़ करनी) के वारयति और वारयते इ० क्रम से रूप ले जाओ ॥

परस्मै ज्ञा (जतलाना) के ज्ञापयति इ० रूप ले जाओ ॥

वाक्यरचना

संज्ञा शब्द

नकारान्त

पुं० महिमन्, मूर्धन् (शिर वा मस्तक) इ० । स्त्री० सीमन् इ० राजन् के समान ॥

पुं० अश्मन् (पत्थर) अध्वन् (मार्ग) इ० आत्मन् के समान ॥

नपुं० धामन् (घर वा तेज) इ० नामन् के समान ॥

नपुं॰ शर्मन (सुख) (अ), वर्मन् (कवच) (आ) कर्मन्, वर्त्मन् (बाट), पर्वन् (पोर वा पौर्णमासी तिथि अथवा त्योहार), चर्मन् (चाम वा ढाल) इ॰ जन्मन्के समान ॥

धातु

उभय॰ अर्च् (पूजा करनी), अर्ज् (उपार्जन करना) इ॰ । परस्मै॰ कथ् (कहना), गण् (गिनना) भक्ष् (खाना), लक्ष् (लखना), दण्ड् (दण्ड देना) इ॰ । आत्मने॰ अर्थ् (मांगना), तर्ज (डांटना), भर्त्स (धिक्कारना), वञ्च (ठगना) इ॰ रच् के समान

परस्मै॰	तड्	(ताड़ना करना)	इ॰	लल्के समान ॥
परस्मै॰	पीड्	(पीड़ा देनी)	इ॰	वीज्के समान ॥
उभय॰	तुल्	(तौलना)	इ॰	चुरके समान ॥
परस्मै॰	चूर्ण	(चूर्ण करना)	इ॰	पूज्के समान ॥

इति चुरादि गणके धातु

वाक्य

संस्कृत	हिन्दी
विष्णुशर्मा नाम ब्राह्मणो राजानमर्थयते ॥	धन कमाओ और खाओ ॥ कवि ग्रन्थ रचता है ॥

(अ) ब्राह्मणों के नाम का भी वाचक पु॰ है ॥
(आ) क्षत्रियोंके नाम का भी वाचक पु॰ है ॥

संस्कृत	हिन्दी
राजा चौरं भर्त्सयते दण्डयति च ।	लड़के फलोंको गिनते और खाते हैं ॥
शठः साधुमसाधुञ्च वञ्चयते ॥	उसने पत्थर फेंका और कुत्तेको मारा ॥
मातरोऽलालयञ्छिशून् ॥	
भोः शिष्य तत्त्व चिन्तय । सच्चरितं (२५) चर ॥	
राजागणयज्जनान् ॥	
द्विजो न भक्षयेल्लशुनम् ॥	

त्रयोदश पाठ

संज्ञा

पकारान्त

स्त्री० अप् (पानी) शब्दके रूप केवल बहुवचन में होते हैं ॥

प्र० ब० आपः । सं० ब० हे आपः । द्विती० ब० अपः ।

(सं०) (२५) त वा द् के अनन्तर च, छ वा श, इनमेंसे कोई हो तो च, ज वा झ, इनमेंसे कोई हो तो ज, ट वा ठ इनमेंसे कोई हो तो ट, और ड वा ढ, इनमें से कोई हो तो ड, और ल हो तो (नित्य) ल, उस त वा द् के स्थानमें आदेश होता है । यथा सत्+चरितम्=सच्चरितम् । अगणयत्+जनान्=अगणयज्जनान् । भक्षयेत्+लशुनम्=भक्षयेल्लशुनम् इत्यादि ।

सर्वनाम शब्द

यद् (जो)

पुं०

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	यः	यौ	ये
द्विती०	यम्	यौ	यान्

स्त्री०

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	या	ये	याः
द्विती०	याम्	ये	याः

नपुं०

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	यत्	ये	यानि
द्विती०	यत्	ये	यानि

क्रिया

स्वादिगण

उभय० वृ (वरण करना)

परस्मै०

वर्त्तमान

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	वृणोति	वृणुतः	वृण्वन्ति
म०	वृणोषि(२६)	वृणुथः	वृणुथ
उ०	वृणोमि	वृणुवः / वृण्वः	वृणुमः / वृण्मः

आत्मने०

वर्त्तमान

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	वृणुते	वृण्वाते	वृण्वते
म०	वृणुषे	वृण्वाथे	वृणुध्वे
उ०	वृण्वे	वृणुवहे / वृण्वहे	वृणुमहे / वृण्महे

(सू०) (२६) अ वा आ को छोड़ के शेष स्वर, कवर्ग अथवा रेफ इनमेंसे किसी अक्षरसे परे प्रत्ययके दन्त्य सकारके स्थानमें मूर्धन्य षकार आदेश होता है । यथा वृणो + सि = वृणोषि इ० ॥

आज्ञा				आज्ञा		
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	वृणोतु	वृणुताम्	वृण्वन्तु	प्र० वृणुताम्	वृण्वाताम्	वृण्वताम्
म०	वृणु	वृणुतम्	वृणुत	म० वृणुष्व	वृण्वाथाम्	वृणुध्वम्
उ०	वृणवानि	वृणवाव	वृणवाम	उ० वृणवै	वृणवावहै	वृणवामहै
विधि				विधि		
प्र०	वृणुयात्	वृणुयाताम्	वृणुयुः	प्र० वृण्वीत	वृण्वीयाताम्	वृण्वीरन्
म०	वृणुयाः	वृणुयातम्	वृणुयात	म० वृण्वीथाः	वृण्वीयाथाम्	वृण्वीध्वम्
उ०	वृणुयाम्	वृणुयाव	वृणुयाम	उ० वृण्वीय	वृण्वीवहि	वृण्वीमहि
अनद्यतनभूत				अनद्यतनभूत		
प्र०	अवृणोत्	अवृणुताम्	अवृण्वन्	प्र० अवृणुत	अवृण्वाताम्	अवृण्वत
म०	अवृणोः	अवृणुतम्	अवृणुत	म० अवृणुथाः	अवृण्वाथाम्	अवृणुध्वम्
उ०	अवृणवम्	अवृणुव / अवृण्व	अवृणुम / अवृण्म	उ० अवृण्वि	अवृणुवहि / अवृण्वहि	अवृणुमहि / अवृण्महि

वर्त्तमान आज्ञा विधि अन० भूत

परस्मै० प्र० ए० श्रु (सुनना) शृणोति शृणोतु शृणुयात् अशृणोत्
इत्यादि परस्मै० वृणोति इ० के समान रूप होते हैं ॥

परस्मै० आप् (पाना)

वर्त्तमान				आज्ञा		
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	आप्नोति	आप्नुतः	आप्नुवन्ति	प्र० आप्नोतु	आप्नुताम्	आप्नुवन्तु
म०	आप्नोषि	आप्नुथः	आप्नुथ	म० आप्नुहि	आप्नुतम्	आप्नुत
उ०	आप्नोमि	आप्नुवः	आप्नुमः	उ० आप्नवानि	आप्नवाव	आप्नवाम

विधि				अनद्यतनभूत		
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	आप्नुयात्	आप्नुयाताम्	आप्नुयुः	प्र० आप्नोत्	आप्नुताम्	आप्नुवन्
म०	आप्नुयाः	आप्नुयातम्	आप्नुयात	म० आप्नोः	आप्नुतम्	आप्नुत
उ०	आप्नुयाम्	आप्नुयाव	आप्नुयाम	उ० आप्नवम्	आप्नुव	आप्नुम

वाक्यरचना

धातु

उभय०	परस्मै०
चि (बटोरना) वृ के समान ॥	शक (सकना) आप् के समान ॥

इति स्वादि गणके धातु

अव्यय

शनैः (धीरे २), इव (नाईं), ह्यः (कल का दिन जो बीत गया), अद्य (आज), सम्प्रति (इस समय), यदा (जब), कदा- (कब), तदा (तब), सदा, सर्वदा ॥

वाक्य

संस्कृत	हिन्दी
धर्मं शनैः (२७) श्चिनुयाद्वल्मीक-मिव पुत्तिकाः (अ) ॥	यहां पानी है। क्या तुम उसे नहीं पाते हो ॥

(सं०) (२७) विसर्ग के अनन्तर च वा छ हो तो विसर्गके स्थानमे तालव्य श, ट वा ठ हो तो मूर्धन्य ष, त वा थ हो तो दन्त्य स; आदेश होता है यथा—शनैः + चिनुयात् = शनैश्चिनुयात् इ० ॥

(अ) पुत्तिका = कीटविशेष। वल्मीक = बमौटा ॥

वाक्य

संस्कृत	हिन्दी
सदा धर्ममेव शृणुयात् ।	जिन फूलोंको कल हमने बटोरा
कदाप्यधर्मं न चरेत् ॥	था वे कहां हैं ॥
हरो यानि फलानि (अ) अचिनवं	स्वयंवरा कन्याने वर को वरण
तान्यद्य भक्षयामि ॥	किया है ॥
यो विद्यां शिक्षते स ज्ञानं	कल मैंने यह पोथी पाई ॥
सुखञ्चाप्नोति ॥	
मुनिः कथयति राजन् वरं	
वृणुष्व ॥	

चतुर्दश पाठ

संज्ञा

रेफान्त शब्द

स्त्री० गिर् (वाणी)	ए०	द्वि०	ब०	स्त्री० पुर् (नगर)	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	गीः	गिरौ	गिरः	प्र०	पूः	पुरौ	पुरः
सं०	हे गीः	गिरौ	गिरः	सं०	हे पूः	पुरौ	पुरः
द्विती०	गिरम्	गिरौ	गिरः	द्विती०	पुरम्	पुरौ	पुरः

(अ) वाक्यमे चाहे सन्धि न भी करे तो दोष नहीं है। यथा—फलानि+अचिनव इस वाक्यमें इ के स्थान मे य आदेश नहीं करे तो भी अशुद्ध नहीं है। इसी प्रकारसे अन्यत्र भी वाक्योंमें सन्धिका करना वा न करना वक्ताकी इच्छा के अधीन है ॥

स्त्री० द्वार्

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	द्वाः	द्वारौ	द्वारः
सं०	हे द्वाः	द्वारौ	द्वारः
द्विती०	द्वारम्	द्वारौ	द्वारः

सर्वनाम

इदम् (यह)

पुं०

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	अयम्	इमौ	इमे
द्विती०	इमम् / एनम्	इमौ / एनौ	इमान् / एनान्

स्त्री०

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	इयम्	इमे	इमाः
द्विती०	इमाम् / एनाम्	इमे / एने	इमाः / एनाः

नपुं०

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	इदम्	इमे	इमानि
द्विती०	इदम् / एनत्	इमे / एने	इमानि / एनानि

क्रिया

तनादि

उभय० तन् (ताननो)

परस्मै० | आत्मने०

वर्त्तमान

ए०	द्वि०	ब०		ए०	द्वि०	ब०
तनोति	तनुतः	तन्वन्ति	प्र०	तनुते	तन्वाते	तन्वते
तनोषि	तनुथः	तनुथ	म०	तनुषे	तन्वाथे	तनुध्वे
तनोमि	तनुवः तन्वः	तनुमः तन्मः	उ०	तन्वे	तनुवहे तन्वहे	तनुमहे तन्महे

आज्ञा

तनोतु	तनुताम्	तन्वन्तु	प्र०	तनुताम्	तन्वाताम्	तन्वताम्
तनु	तनुतम्	तनुत	म०	तनुष्व	तन्वाथाम्	तनुध्वम्
तनवानि	तनवाव	तनवाम	उ०	तनवै	तनवावहै	तनवामहै

विधि

तनुयात्	तनुयाताम्	तनुयुः	प्र०	तन्वीत	तन्वीयाताम्	तन्वीरन्
तनुयाः	तनुयातम्	तनुयात	म०	तन्वीथाः	तन्वीयाथाम्	तन्वीध्वं
तनुयाम्	तनुयाव	तनुयाम	उ०	तन्वीय	तन्वीवहि	तन्वीमहि

अनद्यतनभूत

अतनोत्	अतनुताम्	अतन्वन्	प्र०	अतनुत	अतन्वाताम्	अतन्वत
अतनोः	अतनुतम्	अतनुत	म०	अतनुथाः	अतन्वाथाम्	अतनुध्वं
अतनवम्	अतनुव अतन्व	अतनुम अतन्म	उ०	अतन्वि	अतनुवहि अतन्वहि	अतनुमहि अतन्महि

उभय॰ कृ (करना)

परस्मै॰				आत्मने॰		
वर्त्तमान				**वर्त्तमान**		
	ए॰	द्वि॰	ब॰	ए॰	द्वि॰	ब॰
प्र॰	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति	प्र॰ कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते
म॰	करोषि	कुरुथः	कुरुथ	म॰ कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे
उ॰	करोमि	कुर्वः	कुर्मः	उ॰ कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे
आज्ञा				**आज्ञा**		
प्र॰	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु	प्र॰ कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्
म॰	कुरु	कुरुतम्	कुरुत	म॰ कुरुष्व	कुर्वाथाम्	कुरुध्वम्
उ॰	करवाणि	करवाव	करवाम	उ॰ करवै	करवावहै	करवामहै
विधि				**विधि**		
प्र॰	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः	प्र॰ कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वीरन्
म॰	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात	म॰ कुर्वीथाः	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीध्वम्
उ॰	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम	उ॰ कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि
अनद्यतनभूत				**अनद्यतनभूत**		
प्र॰	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्	प्र॰ अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुर्वत
म॰	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत	म॰ अकुरुथाः	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्
उ॰	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म	उ॰ अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि

इति तनादि गण के धातु

वाक्यरचना

संज्ञा

स्त्री॰ धुर् (बोझा), पुर् शब्द के समान

अव्यय शब्द

ननु (प्रश्नवाचक), नूनम्. (निश्चयवाचक), आशु (शीघ्र) ग्रम्, उच्चैः (ऊंचा), नीचैः (नीचा), उपरि (ऊपर), क्व (कहां), अधः नीचे), पुरा (पूर्वकालमें), अधुना (अब)॥

वाक्य

संस्कृत	हिन्दी
हमिमां काशी नाम पुरं	लड़को इस कामको शीघ्र करो ।
श्यामि	अच्छा, अभी करते हैं ॥
बमपि पश्यैनाम् (२८) (अ) ॥	बताओ कल तुमने क्या किया ।

(सं॰) (२८) अ के परे ए वा ऐ हो तो दोनो मिल के एक ऐ हो जाता है । यथा पश्य+एनाम्=पश्यैनाम् । आ के परे ए वा ऐ हो तो दोनो मिल के एक ऐ हो जाता है । यथा राजा+ऐच्छत्= राजैच्छत् ॥ अ के परे ओ वा औ हो तो दोनो मिल के एक औ हो जाता है । यथा पच+ओदनम्=पचौदनम् । आ के परे ओ वा औ हो तो दोनो मिल के एक औ हो जाता है । यथा सेवस्व+औषधानि= सेवस्वौषधानि ॥

(अ) जब वाक्यमें इदम् शब्दका एक वार कथन हो गया हो और फिर भी उसीका प्रयोग करना हो तो उस (इदम् शब्द) के दूसरे रूपका प्रयोग करना चाहिये । यथा इमां पुरं पश्यामि, त्वमपि पश्य एनां, इत्यादि ॥

वाक्य

संस्कृत	हिन्दी
त उपरि (२९) तिष्ठन्ति ।	क्या अयोध्या नाम नगरी को
अहमधस्तिष्ठामि ॥	देखा ॥
सोऽहं कर्दिर्दृमदृष्टीकां तनोमि ॥	व्याधने जालको फैलाया ॥

पञ्चदश पाठ

सञ्ज्ञा

वकारान्त शब्द

स्त्री० दिव् (स्वर्ग)

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	द्यौः	दिवौ	दिवः
स०	हे द्यौः	दिवौ	दिवः
द्विती०	दिवम्	दिवौ	दिवः

(सं०) (२९) ए वा ओ के परे कोई स्वर हो तो उस ए वा ओ के स्थानमें क्रमसे अय् वा अव् आदेश होता है। परन्तु पदान्तमें स्थित ए वा ओ के स्थानमें अ आदेश भी हो सकता है और फिर संधि नहीं होती है। यथा ते + उपरि=तयुपरि अथवा त उपरि इत्यादि ॥

और पदान्तमें स्थित ए वा ओ के उत्तर यदि ह्रस्व अकार हो तो उस (ह्रस्व अकार) का लोप हो जाता है और उस लोप का सूचक ऽ ऐसा चिह्न लिख दिया जाता है। तथा ते+अपि=तेऽपि इ०॥

शकारान्त शब्द

स्त्री० तादृश् (वैसा वा वैसी)			नपुं० तादृश् (वैसा)			
ए०	द्वि०	ब०		ए०	द्वि०	ब०
तादृक्	तादृशौ	तादृशः	प्र०	तादृक्	तादृशी	तादृंशि
हे तादृक्	तादृशौ	तादृशः	सं	हे तादृक्	तादृशी	तादृंशि
तादृशम्	तादृशौ	तादृशः	द्विती०	तादृक्	तादृशी	तादृंशि

क्रिया

क्र्यादि गण

उभयपदी क्री (मोल लेना)

परस्मै०				आत्मने०			
वर्त्तमान				वर्त्तमान			
	ए०	द्वि०	ब०		ए०	द्वि०	ब०
प्र०	क्रीणाति	क्रीणीतः	क्रीणन्ति	प्र०	क्रीणीते	क्रीणाते	क्रीणते
म०	क्रीणासि	क्रीणीथः	क्रीणीथ	म०	क्रीणीषे	क्रीणाथे	क्रीणीध्वे
उ०	क्रीणामि	क्रीणीवः	क्रीणीमः	उ०	क्रीणे	क्रीणीवहे	क्रीणीमहे
आज्ञा				आज्ञा			
प्र०	क्रीणातु	क्रीणीताम्	क्रीणन्तु	प्र०	क्रीणीताम्	क्रीणाताम्	क्रीणताम्
म०	क्रीणीहि	क्रीणीतम्	क्रीणीत	म०	क्रीणीष्व	क्रीणाथाम्	क्रीणीध्वम्
उ०	क्रीणानि	क्रीणाव	क्रीणाम	उ०	क्रीणै	क्रीणावहै	क्रीणामहै
विधि				विधि			
प्र०	क्रीणीयात्	क्रीणीयाताम्	क्रीणीयुः	प्र०	क्रीणीत	क्रीणीयाताम्	क्रीणीरन्
म०	क्रीणीयाः	क्रीणीयातम्	क्रीणीयात	म०	क्रीणीथाः	क्रीणीयाथाम्	क्रीणीध्वम्
उ०	क्रीणीयाम्	क्रीणीयाव	क्रीणीयाम	उ०	क्रीणीय	क्रीणीवहि	क्रीणीमहि

अनद्यतनभूत				अनद्यतनभूत		
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	अक्रीणात्	अक्रीणीताम्	अक्रीणन्	प्र० अक्रीणीत	अक्रीणाताम्	अक्रीणत
म०	अक्रीणाः	अक्रीणीतम्	अक्रीणीत	म० अक्रीणीथाः	अक्रीणाथाम्	अक्रीणीध्वं
उ०	अक्रीणाम्	अक्रीणीव	अक्रीणीम	उ० अक्रीणि	अक्रीणीवहि	अक्रीणीमहि

उभयपदी ज्ञा (जानना)

	वर्त्त०	आज्ञा	विधि	अन०भूत
परस्मै० प्र० ए०	जानाति	जानातु	जानीयात्	अजानात्
आत्मने० प्र० ए०	जानीते	जानीताम्	जानीत	अजानीत

इत्यादि क्रीधातुके उभयपदके समान रूप ले जाओ ।

परस्मैपदी बन्ध् । (बांधना)

वर्त्तमान				आज्ञा		
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	बध्नाति	बध्नीतः	बध्नन्ति	प्र० बध्नातु	बध्नीताम्	बध्नन्तु
म०	बध्नासि	बध्नीथः	बध्नीथ	म० बधान	बध्नीतम्	बध्नीत
उ०	बध्नामि	बध्नीवः	बध्नीमः	उ० बध्नानि	बध्नाव	बध्नाम

~~अनद्यतनभूत~~ विधि				अनद्यतनभूत		
प्र०	बध्नीयात्	बध्नीयाताम्	बध्नीयुः	प्र० अबध्नात्	अबध्नीताम्	अबध्नन्
म०	बध्नीयाः	बध्नीयातम्	बध्नीयात	म० अबध्नाः	अबध्नीतम्	अबध्नीत
उ०	बध्नीयाम्	बध्नीयाव	बध्नीयाम	उ० अबध्नाम्	अबध्नीव	अबध्नीम

उभयपदी ग्रह् (ग्रहण करना)

	वर्त्त०	आज्ञा	विधि	अन०भूत
परस्मै० प्र० ए०	गृह्णाति	गृह्णातु	गृह्णीयात्	अगृह्णात्
आत्मने० प्र० ए०	गृह्णीते	गृह्णीताम्	गृह्णीत	अगृह्णीत

इत्यादि परस्मैपदमें बन्ध् धातुके परस्मैपदके रूपोंके समान और आत्मनेपदमें क्री धातुके आत्मनेपदके रूपोंके समान ले जाओ ।

परस्मै० अश् (खाना)

	वर्त्त०	आज्ञा	विधि	अन०भूत
प्र० ए०	अश्नाति	अश्नातु	अश्नीयात्	आश्नात्

बध्नाति इत्यादिके समान रूप ले जाओ ।

वाक्यरचना

संज्ञाशब्द

सदृश्, ईदृश् (ऐसा वा ऐसी), यादृश् (जैसा वा जैसी,) मादृश् (मुझसा वा मुझसी), त्वादृश् (तुझसा वा तुझसी), भवादृश् (आपसा वा आपसी), इत्यादि ऐसे शब्द जिनके अन्तमें दृश् पाया जावे तीनों लिङ्गोंमें । और स्त्री० में दृश् (आंख), दिश् (दिशा), इ० तादृश्के समान ॥

धातु

उभय० प्री (प्रसन्न होना वा करना) इ० क्रीके समान ॥
परस्मै० पुष् (पोषण करना) मुष् (चोरी करनी), इ० अश्के समान ।
परस्मै० ग्रन्थ (गूंथना), मन्थ् (मंथना) इ० बन्धके समान ॥

इति क्र्यादिगणके धातु ॥

अव्यय

वरम् (अच्छा वा कुछ अच्छा), बाढ़म् (हां, अच्छा), आम् (हां), यथा (जैसा), तथा (वैसा), इत्थम् (ऐसा), हन्त (हर्ष वा शोकबोधक), इति (समाप्ति, हेतु आदि अर्थोंका बोधक), अरे, अहो, आश्चर्य आदि बोधक) ॥

वाक्य

संस्कृत	हिन्दी
शुको यादृशं गिरं शृणोति	गाय बांधो और दधि मथो ॥
तादृशं वदति ॥	इस पेड़को काटो फूलोंको चुनो ॥
वत्स जानासि गणितम् ।	लड़का जैसा सुने वैसा बोले ॥
आम् जानामि गुरो ॥	क्या नहीं जानते हो कल मैंने
अद्याहं (३०) क्रीणामि	दो कपड़े मोल लिये ॥

(सं०) (३०) अ के परे अ वा आ, अथवा आ के परे अ वा आ हो तो दोनो मिल के एक आ हो जाता है। यथा अद्य + अहम् = अद्याहम् ॥

इ के परे इ वा ई, अथवा ई के परे इ वा ई हो, तो दोनों मिलके एक ई हो जाता है। यथा मुष्णाति + इति = मुष्णातीति ॥

उ के परे उ वा ऊ, अथवा ऊ के परे उ वा ऊ हो, तो दोनों मिल के एक ऊ हो जाता है। यथा कुरु + उन्नतिम् = कुरून्नतिम् ॥

ऋ के परे ऋ वा ॠ, अथवा ॠ के परे ऋ वा ॠ हो, तो दोनों मिलके एक ॠ हो जाता है।

वाक्य

संस्कृत	हिन्दी
(अ) पत्रं लेखनीं मषीञ्च ॥	मुझसा मनुष्य आपसे मनुष्योंकी सेवा करे ॥
मुष्णातीति मूषकः। चोरयतीति चोरः ॥	
यः पितरम्प्रीणाति स प्रियः पुत्रः ॥	
यथा ते कुर्वन्ति तथा कुरून्नतिम् ॥	

षोड़श पाठ

संज्ञा

षकारान्त शब्द

पुं० द्विष (शत्रु)

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	द्विट्	द्विषौ	द्विषः
सं०	हे द्विट्	द्विषौ	द्विषः
द्वि०	द्विषम्	द्विषौ	द्विषः

(अ) निकटके भूत व भविष्यके बोध करानेके लिये वर्त्तमानकालकी क्रियाका भी प्रयोग किया जा सकता है। यथा "अद्य क्रीणामि" इसका तात्पर्य है कि आज शीघ्र मोल लेऊगा ॥

सकारान्त शब्द

पुं० चन्द्रमस् (चन्द्र)

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	चन्द्रमाः	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः
सं०	हे चन्द्रमाः	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः
द्वि०	चन्द्रमसम्	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः

पुं० जटायुस्

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	जटायुः	जटायुषौ	जटायुषः
सं०	हे जटायुः	जटायुषौ	जटायुषः
द्वि०	जटायुषम्	जटायुषौ	जटायुषः

पुं० विद्वस् (विद्वान्)

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
सं०	हे विद्वन्	विद्वांसौ	विद्वांसः
द्विती०	विद्वांसम्	विद्वांसौ	विदुषः

पुं० पुम्स् (पुरुष)

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	पुमान्	पुमांसौ	पुमांसः
सं०	हे पुमन्	पुमांसौ	पुमांसः
द्विती०	पुमांसम्	पुमांसौ	पुंसः

प्रायः पुंलिङ्ग सकारान्त शब्दोंके रूप चन्द्रमस् शब्दके समान होते हैं ॥

विद्वस् इत्यादि शब्दोंमें जो भेद होता है सो दिखा दिया ।

स्त्री० आशिस् (आशीर्वाद)

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	आशीः	आशिषौ	आशिषः
सं०	हे आशीः	आशिषौ	आशिषः
द्विती०	आशिषम्	आशिषौ	आशिषः

नपुं० मनस् (मन)				नपुं चक्षुस् (आंख)		
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	मनः	मनसी	मनांसि	चक्षुः	चक्षुषी	चक्षूंषि
सं०	हे मनः	मनसी	मनांसि	हे चक्षुः	चक्षुषी	चक्षूंषि
द्वितीo	मनः	मनसी	मनांसि	चक्षुः	चक्षुषी	चक्षूंषि

प्रायः नपुंसकलिङ्ग सकारान्त शब्दोंके रूप मनस् शब्दके समान होते हैं। जहां पूर्वस्थित इकारादि स्वर वर्णके कारणसे स को मूर्धन्य होना सम्भव है वहां चक्षुस्के समान रूप होते हैं। यथा ज्योतिस् शब्दके ज्योतिः, ज्योतिषी, ज्योतींषि इत्यादि ॥

क्रिया

रुधादि गण

उभयपदी धातु

भुज् (पालन वा भोजन करना) ॥

पालन अर्थमें परस्मै० वर्त्तमान				भोजन अर्थमें आत्मने० वर्त्तमान		
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	भुनक्ति	भुङ्क्तः	भुञ्जन्ति	भुङ्क्ते	भुञ्जाते	भुञ्जते
म०	भुनक्षि	भुङ्क्थः	भुङ्क्थ	भुङ्क्षे	भुञ्जाथे	भुङ्ग्ध्वे
उ०	भुनज्मि	भुञ्ज्वः	भुञ्ज्मः	भुञ्जे	भुञ्ज्वहे	भुञ्ज्महे
	आज्ञा			आज्ञा		
प्र०	भुनक्तु	भुङ्क्ताम्	भुञ्जन्तु	भुङ्क्ताम्	भुञ्जाताम्	भुञ्जताम्
म०	भुङ्ग्धि	भुङ्क्तम्	भुङ्क्त	भुङ्क्ष्व	भुञ्जाथाम्	भुङ्ग्ध्वम्
उ०	भुनजानि	भुनजाव	भुनजाम	भुनजै	भुनजावहै	भुनजामहै

विधि

प्र०	भुञ्ज्यात्	भुञ्ज्याताम्	भुञ्ज्युः
म०	भुञ्ज्याः	भुञ्ज्यातम्	भुञ्ज्यात
उ०	भुञ्ज्याम्	भुञ्ज्याव	भुञ्ज्याम

अन० भूत

प्र०	अभुनक्	अभुङ्क्ताम्	अभुञ्जन्
म०	अभुनक्	अभुङ्क्तम्	अभुङ्क्त
उ०	अभुनजम्	अभुञ्ज्व	अभुञ्ज्म

विधि

प्र०	भुञ्जीत	भुञ्जीयाताम्	भुञ्जीरन्
म०	भुञ्जीथाः	भुञ्जीयाथाम्	भुञ्जीध्वम्
उ०	भुञ्जीय	भुञ्जीवहि	भुञ्जीमहि

अन० भूत

प्र०	अभुङ्क्त	अभुञ्जाताम्	अभुञ्जत
म०	अभुङ्क्थाः	अभुञ्जाथाम्	अभुङ्ग्ध्वं
उ०	अभुञ्जि	अभुञ्ज्वहि	अभुञ्ज्महि

भिद् (भिन्न करना)

परस्मै०

वर्त्तमान

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	भिनत्ति	भिन्तः	भिन्दन्ति
म०	भिनत्सि	भिन्थः	भिन्थ
उ०	भिनद्मि	भिन्द्वः	भिन्द्मः

आज्ञा

प्र०	भिनत्तु	भिन्ताम्	भिन्दन्तु
म०	भिन्धि	भिन्तम्	भिन्त
उ०	भिनदानि	भिनदाव	भिनदाम

विधि

प्र०	भिन्द्यात्	भिन्द्याताम्	भिन्द्युः
म०	भिन्द्याः	भिन्द्यातम्	भिन्द्यात
उ०	भिन्द्याम्	भिन्द्याव	भिन्द्याम

आत्मने०

वर्त्तमान

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	भिन्ते	भिन्दाते	भिन्दते
म०	भिन्त्से	भिन्दाथे	भिन्ध्वे
उ०	भिन्दे	भिन्द्वहे	भिन्द्महे

आज्ञा

प्र०	भिन्ताम्	भिन्दाताम्	भिन्दताम्
म०	भिन्त्स्व	भिन्दाथाम्	भिन्ध्वम्
उ०	भिनदै	भिनदावहै	भिनदामहै

विधि

प्र०	भिन्दीत	भिन्दीयाताम्	भिन्दीरन्
म०	भिन्दीथाः	भिन्दीयाथाम्	भिन्दीध्वं
उ०	भिन्दीय	भिन्दीवहि	भिन्दीमहि

अनद्यतनभूत				अनद्यतन भूत		
प्र०	अभिनत्	अभिन्ताम्	अभिन्दन्	अभिन्त	अभिन्दाताम्	अभिन्दत
म०	अभिनत् / अभिनः	अभिन्तम्	अभिन्त	अभिन्थाः	अभिन्दाथाम्	अभिन्ध्वं
उ०	अभिनदम्	अभिन्द्व	अभिन्द्म	अभिन्दि	अभिन्द्वहि	अभिन्द्महि

रुध् (रोकना)

	परस्मै० वर्त्तमान			आत्मने० वर्त्तमान		
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	रुणद्धि	रुन्धः	रुन्धन्ति	रुन्धे	रुन्धाते	रुन्धते
म०	रुणत्सि	रुन्धः	रुन्ध	रुन्त्से	रुन्धाथे	रुन्ध्वे
उ०	रुणध्मि	रुन्ध्वः	रुन्ध्मः	रुन्धे	रुन्ध्वहे	रुन्ध्महे
	आज्ञा			आज्ञा		
प्र०	रुणद्धु	रुन्धाम्	रुन्धन्तु	रुन्धाम्	रुन्धाताम्	रुन्धताम्
म०	रुन्धि	रुन्धम्	रुन्ध	रुन्त्स्व	रुन्धाथाम्	रुन्ध्वम्
उ०	रुणधानि	रुणधाव	रुणधाम	रुणधै	रुणधावहै	रुणधामहै
	विधि			विधि		
प्र०	रुन्ध्यात्	रुन्ध्याताम्	रुन्ध्युः	रुन्धीत	रुन्धीयाताम्	रुन्धीरन्
म०	रुन्ध्याः	रुन्ध्यातम्	रुन्ध्यात	रुन्धीथाः	रुन्धीयाथाम्	रुन्धीध्वम्
उ०	रुन्ध्याम्	रुन्ध्याव	रुन्ध्याम	रुन्धीय	रुन्धीवहि	रुन्धीमहि
	अनद्यतनभूत			अनद्यतनभूत		
प्र०	अरुणत्	अरुन्धाम्	अरुन्धन्	अरुन्ध	अरुन्धाताम्	अरुन्धत
म०	अरुणत् / अरुणः	अरुन्धम्	अरुन्ध	अरुन्धाः	अरुन्धाथाम्	अरुन्ध्वम्
उ०	अरुणधम्	अरुन्ध्व	अरुन्ध्म	अरुन्धि	अरुन्ध्वहि	अरुन्ध्महि

वाक्यरचना

संज्ञाशब्द

स्त्री॰ त्विष् (दीप्ति), प्रावृष् (वर्षा ऋतु) इ॰ द्विष्‌के समान ॥

पुं॰ वेधस् (ब्रह्मा), स्त्री॰ अप्सरस् (अप्सरा) इ॰ चन्द्रमस्‌के समान ॥

नपुं॰ यशस्, तमस्, पयस् (दूध वा पानी) इ॰ मनस् के समान ॥

नपुं॰ आयुस्, धनुस्, वपुस् (शरीर) इ॰ चक्षुस्‌के समान ॥

धातु

उभय॰ युज् (योग करना) इ॰ भुजके समान ॥

परस्मै॰ भञ्ज् (तोड़ना) के भनक्ति भङ्क्तः इत्यादि रूप होते हैं ॥

उभय॰ छिद् (छिन्न करना) भिद्‌के समान ॥

अव्यय

वृथा, हा (शोकबोधक), इदानीम् (इस समय), तदानीम् उस समय) ॥

इति रुधादि गणके धातु

वाक्य

संस्कृत	हिन्दी
द्विषो जय। यशो लभस्व ॥	राजा राज्यको पालन करता है
यः पुमान् न विद्वान् न च	और सुख भोगता है ॥
धार्मिकः स वृथा जीवति ॥	हे विद्वान् संशयको काट ॥

वाक्य

संस्कृत	हिन्दी
द्विषो व्यूहमभिन्दन् । पुरश्चारुन्धन् ॥	हाय शत्रु राज्य भोग रहे हैं ॥
चन्द्र[illegible]लमो भिनत्ति ॥	इस दण्डे को लो और तोड़ो ॥
वृथा अच्छिनः (३१) शाखाम् ॥	

सप्तदश पाठ

संज्ञा

हकारान्त शब्द

पुं० मधुलिह् (भ्रमर)	ए०	द्वि०	ब०	स्त्री० उपानह् (जूता)	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	मधुलिट्	मधुलिहौ	मधुलिहः	प्र०	उपानत्	उपानहौ	उपानहः
सं०	हे मधुलिट्	मधुलिहौ	मधुलिहः	सं०	हे उपानत्	उपानहौ	उपानहः
द्वि०	मधुलिहम्	मधुलिहौ	मधुलिहः	द्वि०	उपानहम्	उपानहौ	उपानहः

(सं०) (३१) स्वरके अनन्तर छकार हो तो छकारके स्थानमें च्छ हो जाता है । यथा अ + छिनः = अच्छिनः इ० ॥

पदान्तमें स्थित दीर्घ स्वरके अनन्तर छकार हो तो उसके स्थान में च्छ नहीं भी होता है । यथा वृथा + छिनत्ति = वृथाच्छिनत्ति वा वृथा छिनत्ति इत्यादि ॥

सर्वनाम शब्द

किम् (कौन)

	पुं०				स्त्री०		
प्र०	कः	कौ	के	प्र०	का	के	काः
द्विती०	कम्	कौ	कान्	द्विती०	काम्	के	काः

नपुं०

प्र०	किं	के	कानि
द्विती०	किं	के	कानि

क्रिया

ह्वादि गणके उभयपदी धातु

दा (देना)

परस्मै — वर्तमान०

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	ददाति	दत्तः	ददति
म०	ददासि	दत्थः	दत्थ
उ०	ददामि	दद्वः	दद्मः

आज्ञा

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	ददातु	दत्ताम्	ददतु
म०	देहि	दत्तम्	दत्त
उ०	ददानि	ददाव	ददाम

आत्मने० — वर्त्तमान

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	दत्ते	ददाते	ददते
म०	दत्से	ददाथे	दद्ध्वे
उ०	ददे	दद्वहे	दद्महे

आज्ञा

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	दत्ताम्	ददाताम्	ददताम्
म०	दत्स्व	ददाथाम्	दद्ध्वम्
उ०	ददै	ददावहै	ददामहै

विधि				विधि		
प्र०	दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः	प्र० ददीत	ददीयाताम्	ददीरन्
म०	दद्याः	दद्यातम्	दद्यात	म० ददीथाः	ददीयाथाम्	ददीढ्वम्
उ०	दद्याम्	दद्याव	दद्याम	उ० ददीय	ददीवहि	ददीमहि
अनद्यतनभूत				अनद्यतनभूत		
प्र०	अददात्	अदत्ताम्	अददुः	प्र० अदत्त	अददाताम्	अददत
म०	अददाः	अदत्तम्	अदत्त	म० अदत्थाः	अददाथाम्	अदद्ध्वम्
उ०	अददाम्	अदद्व	अदद्म	उ० अददि	अदद्वहि	अदद्महि

धा (धारण वा पोषण करना)

परस्मै०				आत्मने०		
वर्त्तमान				वर्त्तमान		
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	दधाति	धत्तः	दधति	प्र० धत्ते	दधाते	दधते
म०	दधासि	धत्थः	धत्थ	म० धत्से	दधाथे	दद्ध्वे
उ०	दधामि	दध्वः	दध्मः	उ० दधे	दध्वहे	दध्महे
आज्ञा				आज्ञा		
प्र०	दधातु	धत्ताम्	दधतु	प्र० धत्ताम्	दधाताम्	दधताम्
म०	देहि	धत्तम्	धत्त	म० धत्स्व	दधाथाम्	दद्ध्वम्
उ०	दधानि	दधाव	दधाम	उ० दधै	दधावहै	दधामहै
विधि				विधि		
प्र०	दध्यात्	दध्याताम्	दध्युः	प्र० दधीत	दधीयाताम्	दधीरन्
म०	दध्याः	दध्यातम्	दध्यात	म० दधीथाः	दधीयाथाम्	दधीढ्वम्
उ०	दध्याम्	दध्याव	दध्याम	उ० दधीय	दधीवहि	दधीमहि

अनद्यतनभूत				अनद्यतनभूत		
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
प्र	अदधात्	अधत्ताम्	अदधुः	प्र० अधत्त	अदधाताम्	अदधत
म	अदधाः	अधत्तम्	अधत्त	म० अधत्थाः	अदधाथाम्	अदद्ध्वम्
उ	अदधाम्	अदध्व	अदध्म	उ० अदधि	अदध्वहि	अदध्महि

इति ह्वादि गणके धातु ॥

वाक्यरचना

अव्यय

चित् वा चन (ये अव्यय, प्रश्नवाचक शब्दोंके सिद्ध रूपोंके अनन्तर लगके उनके प्रयोगोंको अनिश्चयवाचक बना देते हैं), चेत्-(यदि), नो (नहीं) ॥

वाक्य

संस्कृत	हिन्दी
विद्या ददाति विनयं ॥	कौन २ फल तुमने कल खाये ॥
कानि कानि दुःखानि नाददाच्छत्रुः ॥	मा आशीष दे मैं विद्या और धन पाऊं ॥
उपानहं धारय । नो चेत् कण्टकानि पादौ विध्येयुः ॥	

वाक्य

संस्कृत	हिन्दी
कः कोऽत्र भोः अत्रेदं (३२)	भगवान् विश्वको पोषण करते हैं ॥
पुस्तकं देहि ॥	यहां वह कौन पेड़ है जिसमें
मधुलिण् माद्यति (अ) ॥	फूल नहीं लगे हैं ?

अष्टादश पाठ

संज्ञा

सर्वनाम शब्द

सकारान्त

अदस् (वह)

	पुं०			स्त्री०		
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	असौ	अमू	अमी	असौ	अमू	अमूः
द्विती०	अमुम्	अमू	अमून्	अमूम्	अमू	अमूः

(स०) (३२) अ के परे इ वा ई हो तो दोनो मिल के एक ए हो जाता है। यथा अत्र+इदम्=अत्रेदम् इ० ॥

आ के परे इ वा ई हो तो दोनों मिल के एक ए हो जाता है। यथा सखा+इच्छति=सखेच्छति इत्यादि ॥

अ के परे उ वा ऊ हो तो दोनों मिल के एक ओ होता है। यथा गच्छ+उपरि=गच्छोपरि इ० ॥

आ के परे उ वा ऊ होवे तो दोनों मिलकर एक ओ हो जाता है। यथा पिता+उचितं वदति=पितोचितं वदति इ० ॥

(अ) (स०) (१९) के नियमानुसार सन्धि भई है।

नपुं०

प्र०	अदः	अमूनी	अमूनि
द्विती०	अदः	अमूनी	अमूनि

सर्व (सब) (अ)

सर्व शब्दके पुंलिङ्गमें बालक शब्दके समान रूप होते हैं केवल प्रथमाके बहुवचनमें सर्वाः ऐसा नहीं किन्तु सर्वे ऐसा रूप होता है ॥

स्त्रीलिङ्गमें विद्या शब्दके समान और नपुंसकलिङ्गमें पुस्तक शब्दके समान रूप होते हैं ॥

पूर्व शब्दके रूप तीनों लिङ्गोंमे सर्व शब्दके समान होते हैं केवल पुं० प्रथमाके बहुवचनमें पूर्वे और पूर्वाः यों दो२ रूप होते हैं॥

अन्य शब्दके रूप तीनों लिङ्गोंमें सर्व शब्दके समान होते हैं केवल नपुं० के ए० व० में अन्यम् ऐसा नहीं किन्तु अन्यत् ऐसा रूप होता है ॥

(अ) वाक्यरचनाके लिये सर्वनाम शब्दोंके अति प्रयोजनीय अस्मदादि शब्दोंके रूप पहिलेही दिखला चुके। शेष सर्वादि, पूर्वादि और अन्यादि शब्दो का भी परिचय इस भागमे यहा दिया जाता है ॥

क्रिया

अदादि गण

परस्मै०

अद् (खाना)

वर्त्तमान

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	अत्ति	अत्तः	अदन्ति
म०	अत्सि	अत्थः	अत्थ
उ०	अद्मि	अद्वः	अद्मः

आज्ञा

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	अत्तु	अत्ताम्	अदन्तु
म०	अद्धि	अत्तम्	अत्त
उ०	अदानि	अदाव	अदाम

विधि

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	अद्यात्	अद्याताम्	अद्युः
म०	अद्याः	अद्यातम्	अद्यात
उ०	अद्याम्	अद्याव	अद्याम

अनद्यतनभूत

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	आदत्	आत्ताम्	आदन्
म०	आदः	आत्तम्	आत्त
उ०	आदम्	आद्व	आद्म

परस्मै०

या (जाना)

वर्त्तमान

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	याति	यातः	यान्ति
म०	यासि	याथः	याथ
उ०	यामि	यावः	यान्ति

आज्ञा

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	यातु	याताम्	यान्तु
म०	याहि	यातम्	यात
उ०	यानि	याव	याम

विधि

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	यायात्	यायाताम्	यायुः
म०	यायाः	यायातम्	यायात
उ०	यायाम्	यायाव	यायाम

अनद्यतनभूत

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	अयात्	अयाता	अयान् / अयुः
म०	अयाः	अयातम्	अयात
उ०	अयाम्	अयाव	अयाम

उभयपदी

ब्रू (बोलना)

परस्मै०

वर्त्तमान

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	ब्रवीति, आह	ब्रूतः, आहतुः	ब्रुवन्ति, आहुः
म०	ब्रवीषि, आत्थ	ब्रूथः, आहथुः	ब्रूथ
उ०	ब्रवीमि	ब्रूवः	ब्रूमः

आज्ञा

प्र०	ब्रवीतु	ब्रूताम्	ब्रुवन्तु
म०	ब्रूहि	ब्रूतम्	ब्रूत
उ०	ब्रवाणि	ब्रवाव	ब्रवाम

विधि

प्र०	ब्रूयात्	ब्रूयाताम्	ब्रूयुः
म०	ब्रूयाः	ब्रूयातम्	ब्रूयात
उ०	ब्रूयाम्	ब्रूयाव	ब्रूयाम

अनद्यतनभूत

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	अब्रवीत्	अब्रूताम्	अब्रुवन्
म०	अब्रवीः	अब्रूतम्	अब्रूत
उ०	अब्रवम्	अब्रूव	अब्रूम

आत्मने०

वर्त्तमान

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	ब्रूते	ब्रुवाते	ब्रुवते
म०	ब्रूषे	ब्रुवाथे	ब्रूध्वे
उ०	ब्रुवे	ब्रूवहे	ब्रूमहे

आज्ञा

प्र०	ब्रूताम्	ब्रुवाताम्	ब्रुवताम्
म०	ब्रूष्व	ब्रुवाथाम्	ब्रूध्वम्
उ०	ब्रवै	ब्रवावहै	ब्रवामहै

विधि

प्र०	ब्रुवीत	ब्रुवीयाताम्	ब्रुवीरन्
म०	ब्रुवीथाः	ब्रुवीयाथाम्	ब्रुवीध्वम्
उ०	ब्रुवीय	ब्रुवीवहि	ब्रुवीमहि

अनद्यतनभूत

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	अब्रूत	अब्रुवाताम्	अब्रुवत
म०	अब्रूथाः	अब्रुवाथाम्	अब्रूध्वम्
उ०	अब्रुवि	अब्रुवहि	अब्रूमहि

वाक्यरचना

संज्ञाशब्द

विश्व (सब), एक, इनके रूप सर्व शब्दके समान होते हैं ॥

पर, अपर, स्व, प्रथम, चरम (अन्तिम), अल्प, कतिपय (कुछ) इत्यादि शब्दोंके रूप पूर्व शब्दके समान होते हैं ॥

इतर (अन्य), कतर (दोमेंसे कौनसा), कतम (तीन आदिकों मेंसे कौन सा) इत्यादि शब्दों के रूप अन्य शब्द के रूपों के समान होते हैं ॥

धातु

स्ना (नहाना), ख्या (बोलना), मा (मापना), वा (वायुका बहना), द्रा (भागना वा सोना), भा (चमकना) इ० याके समान॥

अव्यय

अथ (इसके अनन्तर), अतः (इस कारणसे), यतः (जिस कारणसे) ततः (उससे वा उस कारणसे), कुतः (कहासे वा किस कारण से) ॥

वाक्य

संस्कृत	हिन्दी
ननुसर्वः (३३) सर्वंन्न जानातीति ब्रवीषि किम् । आम् एवं ब्रवीमि ॥	वायु बहता है । कैसे मैं नहाऊं ॥ मै कहताहूं तुम कहां गये थे और क्या खाया था ॥

(स०) (३३) स्वरके अनन्तर रेफके उत्तर स्पर्श, अथवा य, ल, व इनमेंसे कोई अक्षर हो तो वह दो भी हो सकता है । यथा सर्वः अथवा सर्व्वः ये दोनों ठीक हैं ॥

स्वरके उत्तर स्पर्श, वा य, ल, व इनमेंसे किसी अक्षरके अनन्तर यदि स्वर अक्षर न पाया जावे तो वह (स्पर्श वा य, ल, व) दो भी हो सकता है । यथा विध्यति=विध्ध्यति वा विध्यति इत्यादि ॥

किसी वर्गका द्वितीय अक्षर यदि दो किया जाय तो उन दोनों मेंसे प्रथमके स्थानमें उसी वर्गका प्रथम अक्षर आदेश होता है। और यदि किसी वर्ग का चतुर्थ अक्षर दो किया जाय तो उन दोनों मेंसे पहिलेके स्थानमे उसी वर्ग का तृतीय अक्षर आदेश होता है। यथा विध्ध्यति=विद्ध्यति इत्यादि ॥

वाक्य

संस्कृत	हिन्दी
अहो अमी (३४) अश्वा यान्ति ॥	भाइयो, नहाओ खाओ, तब जाओ, ॥
रासभ आह। भो न त्वं जानासि गीतं । अत इदं ब्रवीमि ।	सब बनिये और ब्राह्मण बोले कि लड़के तो जीते हैं। इसने किस लड़के को खा लिया ॥
शृगाल आह मास अस्त्येत् ॥ रात्रिरयात् । अथ पश्य पूर्वा दिग्घसतीव (अ) ॥	यह तो दूसरी वस्तु है इसको मैं न लूंगा ॥

(सं०) (३४) अदस् शब्दके रूपमें मकारके उत्तर दीर्घ ई अथवा जिस किसी शब्दके द्विवचनान्त सिद्ध रूपके अन्तमें दीर्घ ई, ऊ वा ए इनमें से कोई स्वर हो तो उस (ई, ऊ वा ए) के साथ उनके अनन्तर स्थित किसी स्वरकी सन्धि नहीं होती है । यथा अमी + अश्वाः = अमी अश्वाः, अमू + अर्भकौ = अमू अर्भकौ; कवी + इमौ = कवी इमौ, शिशू + अत्र = शिशू अत्र, पचेते + एतौ = पचेते एतौ इत्यादि ऐसेही रहेंगे । इनकी सन्धि नहो होगी ॥

ओकारान्त अव्ययके उत्तर स्थित स्वरके साथ उस (अव्यय) के अन्तमें स्थित ओकारकी भी सन्धि नहीं होती है। यथा अहो + अमी = अहो अमी इत्यादि ऐसे ही रहेंगे । इनकी सन्धि नहीं होगी ॥

(अ) (स०) (२०) के अनुसार दिक् + हसति = दिग्घसति ॥

ऊनविंश पाठ

सख्यावाचक शब्द (अ)

अकारान्त एक शब्दके रूप तीनों लिङ्गों में सर्व शब्दके समान प्रायः एक वचनही में होते हैं ॥

इकारान्त द्वि (दो) शब्दके केवल द्विवचनहीमें प्रयोग होते हैं ॥ यथा

	पुं०	स्त्री०	नपु०
	द्वि०	द्वि०	द्वि०
प्र०	द्वौ	द्वे	द्वे
सं०	हे द्वौ	द्वे	द्वे
द्विती०	द्वौ	द्वे	द्वे

त्रि (तीन) शब्दके और इसके अनन्तरके चतुर् (चार) इत्यादि दशन् (दश) शब्द पर्यन्त संख्यावाचक शब्दोंके रूप केवल वहुवचन-हीमें होते हैं यथा—

(अ) इस भाग के चतुर्थ पृष्ठमे कह आये है कि विशेष्य और विशेषण शब्द समान ही लिङ्ग वचन, और विभाक्ति के होते हैं। पर सख्यावाचक विशेषण शब्दों के लिङ्ग वचन मे उक्त नियम सर्वदा नही माना जाता है, किन्तु किसी २ सख्यावाचाक विशेषण ने उक्त नियम पाया जाता है और किसी २ में नही। इस भेदका निर्देश इस पाठ मे और आगके पाठ मे भी स्थल २ पर किया जावेगा ॥

त्रि

		पुं०	स्त्री०	नपुं०
		ब०	ब०	ब०
प्र०		त्रयः	तिस्रः	त्रीणि
स०	हे	त्रयः	तिस्रः	त्रीणि
द्वित०		त्रीन्	तिस्रः	त्रीणि

रेफान्त चतुर्

		पुं०	स्त्री०	नपुं०
		ब०	ब०	ब०
प्र०		चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि
स०	हे	चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि
द्वितीं०		चतुरः	चतस्रः	चत्वारि

नकारान्त पञ्चन् (पांच)

पञ्चन् शब्दके और इसके अनन्तरके संख्यावाचक षष् तथा नकारान्त सप्तन्, अष्टन्, नवन्, दशन् इत्यादि शब्दोंके रूप तीनों लिङ्गोंमें समान होते हैं, चाहे उनके विशेष्य किसी लिङ्गमें क्यों न हों ॥

पुं० नपुं० वा स्त्री०

	पञ्चन्		अष्टन् (आठ)
	ब०		ब०
प्र०	पञ्च	प्र०	अष्टौ, अष्ट
स०	हे पञ्च	सं०	अष्टौ, अष्ट
द्वितीं०	पञ्च	द्वितीं०	अष्टौ अष्ट

सप्तन् (सात), नवन् (नव), दशन् इत्यादि नकारान्त संख्या-वाचक शब्दोंके रूप पञ्चन् के समान होते हैं ॥

षकारान्त षष् (छ)

पुं० नपुं० वा स्त्री

	व०
प्र०	षट
सं० हे	षट्
द्विती०	षट्

क्रिया

परस्मै०

अस् (होना वा रहना)

वर्त्तमान

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	अस्ति	स्तः	सन्ति
म०	असि	स्थः	स्थ
उ०	अस्मि	स्वः	स्मः

आज्ञा

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	अस्तु	स्ताम्	सन्तु
म०	एधि	स्तम्	स्त
उ०	असानि	असाव	आसाम

विधि

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	स्यात्	स्याताम्	स्युः
म०	स्याः	स्यातम्	स्यात
उ०	स्याम्	स्याव	स्याम

आत्मने०

आस् (बैठना)

वर्त्तमान

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	आस्ते	आसाते	आसते
म०	आस्से	आसाथे	आध्वे
उ०	आसे	आस्वहे	आस्महे

आज्ञा

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	आस्ताम्	आसाताम्	आसताम्
म०	आस्व	आसाथाम्	आध्वम्
उ०	आसै	आसावहै	आसामहै

विधि

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	आसीत	आसीयाताम्	आसीरन्
म०	आसीथाः	आसीयाथाम्	आसीध्वम्
उ०	आसीय	आसीवहि	आसीमहि

अनद्यतनभूत			अनद्यतनभूत		
प्र० आसीत्	आस्ताम्	आसन्	प्र० आस्त	आसाताम्	आसत
म० आसीः	आस्तम्	आस्त	म० आस्थाः	आसाथाम्	आध्वम्
उ० आसम्	आस्व	आस्म	उ० आसि	आस्वहि	आस्महि

वाक्यरचना

वाक्य

संस्कृत	हिन्दी
एक (३५) आस्तेऽपरो याति। विभक्तयः सप्त। लिङ्गानि वच-नानि च त्रीणि। दश लकारा दशैव च गणाः। समासाः कार-काणि तु षट् षड् भवन्ति। एक-श्चन्द्रो द्वौ पक्षौ त्रयो गुणाश्चत्वारो वेदाः पञ्च प्राणाः षड् ऋतवः सप्त भुवनान्यष्टौ वसवो नवग्रहा दश दिशो भवन्ति॥	यहां पांच लड़के बैठे हैं॥ वहां तीन स्त्रिया बैठी हैं सात घोड़े और छ गायें कल हमने मोल लीं॥ तीन लड़कियां और दो लड़के खेल रहे हैं॥ चार पोथियां मैंने पढ़ लीं। उसने तो दोही पढ़ी॥ मा बैठी है। एक लड़की और दो लड़के खेलते हैं।

(सं०) (३५) पदान्तमें स्थित विसर्गके पूर्वमें यदि अकार हो और उस विसर्गके अनन्तर अकारको छोड़ के यदि कोई दूसरा स्वर आवे तो उस विसर्गका लोप हो जाता है और फिर सन्धि नहीं होती है। यथा एकः + आस्ते = एक आस्ते इ० ॥ रेफके स्थानमें जो विसर्ग होता है उसके लिये यह नियम नहीं है। यथा भ्रातः + आगच्छ- भ्रातरागच्छ इत्यादि ॥

विंश पाठ

संख्यावाचक इकारान्त स्त्री॰ विंशति (बीस) (अ) शब्दके रूप स्तुति शब्दके समान होते हैं ॥

षष्टि (साठ), सप्तति (सत्तर), अशीति (अस्सी), नवति (नब्बे) इन संख्यावाचक शब्दोंके रूप विंशतिशब्दके समान स्त्री॰ में ही होते हैं और विंशति इत्यादि शब्द जिनके अन्तमें हों उन (एकविंशति इत्यादि) संख्यावाचक शब्दोंके रूप भी विंशति इत्यादि ही के समान स्त्री॰ में होते हैं ॥

तकारान्त स्त्री॰ त्रिंशत् (तीस) शब्दके रूप सरित् शब्दके समान होते हैं ॥

चत्वारिंशत् (चालीस), पञ्चाशत् (पचास) इन संख्यावाचक शब्दोके रूप त्रिंशत्शब्दके समान स्त्री॰ हीमें होते हैं और ये शब्द जिनके अन्तमें हों उन (एकत्रिंशत् इत्यादि) संख्यावाचक शब्दोके रूप भी त्रिंशत् शब्दहीके समान स्त्री॰ में होते हैं ॥

(अ) विंशति और इसके अनन्तरके संख्यावाचक शब्द विशेषण और विशेष्य दोनों होते है । जब विशेषण होते है तब एक ही वचन मे उनका प्रयोग होता है चाहे उनका विशेष्य किसी वचनमे क्यो न हो । और लिङ्ग भी उनका अपना ही रहता है चाहे विशेष्यका लिङ्ग जो कोई क्यों न हो । यथा—विंशतिः पुरुषा गच्छन्ति· विंशतिमश्वान् क्रीणामि· विंशति फलानि भक्षयामि इत्यादि । इसी प्रकार सहस्र स्त्रियः, लक्षं अश्वाः कोटिर्मनुष्याः इत्यादि प्रयोग होते है ॥

अकारान्त नपुंसकलिङ्ग शत (सौ) शब्दके रूप फल शब्दके समान होते हैं।

सहस्र (हज़ार), अयुत (दश हज़ार), लक्ष (लाख), नियुत (दश लाख) इनके रूप शत शब्दके समान नपुं० हीमें होते हैं ॥

ह्रस्व इकारान्त स्त्री० कोटि (करोड़) शब्दके रूप स्तुति शब्दके समान होते हैं ॥

ह्रस्व इकारान्त कति (कितना) शब्दके रूप तीनों लिङ्गोंमें समान और सदा ब० व० में होते हैं। यथा

पुं० नपुं वा स्त्री० ब०	
प्र०	कति
सं०	हे कति
द्विती०	कति

ऐसे ही यति (जितना), तति (तितना) इन शब्दोंके भी रूप होते हैं ॥

क्रिया

परस्मै०

रुद् (रोना)

वर्त्तमान

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	रोदिति	रुदितः	रुदन्ति
म०	रोदिषि	रुदिथः	रुदिथ
उ०	रोदिमि	रुदिवः	रुदिमः

हन् (हनना)

वर्त्तमान

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	हन्ति	हतः	घ्नन्ति
म०	हंसि	हथः	हथ
उ०	हन्मि	हन्वः	हन्मः

आज्ञा				आज्ञा		
प्र० रोदितु	रुदिताम्	रुदन्तु		प्र० हन्तु	हताम्	घ्नन्तु
म० रुदिहि	रुदितम्	रुदित		म० जहि	हतम्	हत
उ० रोदानि	रोदाव	रोदाम		उ० हनानि	हनाव	हनाम
विधि				विधि		
प्र० रुद्यात्	रुद्याताम्	रुद्युः		प्र० हन्यात्	हन्याताम्	हन्युः
म० रुद्याः	रुद्यातम्	रुद्यात		म० हन्याः	हन्यातम्	हन्यात
उ० रुद्याम्	रुद्याव	रुद्याम		उ० हन्याम्	हन्याव	हन्याम
अनद्यतनभूत				अनद्यतनभूत		
प्र० अरोदीत् / अरोदत्	अरुदिताम्	अरुदन्		प्र० अहन्	अहताम्	अघ्नन्
म० अरोदीः / अरोदः	अरुदितम्	अरुदित		म० अहन्	अहतम्	अहत
उ० अरोदम्	अरुदिव	अरुदिम		उ० अहनम्	अहन्व	अहन्म

स्वप् (सोना)

	वर्त्त०	आज्ञा	विधि	अन० भूत
प्र०ए०	स्वपिति	स्वपितु	स्वप्यात्	अस्वपीत् वा अस्वपत्

इत्यादि रोदिति इत्यादिके समान रूप होते हैं ॥

परस्मै०
जागृ (जागना)
वर्त्तमान

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	जागर्ति	जागृतः	जाग्रति
म०	जागर्षि	जागृथः	जागृथ
उ०	जागर्मि	जागृवः	जागृमः

आत्मने०
शी (सोना वा लेटना)
वर्त्तमान

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	शेते	शयाते	शेरते
म०	शेषे	शयाथे	शेध्वे
उ०	शये	शेवहे	शेमहे

आज्ञा

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	जागर्त्तु	जागृताम्	जाग्रतु
म०	जागृहि	जागृतम्	जागृत
उ०	जागराणि	जागराव	जागराम

विधि

प्र०	जागृयात्	जागृयाताम्	जागृयुः
म०	जागृयाः	जागृयातम्	जागृयात
उ०	जागृयाम्	जागृयाव	जागृयाम

अनद्यतनभूत

प्र०	अजागः	अजागृताम्	अजागरुः
म०	अजागः	अजागृतम्	अजागृत
उ०	अगागरम्	अजागृव	अजागृम

आज्ञा

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	शेताम्	शयाताम्	शेरताम्
म०	शेष्व	शयाथाम्	शेध्वम्
उ०	शयै	शयावहै	शयामहै

विधि

प्र०	शयीत	शयीयाताम्	शयीरन्
म०	शयीथाः	शयीयाथाम्	शयीध्वम्
उ०	शयीय	शयीवहि	शयीमहि

अनद्यतनभूत

प्र०	अशेत	अशयाताम्	अशेरत
म०	अशेथाः	अशयाथाम्	अशेध्वम्
उ०	अशयि	अशेवहि	अशेमहि

इति अदादि गणके धातु

वाक्यरचना

श्वस् (सांस लेना) अन् (जीना) इनके रूप स्वप्‌के समान होते हैं ॥

वाक्य

संस्कृत	हिन्दी
स वीरः शतं शत्रूनजयत् । सहस्रं च शत्रवोऽधुनापि विद्यन्ते ॥	मैंने पचास पुस्तकोंको कल पढ़ डाला । तूने तौ तीस ही पढ़ीं
राजन् लक्षं मुद्रा गृहाण मुञ्च माम् । यामि स्वं गृहम् ॥	भला यह पूछता हूं कि इसने कितनी पढ़ीं
कतिचित्पक्षिणास्तिष्ठन्ति । कतिचिड्डीयन्ते ॥	यदि एक लाख मनुष्य और दश सहस्र घोड़े हों तो मैं अवश्य लड़ाई करूं ॥
पञ्चाशतं पत्राण्यपठं । त्रिंशतन्तु अद्य पठामि ॥	इसने तो दश लाख कमाये ॥
शतं सैनिका जाग्रति । अन्ये सर्वे स्वपन्ति ॥	तुमने कितने कमाये ॥
न हन्यान्न मतिं दद्यात् ॥	

इति

Printed at the INDIAN PRESS, Allahabad.

संस्कृत
ऋजुव्याकरण
द्वितीय और तृतीय
भाग

पण्डित आदित्यराम भट्टाचार्य्यने
बनाया

RIJUVYAKARĀNA

A
SANSKRIT GRAMMAR
IN
HINDI

PARTS II & III

BY
ADITYARAM BHATTACHARYA, M. A.,
Professor of Sanskrit, Muir Central College

Second Edition.

ALLAHABAD
PRINTED AT THE "INDIAN PRESS."
1891

PRICE 8 ANNAS] [दाम आठ आने

शुद्धिपत्र ॥

द्वितीय भाग

☞ इन अशुद्धियों को शोधकर विद्यार्थी पाठ आरम्भ करे ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५	२०	सनान	समान
७	१	इकान्त	इकारान्त
८	१०	लेखिताख्वः लेखिताख्वः	लेखिताख्वः लेखितास्मः
९	१७	करनेवालें	करनेवाले
११	२३	दा धातु	दा धातुके
१४	२४	लभ्यने	लभ्यते
१५	१४	आत्मने० (सेट्)	आत्मने० (सेव्)
१९	८	Vindravan	Vrindavan
२५	५	Coquer	Conquer
२५	१५	yeare	years
३८	४	चर्के	कुर्के
३९	६	क्यां	क्यों
४४	२१	आ आदेश	औ आदेश
४४	२३	अङ्क ४८ पृ०(अ)से	५२ पृ० (अ) अङ्कसे

४६	११	अकृवम्	अकृह्म्
५२	१३	४० पृ०	४४ पृ०
५५	१४	चक्षुर्म्यान	चक्षुर्भ्याम्
५८	५	स्थायेयेत्	स्थापयेत्
६१	२१	होते हैं ॥	होते हैं। द्वितीय तथा तृतीय शब्दके शेष रूप बालक शब्दके समान होते हैं।

तृतीय भाग

४	२१	कृदन्तक्रियाका	कृदन्तक्रियाके
७	१४	ईयस	ईयस्
८	२१	कालीदास	कालिदास

संस्कृत

ऋजुव्याकरणम्

द्वितीय भाग ॥

एकविंश पाठ ॥

संज्ञा

अकारान्त पुँल्लिङ्ग बालक शब्द ॥

	ए॰	द्वि॰	ब॰
तृतीया	बालकेन	बालकाभ्याम्	बालकैः
चतुर्थी	बालकाय	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
पञ्चमी	बालकात्	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
षष्ठी	बालकस्य	बालकयोः	बालकानाम्
सप्तमी	बालके	बालकयोः	बालकेषु

प्रायः अकारान्त पुँल्लिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग शब्दोंके रूप (अ) बालक शब्दके समान होते हैं (आ) ॥

(अ) इन रूपोंके घोखने समय विद्यार्थियोंको ध्यान देके देखना चाहिये कि सज्ञा शब्दोंके रूप तृतीया, चतुर्थी, तथा पञ्चमीके द्विवचनमें सदा समान और षष्ठी तथा सप्तमीके द्विवचनमें सर्वदा समान होते है ॥ और युष्मद् तथा अस्मद् शब्दोंको छोड़ के शेष शब्दोंकी चतुर्थी और पञ्चमीके बहुवचनमें सर्वदा समान रूप होते हैं ॥

(आ) इस भागमें सज्ञा शब्दोंके रूपोंमें जो सादृश्य वा भेद बतलाया जायगा वह तृतीया विभक्तिके एकवचनसे लेके सप्तमी विभक्तिके बहुवचनपर्यन्त समझा जायगा ॥

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग विद्या शब्द ॥

	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	विद्यया	विद्याभ्याम्	विद्याभिः
च०	विद्यायै	विद्याभ्याम्	विद्याभ्यः
पं०	विद्यायाः	विद्याभ्याम्	विद्याभ्यः
ष०	विद्यायाः (अ)	विद्ययोः	विद्यानाम्
सप्त०	विद्यायाम्	विद्ययोः	विद्यासु

प्रायः आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दोंके रूप विद्या शब्दके समान होते हैं ॥

सर्वनाम ॥

तीनों लिङ्गोंमें समान शब्द ॥

	युष्मद् ए०	युष्मद् द्वि०	युष्मद् ब०	अस्मद् ए०	अस्मद् द्वि०	अस्मद् ब०
तृ०	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
च०	तुभ्यम्, ते	युवाभ्यां, वाम्	युष्मभ्यम्, वः	मह्यम्, मे	आवाभ्यां, नौ	अस्मभ्यम्, नः
पं०	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
ष०	तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माक, वः	मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माक, नः
सप्त०	त्वयि	युवयोः	युष्मासु	मयि	आवयोः	अस्मासु

(अ) अकारान्त शब्दोंको छोड के बहुधा सज्ञा शब्दोंके रूप पञ्चमी और षष्ठीके एकवचनमें समान होते है । यथा आकारान्त विद्या इत्यादि शब्दोंके विद्यायाः इत्यादि रूप होते है ॥

द्वाविंश पाठ ॥

क्रिया

प्रथम भागमें वर्त्तमानादि चार लकारोंमें सहज प्रचलित धातुओंके रूप दिखाये हैं। इस भागमें अनद्यतन भविष्य, सामान्य भविष्य, क्रियातिपत्ति, परोक्षभूत, सामान्यभूत और आशिस् इन शेष छः लकारोंमे चुने २ धातुओं के रूपोंको दिखावेंगे। इन लकारोंमें धातुओंके रूप गणके अनुसार विभक्त नहीं होते हैं, किन्तु इनके रूप बनानेमें धातुओंका दूसरी रीतिसे विभाग किया जाता है। वह रीति यह है कि विभक्तिके लगानेके पूर्व किसी २ धातुके अन्तमें इकार लगता है और किसी २ के नहीं। सो जिनके अन्त में बहुधा इ लगता है उनको सेट् कहते हैं। यथा भू इत्यादि। और जिनके अन्तमें बहुधा नहीं लगता है उनको अनिट् कहते हैं। यथा कृ इत्यादि। और कुछ ऐसे भी धातु हैं जिनके अन्तमें इकार लगता भी है और नहीं भी लगता है, वे वेट् कहाते हैं। यथा नश् इत्यादि॥ निदान इस भागमें शेष छः लकारोंके रूपोंमें धातुओंके तीन विभाग अर्थात् सेट् अनिट् और वेट् देख पड़ेंगे॥

अनद्यतन भविष्य (अ)।

स्वरान्त अनिट् धातु (आ) ॥

उभयपदी ॥

(नी)

	परस्मैपद ॥				आत्मनेपद		
	ए०	द्वि०	ब०		ए०	द्वि०	ब०
प्र०	नेता	नेतारौ	नेतार	प्र०	नेता (इ)	नेतारौ	नेतारः
म०	नेतासि	नेतास्थः	नेतास्थ	म०	नेतासे	नेतासाथे	नेताध्वे
उ०	नेतास्मि	नेतास्वः	नेतास्मः	उ०	नेताहे	नेतास्वहे	नेतास्महे

उभयपदमें क्रमसे कृ धातुके कर्त्ता कर्त्तारौ कर्त्तारः इत्यादि ॥

दा धातुके दाता दातारौ दातारः इत्यादि रूप होते हैं ॥

परस्मैपद में गै के गाता इत्यादि रूप होते हैं (ई) ॥

(अ) बोलने के आठ प्रहर के उपरान्त जो क्रिया होगी ॥

(आ) दीर्घ ऊकारान्त और दीर्घ ऋकारान्त धातु, और श्रि, डी, शी, वृ इत्यादि कई धातुओं को छोड शेष स्वरान्त धातु अनिट् होते है ॥

(इ) परस्मै० और आत्मने० मे अनद्यतन भविष्य लकारके प्रथम पुरुषके रूप तीनों वचनोमे पृथक् २ सदा समान होते है ॥

(ई) अनद्यतनभविष्य, सामान्यभविष्य, क्रियातिपत्ति और परोक्षभूत इन लकारो मे एकारान्त, ऐकारान्त, और ओकारान्त धातु आकारान्त धातुओं के समान रूप पाते है ॥

स्वरान्त सेट् धातु ॥

उभयपदी ॥

(श्री)

	परस्मै०			आत्मने०	
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०

	ए०	द्वि०	ब०		ए०	द्वि०	ब०
प्र०	श्रयिता	श्रयितारौ	श्रयितारः	प्र०	श्रयिता	श्रयितारौ	श्रयितारः
म०	श्रयितासि	श्रयितास्थः	श्रयितास्थ	म०	श्रयितासे	श्रयितासाथे	श्रयिताध्वे
उ०	श्रयितास्मि	श्रयितास्वः	श्रयितास्मः	उ०	श्रयिताहे	श्रयितास्वहे	श्रयितास्महे

(परस्मै० — प्रथम तीन स्तम्भ; आत्मने० — अन्तिम तीन स्तम्भ)

भू इत्यादि धातुओं के भविता भवितारौ भवितारः इत्यादि ।

त्रयोविंश पाठ ॥

संज्ञा

इकारान्त शब्द ॥

	पुं० कवि ॥				पुं० सखि ॥		
	ए०	द्वि०	ब०		ए०	द्वि०	ब०
तृ०	कविना	कविभ्याम्	कविभिः	तृ०	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः
च०	कवये	कविभ्याम्	कविभ्यः	च०	सख्ये	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
पं०	कवेः	कविभ्याम्	कविभ्यः	पं०	सख्युः	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
ष०	कवेः	कव्योः	कवीनाम्	ष०	सख्युः	सख्योः	सखीनाम्
स०	कवौ	कव्योः	कविषु	स०	सख्यौ	सख्योः	सखिषु

ह्रस्व इकारान्त पुं० शब्दों के रूप कवि शब्द के समान होते हैं, केवल सखि शब्द के एक वचन में जो भेद तृतीयादि विभक्तियों में होता है सो ऊपर दिखा दिया । तृतीयादि विभक्तियों में पति शब्द के रूप सखि शब्द

के समान होते हैं । पर पति शब्द जब समास के अन्त में आता है, यथा भूपति, नृपति महीपति इत्यादि शब्दों में, तब उसके सब रूप कवि शब्द ही के समान होते हैं । यथा भूपतिना भूपतये इत्यादि ॥

स्त्री० स्तुति

	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	स्तुत्या	स्तुतिभ्याम्	स्तुतिभिः
च०	स्तुतये, स्तुत्यै	स्तुतिभ्याम्	स्तुतिभ्यः
पं०	स्तुतेः, स्तुत्याः	स्तुतिभ्याम्	स्तुतिभ्यः
ष०	स्तुतेः, स्तुत्याः	स्तुत्योः	स्तुतीनाम्
सं०	स्तुतौ, स्तुत्याम्	स्तुत्योः	स्तुतिषु

नपुं० वारि ॥

	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	वारिणा	वारिभ्यां	वारिभिः
च०	वारिणे	वारिभ्यां	वारिभ्यः
पं०	वारिणः	वारिभ्यां	वारिभ्यः
ष०	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
स०	वारिणि	वारिणोः	वारिषु

नपुं० दधि ॥

	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	दध्ना	दधिभ्याम्	दधिभिः
च०	दध्ने	दधिभ्यां	दधिभ्य
प०	दध्नः	दधिभ्यां	दधिभ्यः
ष०	दध्नः	दध्नोः	दध्नाम्
सं०	दध्नि, दधनि	दध्नोः	दधिषु

ह्रस्व इकारान्त नपुं० शब्दों के रूप वारि शब्द के समान होते हैं। दधि इत्यादि शब्दों के रूप में जो भेद होते हैं सो ऊपर दिखला दिये॥

ह्रस्व इकारान्त विशेषण नपुंसक अनादि इत्यादि शब्दों के चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी और सप्तमी के एकवचन में और षष्ठी और सप्तमी के द्विवचन में एक वार कवि शब्द के समान और दूसरी वार वारि शब्द के समान यों दो २ रूप होते हैं॥

क्रिया॥

अनद्यतन भविष्य काल॥

व्यञ्जनान्त अनिट् धातु॥

उभयपदी॥

(वप्)

	परस्मै०			आत्मने०		
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	वप्ता	वप्तारौ	वप्तारः	वप्ता	वप्तारौ	वप्तारः
म०	वप्तासि	वप्तास्थः	वप्तास्थ	वप्तासे	वप्तासाथे	वप्ताध्वे
उ०	वप्तास्मि	वप्तास्वः	वप्तास्मः	वप्ताहे	वप्तास्वहे	वप्तास्महे

इसी प्रकारसे स्वप् धातु के स्वप्ता स्वप्तारौ इत्यादि और आप् धातुके आप्ता इ० रूप होते हैं॥

परस्मै० में शक् धातुके शक्ता इत्यादि; त्यज् धातु के त्यक्ता इत्यादि उभय० में क्रमसे पच् धातुके पक्ता इत्यादि; भुज् धातुके भोक्ता इत्यादि और मुच् धातुके मोक्ता इत्यादि रूप होते हैं॥

परस्मै० में गम्के गन्ता इत्यादि ; हनके हन्ता इत्यादि ; दृशके द्रष्टा इत्यादि ; सृज्के स्रष्टा इत्यादि ; और प्रच्छके प्रष्टा इत्यादि रूप होते हैं ॥

व्यञ्जनान्त सेट् धातु ॥

	परस्मै० पठ्			परस्मै० लिख्		
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	पठिता	पठितारौ	पठितारः	लेखिता	लेखितारौ	लेखितारः
म०	पठितासि	पठितास्थः	पठितास्थ	लेखितासि	लेखितास्थः	लेखितास्थ
उ०	पठितास्मि	पठितास्वः	पठितास्मः	लेखितास्मि	लेखितास्वः	लेखितास्मः

इसी प्रकारसे आत्मने० में सेव् धातुके सेविता इत्यादि और वृत्के वर्त्तिता इत्यादि रूप होते हैं। उभयपद में क्रमसे चुरके चोरयिता इत्यादि और ग्रह्के ग्रहीता इत्यादि रूप होते हैं ॥

वाक्यरचना ॥

अव्यय ॥

श्व (कलका दिन जो आवेगा), परश्वः (परसोंका दिन जो आवेगा)

वाक्य ॥

संस्कृत	हिन्दी
शिक्षक श्वः परीक्षां कर्त्ता, अत्र कः कर्त्ता, किञ्च कर्म्म (अ) ॥	कल मैं चिट्ठी लिखूंगा I shall write a letter tomorrow
रामः श्वो वन गन्ता ॥	परसों हम दोनों काशी को जायेंगे ॥ We (two) shall go to Kasi day after tomorrow
परश्वः सूर्य्यग्रहण भविता ॥	कल मैं दो पुस्तक मोल लूंगा। एक व्याकरण दूसरी चाणक्यनीति ॥ I shall purchase a couple of books tomorrow—a grammar and a Chanakya-niti.
कृषाणो बीजानि वप्ता ॥	

(अ) क्रियाके करनेवाले को कर्त्ता कहते हैं । और जो किया जाता है वह कर्म कहाता है ॥

चतुर्विंश पाठ ॥

संज्ञा ॥

ईकारान्त शब्द ॥

स्त्री० नदी ॥

	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
च०	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पं०	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
ष०	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्त०	नद्याम्	नद्योः	नदीषु

स्त्री० स्त्री

	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभिः
च०	स्त्रियै	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
पं०	स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
ष०	स्त्रियाः	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्
स०	स्त्रियाम्	स्त्रियोः	स्त्रीषु

स्त्री० श्री ॥

	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	श्रिया	श्रीभ्याम्	श्रीभिः
च०	श्रियै, श्रिये	श्रीभ्यां	श्रीभ्यः
पं०	श्रियाः, श्रियः	श्रीभ्यां	श्रीभ्यः
ष०	श्रियाः, श्रियः	श्रियोः	श्रियाम्, श्रीणाम्
स०	श्रियि, श्रियाम्	श्रियोः	श्रीषु

दीर्घ ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दोंके रूप नदी शब्दके समान होते हैं । स्त्री और श्री शब्दोंके रूपोंमें नदी शब्दसे भेद दिखला दिये । स्त्रीलिङ्ग धी इत्यादि शब्दोंके रूप श्री शब्दके समान होते हैं ॥

पुल्लिङ्ग सुधी शब्दके रूप चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, और सप्तमीके एक वचनमें और षष्ठीके बहुवचन में केवल एक ही एक सुधिये सुधियः सुधियः और सुधियि और सुधियां ये रूप होते हैं: दूसरे रूप नहीं होते।

सर्वनाम ॥

तद् शब्द

	पुं० तथा नपुं०			स्त्री०		
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	तेन	ताभ्याम्	तैः	तया	ताभ्याम्	ताभिः
च०	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पं०	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः	तास्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
ष०	तस्य	तयोः	तेषाम्	तस्याः	तयोः	तासाम्
सं०	तस्मिन्	तयोः	तेषु	तस्याम्	तयोः	तासु

क्रिया ॥

सामान्य भविष्य (अ) ॥

स्वरान्त अनिट् धातु ॥

उभयपदी (नी)

	परस्मै०			आत्मने०		
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	नेष्यति	नेष्यतः	नेष्यन्ति	नेष्यते	नेष्येते	नेष्यन्ते
म०	नेष्यसि	नेष्यथः	नेष्यथ	नेष्यसे	नेष्येथे	नेष्यध्वे
उ०	नेष्यामि	नेष्यावः	नेष्यामः	नेष्ये	नेष्यावहे	नेष्यामहे

उभय० में क्रमसे दा धातु के दास्यति दास्यते और ह्वे धातु के ह्वास्यति ह्वास्यते इत्यादि रूप और परस्मै० में गै धातु के गास्यति इत्यादि रूप होते हैं।

स्वरान्त सेट् धातु ॥

उभयपदी (श्रि)

	परस्मै०			आत्मने०		
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	श्रयिष्यति	श्रयिष्यतः	श्रयिष्यन्ति	श्रयिष्यते	श्रयिष्येते	श्रयिष्यन्ते
म०	श्रयिष्यसि	श्रयिष्यथः	श्रयिष्यथ	श्रयिष्यसे	श्रयिष्येथे	श्रयिष्यध्वे
उ०	श्रयिष्यामि	श्रयिष्यावः	श्रयिष्यामः	श्रयिष्ये	श्रयिष्यावहे	श्रयिष्यामहे

परस्मै०में भू धातुके भविष्यति भविष्यतः भविष्यन्ति इत्यादि रूप होते हैं (अ) ॥

ऋकारान्त धातु सामान्य भविष्य और क्रियातिपत्ति में सेट् होते हैं। यथा कृके उभय०में क्रमसे करिष्यति, करिष्यते इत्यादि रूप होते हैं ॥

(अ) सामान्य भविष्य मे भ्वादि धातुओं के उत्तर वर्त्तमानकाल की विभक्तियो के समान विभक्तिया अन्तमे पाई जाती है। रूपो मे देखो ॥

पञ्चविंश पाठ ॥

सञ्ज्ञा ॥

उकारान्त शब्द ॥

पुं० (शिशु)

	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	शिशुना	शिशुभ्याम्	शिशुभिः
च०	शिशवे	शिशुभ्याम्	शिशुभ्यः
पं०	शिशोः	शिशुभ्याम्	शिशुभ्यः
ष०	शिशोः	शिश्वो	शिशूनाम्
स०	शिशौ	शिश्वोः	शिशुषु

स्त्री० (धेनु)

	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभि
च०	धेन्वै, धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पं०	धेन्वाः, धेनोः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्य
ष०	धेन्वाः, धेनोः	धेन्वोः	धेनूनाम्
स०	धेन्वाम्, धेनौ	धेन्वोः	धेनुषु

नपुं० (मधु)

	ए०	द्वि०	ब०
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
चतुर्थी	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
पञ्चमी	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्य.
षष्ठी	मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्
सप्तमी	मधुनि	मधुनोः	मधुषु

ह्रस्व उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप शिशु शब्द के समान, स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप धेनुशब्द के और नपुंसक शब्दों के रूप मधु शब्द के समान होते हैं ॥

ह्रस्व उकारान्त नपुंसक विशेषण स्वादु इत्यादि शब्दों के रूप चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी और सप्तमी के एकवचन में और षष्ठी, सप्तमी के द्विवचन में एक वार शिशु शब्द के समान और दूसरी वार मधु शब्द के समान यों दो २ रूप होते हैं

सर्वनाम एतद् शब्द

	पुं० तथा नपुं०			स्त्री०		
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	एतेन	एताभ्याम्	एतैः	एतया	एताभ्याम्	एताभिः
च०	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः	एतस्यै	एताभ्याम्	एताभ्यः
पं०	एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्यः	एतस्याः	एताभ्याम्	एताभ्यः
ष०	एतस्य	एतयोः	एतेषां	एतस्याः	एतयोः	एतासाम्
स०	एतस्मिन्	एतयोः	एतेषु	एतस्याम्	एतयोः	एतासु

क्रिया ॥

सामान्य भविष्य ॥

व्यञ्जनान्त ॥

अनिट् धातु ॥

(वप्)

	परस्मै०			आत्मने०		
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	वप्स्यति	वप्स्यतः	वप्स्यन्ति	वप्स्यते	वप्स्येते	वप्स्यन्ते
म०	वप्स्यसि	वप्स्यथः	वप्स्यथ	वप्स्यथे	वप्स्येथे	वप्स्यध्वे
उ०	वप्स्यामि	वप्स्यावः	वप्स्यामः	वप्स्ये	वप्स्यावहे	वप्स्यामहे

परस्मै० में आपके आप्स्यति इत्यादि; क्षिप्‌के उभय० में क्रमसे क्षेप्स्यति क्षेप्स्यते इत्यादि और आत्मने० में लभ्‌के लप्स्यते इत्यादि रूप होते हैं ॥

वच् और वह्के भी वक्ष्यति, वक्ष्यते इत्यादि रूप उभय० में क्रमसे होते हैं। इसी प्रकार से शक्के शक्ष्यति और त्यज् के त्यक्ष्यति इत्यादि परस्मै०में रूप ले जाओ ॥

वस् इत्यादिके वत्स्यति इत्यादि रूप होते हैं। ऐसेही अद् इत्यादि के अत्स्यति इ० रूप ले जाओ ॥

उभय०में क्रमसे भुज्के भोक्ष्यति, भोक्ष्यते इ०, मुच्के मोक्ष्यति, मोक्ष्यते इत्यादि रूप और परस्मै०में दृश्के द्रक्ष्यति इत्यादि रूप होते हैं। ऐसेही सृज्के स्रक्ष्यति इत्यादि और प्रच्छ्के प्रक्ष्यति इत्यादि रूप ले जाओ ॥

परस्मै०में मज्ज् के मङ्क्ष्यति इत्यादि, ऐसे ही भञ्ज् के भङ्क्ष्यति इ०, और अनिट् नश् के नङ्क्ष्यति इत्यादि और नम् इत्यादिके नंस्यति इत्यादि और मन् इत्यादिके मंस्यते इ० रूप होते हैं ॥

सेट् धातु ॥

	परस्मै० (पठ्)			आत्मने० (सेव)		
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति	सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते
म०	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ	सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे
उ०	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः	सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे

परस्मै०में लिख् इत्यादि के लेखिष्यति इत्यादि, कुप् इत्यादि के कोपिष्यति इत्यादि, कथ् इत्यादिके कथयिष्यति इत्यादि, और उभयपद में क्रमसे चुर् इत्यादिके चोरयति, चोरयिष्यते इ० रूप होते हैं ॥

उभय०में क्रमसे ग्रह्के ग्रहीष्यति, ग्रहीष्यते इत्यादि रूप ले आओ ॥ गम् और हन् ये धातु सामान्य भविष्य और क्रियातिपत्तिमे सेट् होते हैं और उनके क्रमसे गमिष्यति और हनिष्यति इत्यादि रूप होते हैं ॥

हृप् इत्यादि के हर्पिष्यति इत्यादि रूप होते हैं ॥

वृत्के वर्त्तिष्यते वा वर्त्स्यति इत्यादि और वृध्के वर्द्धिष्यते वा वर्त्स्यति इत्यादि रूप होते हैं (अ)। ऐसे ही नृत् इत्यादिके परस्मै० में नर्त्तिष्यति वा नर्त्स्यति इत्यादि दो २ रूप होते हैं ॥

(अ) वृत् और वृध ये सामान्य भविष्य और क्रियातिपत्ति मे उभयपदी होते हैं। परन्तु परस्मैपद मे अनिट् और आत्मनेपद मे सेट् होते हैं ॥

वाक्य रचना ॥

अव्यय-ध्रुवम् (निश्चय करके) ॥ तूष्णीम् (चुप) ॥

वाक्य ॥

संस्कृत	हिन्दी
किं करिष्यन्ति वक्तारो यदि श्रोता न विद्यते ॥	मथुराको कब जाओगे ? When will you go to Mathura
योऽपराधं करिष्यति स ध्रुवं दण्ड्यो भविष्यति ॥	कब मैं श्रीवृन्दावन देखूंगा ? When shall I see Vrindavan
अवश्यमविमृश्यकारी अनुतापं गमिष्यति ॥	मैं तुमको पुस्तक देऊंगा; तुम मुझे उसका मूल्य देना ॥ I shall give you the book. You will pay me its price.
हिरण्यको वदति, छेत्स्यामि पाशान्दन्तेन (अ) ॥	यदि पत्र लिखोगे तो उसका उत्तर देऊंगा ॥ If you will write a letter to me, I shall reply to it.
देवदत्त तुभ्यम् (आ) पुस्तकमद्य दास्यामि ॥	यदि चुप रहोगे तो मैं भी चुप रहूंगा ॥ If you keep silent I too shall do so.
कथं मम (इ) मनोरथाः सेत्स्यन्ति ॥	

(अ) क्रियाके सिद्ध करने मे जो कर्त्ता का सबसे बड़ा सहायक हो उसे करण कहते है। करण मे तृतीया विभक्ति लगती है ॥

(आ) देय वस्तु जिस पात्रको दी जाती है वह संप्रदान कहाता है। संप्रदान मे चतुर्थी विभक्ति लगती है ॥

(इ) सम्बन्ध अर्थ मे षष्ठी विभक्ति लगती है ॥

षड्विंश पाठ ॥

संज्ञा ऊकारान्त शब्द

स्त्री० (वधू)	ए०	द्वि०	ब०	स्त्री० (भू)	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः	तृ०	भुवा	भूभ्याम्	भूभि
च०	वध्वै	वधूभ्याम्	वधूभ्यः	च०	भुवे, भुवै	भूभ्याम्	भूभ्यः
पं०	वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः	पं०	भुवः, भुवाः	भूभ्याम्	भूभ्यः
ष०	वध्वाः	वध्वोः	वधूनाम्	ष०	भुवः, भुवाः	भुवो	भुवाम्, भूनाम्
स०	वध्वाम्	वध्वोः	वधूषु	स०	भुवि, भुवां	भुवोः	भूषु

भ्रू इत्यादि शब्दों के रूप भू शब्द के समान होते हैं ॥

दीर्घ ऊकारान्त पुल्लिङ्ग प्रतिभू इत्यादि शब्दोंके रूप चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी और सप्तमीके एकवचनमें और षष्ठीके बहुवचनमे केवल एक ही एक प्रतिभुवे, प्रतिभुव, प्रतिभुवः और प्रतिभुवि और प्रतिभुवां ये रूप होते हैं दूसरे रूप नहीं होते है ॥

सर्वनाम–अदस् शब्द ॥

	पुं० तथा नपुं०			स्त्री०		
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः	अमुया	अमूभ्याम्	अमूभिः
च०	अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः	अमुष्यै	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
पं०	अमुष्मात्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः	अमुष्याः	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
ष०	अमुष्य	अमुयो	अमीषाम्	अमुष्याः	अमुयोः	अमूषाम्
स०	अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु	अमुष्याम्	अमुयोः	अमूषु

क्रिया ॥

क्रियातिपत्ति (अ) ॥

स्वरान्त अनिट् धातु ॥

उभयपदी (नी) ॥

	परस्मै०			आत्मने०		
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	अनेष्यत्(आ)	अनेष्यताम्	अनेष्यन्	अनेष्यत	अनेष्येताम्	अनेष्यन्त
म०	अनेष्यः	अनेष्यतम्	अनेष्यत	अनेष्यथाः	अनेष्येथाम्	अनेष्यध्वम्
उ०	अनेष्यम्	अनेष्याव	अनेष्याम	अनेष्ये	अनेष्यावहि	अनेष्यामहि

(अ) कारण क्रियाके न होनेसे कार्य क्रियाका न होना बतलाने के लिये क्रियातिपत्ति लकारका प्रयोग किया जाता है । यथा–सुवृष्टिश्चेदभविष्यत् तदा सुभिक्षमभविष्यत् (यदि सुवृष्टि होती तो सुभिक्ष होता) अर्थात न वृष्टि अच्छी भई न अनाज सस्ता भया । यहां कारणरूप वृष्टिके न होने से कार्यरूप शस्यका न होना बोध होता है ॥

(आ) क्रियातिपत्तिमें अनद्यतनभूतके समान धातुओं के पूर्वमें अ लगता है । तथा धातुके आदि में स्थित इ, ई, वा ए, के स्थान में ऐ और उ, ऊ, वा ओ के स्थानमें औ आदेश होता है । क्रियातिपत्तिमें धातुओंके उत्तर सामान्य भविष्य के समान स्य लगता है । अनद्यतनभूतकालकी विभक्तियों के समान विभक्तियां भी इसके अन्त मे पाई जाती है । रूपों में देखो ॥

ऐसे ही उभय० में दा धातुके क्रमसे अदास्यत्, अदास्यत इत्यादि और परस्मै०में गै धातु के अगास्यत् इत्यादि रूप होते हैं ॥

स्वरान्त सेट् धातु ।

उभयपदी ॥

(श्रि)

	परस्मै०			आत्मने०		
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	अश्रयिष्यत्	अश्रयिष्यताम्	अश्रयिष्यन्	अश्रयिष्यत	अश्रयिष्येताम्	अश्रयिष्यन्त
म०	अश्रयिष्यः	अश्रयिष्यतम्	अश्रयिष्यत	अश्रयिष्यथाः	अश्रयिष्येथाम्	अश्रयिष्यध्वम्
उ०	अश्रयिष्यम्	अश्रयिष्याव	अश्रयिष्याम	अश्रयिष्ये	अश्रयिष्यावहि	अश्रयिष्यामहि

परस्मै० भू धातुके अभविष्यत् इत्यादि और उभय० में कृ इत्यादिके क्रमसे अकरिष्यत् इ० और अकरिष्यत इत्यादि रूप क्रमसे होते हैं ॥

व्यञ्जनान्त अनिट् धातु ॥

उभयपदी वप्के क्रमसे अवप्स्यत् इत्यादि और अवप्स्यत इत्यादि रूप होते हैं ।

परस्मै०में आप्के आप्स्यत् इत्यादि और आत्मने०में लभके अलप्स्यत इत्यादि रूप होते हैं और उभयपदमें क्रमसे वच्के अवक्ष्यत् अवक्ष्यत इत्यादि और वह के भी रूप वच्के तुल्य ही होते हैं । ऐसे ही शक्के अशक्ष्यत् इ० और त्यज्के अत्यक्षत् इत्यादि रूप ले जाओ ॥

व्यञ्जनान्त सेट् धातु ॥

आत्मनेपदी सेव्के असेविष्यत इत्यादि; परस्मैपदी पठ्के अपठिष्यत् इत्यादि: गम्के अगमिष्यत् इ० और हन्के अहनिष्यत् इत्यादि रूप होते हैं।

वाक्यरचना ॥

वाक्य ॥

संस्कृत	हिन्दी
यद्यहं तत्र नाभविष्यं चोरः सर्वमहरिष्यत्।	यदि मैंने दिया होता तो तुम पाते। If I had given you then you would have got it
यदि त्वं स्वयमेनमावदिष्यस्तर्हि स्वस्योपमर्दकोऽभविष्यः (अ)।	यदि वह विष खाये होता तो अवश्य मर जाता। It he had taken poison he would then certainly have died
अस्माकं सुहृच्चेदजीविष्यत् अनाथा नाभविष्याम (आ)।	यदि वह पढ़ता तो विद्वान् होता। If he had studied he would have become a learned man.
यदि त्वं स्वजातिं नात्यक्ष्यस्तर्हीदृशमपमानं किमलप्स्यथाः।	यदि तुम मांगते तो पाते। If you had asked you would have obtained it

---

(अ) स्व (आप वा अपना) शब्दके रूप पूर्व शब्दके समान होते हैं। देखो ऋजुव्या० द्वितीय भाग ३६ पाठ में पूर्व शब्द का रूप रचना ॥

(आ) अनद्यतन भविष्यादि छ लकारों में अस् धातुके रूप नहीं होते, परन्तु उनके स्थान में भू धातुके रूप आदेश होते हैं ॥

सप्तविंश पाठ ॥

संज्ञा ॥

ऋकारान्त शब्द ॥

पुं० (दातृ)

	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	दात्रा	दातृभ्याम्	दातृभिः
च०	दात्रे	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
प०	दातुः	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
ष०	दातुः	दात्रोः	दातॄणाम्
सप्त०	दातरि	दात्रोः	दातृषु

ह्रस्व ऋकारान्त पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग शब्दोंके रूप दातृ शब्द के समान होते हैं। केवल नृ शब्दको षष्ठी के बहुवचनमें नृणाम् वा नॄणाम् यों दो रूप होते हैं इतना भेद है ॥

सर्वनाम ॥

(यद्) शब्द

पुं० तथा नपुं०

	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	येन	याभ्याम्	यैः
च०	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
प०	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
ष०	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्त०	यस्मिन्	ययोः	येषु

स्त्री०

	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	यया	याभ्याम्	याभिः
च०	यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
पं०	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
ष०	यस्याः	ययोः	यासाम्
सप्त०	यस्याम्	ययोः	यासु

क्रिया ॥

आशिस् ॥

अनिट् धातु (अ) ॥

स्वरान्त ॥

उभयपदी ॥

(नी)

	परस्मैपद ॥				आत्मनेपद ॥		
	ए०	द्वि०	ब०		ए०	द्वि०	ब०
प्र०	नीयात्	नीयास्तां	नीयासुः	प्र०	नेषीष्ट	नेषीयास्ताम्	नेषीरन्
म०	नीयाः	नीयास्तम्	नीयास्त	म०	नेषीष्ठाः	नेषीयास्थाम्	नेषीढ्वम्
उ०	नीयासं	नीयास्व	नीयास्म	उ०	नेषीय	नेषीवहि	नेषीमहि

ऐसे ही परस्मै० में जि, श्रि इ० के जीयात्, श्रीयात् इत्यादि और भू इ० के भूयात् इत्यादि रूप होते हैं ॥

परस्मैपदमें दा के देयात् इत्यादि और स्था के स्थेयात् इत्यादि रूप होते हैं ॥

पानार्थक पा के पेयात् इत्यादि, पालनार्थक पा के पायात् इत्यादि, परन्तु ज्ञा इ० कई धातुओंके ज्ञायात् और ज्ञेयात् इत्यादि दो २ रूप होते हैं ॥

कृ धातुके परस्मैपदमे क्रियात् इत्यादि, परन्तु स्मृ इत्यादि कई धातुओं के स्मर्यात् इत्यादि रूप होते हैं ॥

आत्मनेपदमें दा इत्यादिके दासीष्ट इत्यादि और कृ इत्यादि के कृषीष्ट इत्यादि रूप होते हैं ॥

(अ) परस्मैपादियो के बीच इस लकार में कोई भी धातु सेट नहीं है ॥

व्यञ्जनान्त धातु ॥

(वप्)

	परस्मै०			आत्मने०		
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	उप्यात्	उप्यास्ताम्	उप्यासुः	वप्सीष्ट	वप्सीयास्ताम्	वप्सीरन्
म०	उप्याः	उप्यास्तम्	उप्यास्त	वप्सीष्ठाः	वप्सीयास्थाम्	वप्सीध्वं
उ०	उप्यासम्	उप्यास्व	उप्यास्म	वप्सीय	वप्सीवहि	वप्सीमहि

परस्मैपद में वच् वद् वस और वह् इत्यादि धातुओं के क्रमसे उच्यात्, उद्यात्, उष्यात्, उह्यात् इत्यादि पृथक् २ रूप होते हैं ॥

परस्मैपदी पठ्के पठ्यात् इत्यादि और लिख्के लिख्यात् इत्यादि रूप होते हैं ॥

सेट्धातु ॥

स्वरान्त ॥

आत्मनेपद में श्रि इत्यादि के श्रयिषीष्ट श्रयिषीयास्ताम् श्रयिषीरन् इत्यादि और पू इत्यादिके पविषीष्ट इत्यादि रूप होते हैं ॥

व्यञ्जनान्त ॥

आत्मनेपदमें सह्के सहिषीष्ट इत्यादि और सेव्के सेविषीष्ट इत्यादि रूप होते हैं ॥

वाक्यरचना ॥

वाक्य ॥

संस्कृत ॥	हिन्दी ॥
सुखं युष्मभ्य (अ) विद्यार्थिभ्यो भूयात् ॥	हे मित्र तुमको सुख हो ॥ O friend, mayest thou obtain happiness
ईशस्त्वाम् पायात् ॥	हे वीर तुम शत्रुओं को जीतो ॥ O hero, mayest thou conquer thine enemies
त्वं सर्वोपरि स्थेयाः ॥	हे विद्वन् दाता तुमको धन देवे ॥ O learned man may the generous man give thee riches
शारदास्माकवदने सन्निधिं क्रियात् ॥	हे आयुष्मन् सौ वर्ष जीओ ॥ O child, mayest thou live a hundred years

---

(अ) सुख हित इत्यादि शब्दों के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है ॥

अष्टाविंश पाठ ॥

संज्ञा ॥

ओकारान्त और औकारान्त शब्द ॥

पुं० वा स्त्री० गो

	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	गवा	गोभ्याम्	गोभिः
च०	गवे	गोभ्याम्	गोभ्यः
पं०	गोः	गोभ्याम्	गोभ्यः
ष०	गोः	गवोः	गवाम्
सप्त०	गवि	गवोः	गोषु

स्त्री० नौ

	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	नावा	नौभ्याम्	नौभिः
च०	नावे	नौभ्याम्	नौभ्यः
पं०	नावः	नौभ्याम्	नौभ्यः
ष०	नावः	नावोः	नावाम्
सप्त०	नावि	नावोः	नौषु

ओकारान्त और औकारान्त शब्दों के रूप गो शब्द और नौ शब्दके समान क्रम से होते हैं।

सर्वनाम ॥

इदम् शब्द ॥

पुं० तथा नपुं०

	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	अनेन, एनेन	आभ्याम्	एभिः
च०	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पं०	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
ष०	अस्य	अनयोः, एनयोः	एषाम्
सप्त०	अस्मिन्	अनयोः, एनयोः	एषु

स्त्री०

	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	अनया, एनया	आभ्याम्	आभिः
च०	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
पं०	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
ष०	अस्याः	अनयोः, एनयोः	आसाम्
सप्त०	अस्याम्	अनयोः, एनयोः	आसु

क्रिया ॥

परोक्षभूत (अ) ॥

स्वरान्त धातु ॥

आकारान्त उभयपदी दा ॥

	परस्मै०			आत्मने०		
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	ददौ	ददतुः	ददुः	ददे	ददाते	ददिरे
म०	ददिथ, ददाथ	ददथु	दद	ददिषे	ददाथे	ददिध्वे
उ०	ददौ	ददिव	ददिम	ददे	ददिवहे	ददिमहे

उभयपदी धा धातुके क्रमसे दधौ इत्यादि और दधे इत्यादि, ज्ञा धातु के जज्ञौ इत्यादि और जज्ञे इत्यादि रूप होते हैं ॥

परस्मै०	स्था	धातुके	तस्थौ	इत्यादि	रूप होते हैं ॥
,,	या	,,	ययौ		,,
,,	भा	,,	बभौ		,,
,,	घ्रा	,,	जघ्रौ		,,
,,	ध्मा	,,	दध्मौ		,,
,,	ध्या	,,	दध्यौ		,,
,,	गै	,,	जगौ		,,

(अ) जो क्रिया बोलने के समय से आठ प्रहर पूर्व हो चुकी हो और वक्ताके प्रत्यक्ष नहीं हुई हो, उसका प्रयोग परोक्षभूत लकार में किया जाता है ॥

इकारान्त उभयपदी श्रि

परस्मै०				आत्मने०			
	ए०	द्वि०	ब०		ए०	द्वि०	ब०
प्र०	शिश्राय	शिश्रियतुः	शिश्रियुः	प्र०	शिश्रिये	शिश्रियाते	शिश्रियि
म०	शिश्रयिथ	शिश्रियथुः	शिश्रिय	म०	शिश्रियिषे	शिश्रियाथे	शिश्रियि, शिश्रियिद्
उ०	शिश्राय, शिश्रय	शिश्रियिव	शिश्रियिम	उ०	शिश्रिये	शिश्रियिवहे	शिश्रियिम.

ईकारान्त उभयपदी नी

परस्मै०				आत्मने०			
	ए०	द्वि०	ब०		ए०	द्वि०	ब०
प्र०	निनाय	निन्यतुः	निन्युः	प्र०	निन्ये	निन्याते	निन्यिरे
म०	निनयिथ, निनेथ	निन्यथुः	निन्य	म०	निन्यिषे	निन्याथे	निन्यिध्वे, निन्यिढ्वे
उ०	निनाय, निनय	निन्यिव	निन्यिम	उ०	निन्ये	निन्यिवहे	निन्यिमहे

परस्मैपदी जिके जिगाय जिग्यतुः इत्यादि; और आत्मनेपदी स्मि धातुके सिष्मिये इत्यादि; तथा शीके शिश्ये इत्यादि; और उभयपदी क्रीके क्रमसे चिक्राय और चिक्रिये इत्यादि रूप होते हैं ॥

ह्रस्व उकारान्त परस्मै० श्रु

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	शुश्राव	शुश्रुवतुः	शुश्रुवुः
म०	शुश्रोथ	शुश्रुवथुः	शुश्रुव
उ०	शुश्राव, शुश्रव	शुश्रुव	शुश्रुम

परस्मै०

ऊकारान्त भू

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	बभूव	बभूवतुः	बभूवुः
म०	बभूविथ	बभूवथुः	बभूव
उ०	बभूव	बभूविव	बभूविम

ऋकारान्त तृ

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	ततार	तेरतुः	तेरुः
म०	तेरिथ	तेरथुः	तेर
उ०	ततार, ततर	तेरिव	तेरिम

उभयपदी

कृ

परस्मै०

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	चकार	चक्रतुः	चक्रुः
म०	चकर्थ	चक्रथुः	चक्र
उ०	चकार, चकर	चकृव	चकृम

आत्मने०

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	चक्रे	चक्राते	चक्रिरे
म०	चकृषे	चक्राथे	चकृढ्वे
उ०	चक्रे	चकृवहे	चकृमहे

परस्मै० सृ के ससार सस्रतुः इत्यादि रूप होते हैं ॥

उभय० हृके परस्मै०में जहार जह्रतुः इत्यादि और आत्मनेपद में जह्रे जह्राते इत्यादि रूप क्रमसे होते हैं। परन्तु परस्मै० और आत्म०के उ० पु० के द्वि० और ब० व० में क्रमसे जह्रिव, जह्रिम; जह्रिवहे और जह्रिमहे ये रूप होते हैं। और आत्मने० के म० पु० ए० व०में जह्रिषे ऐसा रूप होता है ॥

ऊनत्रिंश पाठ ॥

संज्ञा ॥

चकारान्त शब्द ॥

स्त्री० त्वच् ॥

	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	त्वचा	त्वग्भ्याम्	त्वग्भिः
च०	त्वचे	त्वग्भ्याम्	त्वग्भ्य·
पं०	त्वचः (अ)	त्वग्भ्याम्	त्वग्भ्यः
ष०	त्वचः	त्वचोः	त्वचाम्
सप्त०	त्वचि	त्वचोः	त्वक्षु

प्रायः चकारान्त पुं० नपुं० वा स्त्री० शब्दों के रूप त्वच शब्द के समान होते हैं ॥

जकारान्त शब्द ॥

पुं० वणिज्

	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	वणिजा	वणिग्भ्याम्	वणिग्भिः
च०	वणिजे	वणिग्भ्याम्	वणिग्भ्यः
पं०	वणिजः	वणिग्भ्याम्	वणिग्भ्यः
ष०	वणिजः	वणिजोः	वणिजाम्
सप्त०	वणिजि	वणिजोः	वणिक्षु

पुं० सम्राज्

	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	सम्राजा	सम्राड्भ्याम्	सम्राड्भिः
च०	सम्राजे	सम्राड्भ्याम्	सम्राड्भ्यः
पं०	सम्राजः	सम्राड्भ्याम्	सम्राड्भ्यः
ष०	सम्राजः	सम्राजोः	सम्राजाम्
सप्त०	सम्राजि	सम्राजोः	सम्राट्सु

(अ) व्यञ्जनान्त शब्दों के रूप प्रथ० द्विती० के ब० व० मे और प० ष० के ए० व० मे बहुधा समान होते परन्तु कहीं २ भेद भी होता है ॥

जकारान्त पुं० नपुं० वा स्त्रीलिङ्ग शब्दोंके रूप वणिज् शब्दके समान होते हैं। सम्राज् शब्दके रूपोंमें जो भेद होता है सो दिखा दिया। परिव्राज् इत्यादि शब्दोंके रूप सम्राज्के समान होते हैं ॥

क्रिया ॥

परोक्षभूत ॥

व्यञ्जनान्त धातु ॥

वप्

	परस्मै०				आत्मने०		
	ए०	द्वि०	ब०		ए०	द्वि०	ब०
प्र०	उवाप	ऊपतुः	ऊपुः	प्र०	ऊपे	ऊपाते	ऊपिरे
म०	उवपिथ, उवप्थ	ऊपथुः	ऊप	म०	ऊपिषे	ऊपाथे	ऊपिध्वे
उ०	उवाप, उवप	ऊपिव	ऊपिम	उ०	ऊपे	ऊपिवहे	ऊपिमहे

ऐसे ही उभय० वच्के परस्मै० में उवाच ऊचतुः इत्यादि, मध्यमपुरुष एकवचनमें उवचिथ वा उवक्थ। आत्मनेपद में ऊचे ऊचाते ऊचिरे इत्यादि ॥ परस्मै० वस् के उवास ऊषतुः इत्यादि। मध्यम पु० ए० व० में उवसिथ वा उवस्थ ॥ उभय० वह के परस्मै० में उवाह ऊहतुः इत्यादि। मध्यम पु० ए० व० में उवहिथ वा उवोढ। आत्मनेपदमें ऊहे ऊहाते इत्यादि ॥ परस्मै० वद् के उवाद ऊदतुः इत्यादि रूप होते हैं। मध्यम पु० ए० व० में केवल उवदिथ ऐसा एकही रूप होता है ॥

पच्

	परस्मै०			आत्मने०		
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	पपाच	पेचतुः	पेचुः	पेचे	पेचाते	पेचिरे
म०	पेचिथ, पपक्थ	पेचथुः	पेच	पेचिषे	पेचाथे	पेचिध्वे
उ०	पपाच, पपच	पेचिव	पेचिम	पेचे	पेचिवहे	पेचिमहे

ऐसे ही परस्मै० में शक् के शशाक शेकतुः इत्यादि । मध्यम पु० के ए० व० में शेकिथ वा शशक्थ ॥ दह् के ददाह देहतुः इत्यादि । मध्यम पु० ए० व० में देहिथ वा ददग्ध ॥ पत् के पपात पेततुः इत्यादि । मध्यम पु० ए० व० में पेतिथ ॥ नश् के ननाश नेशतुः इत्यादि । मध्यम पु० ए० व० में नेशिथ वा ननंष्ठ रूप होते हैं ॥ चर् चचार चेरतुः इत्यादि । मध्यम पु० ए० व० में चेरिथ । ऐसे ही पठ् इत्यादि के पपाठ पेठतुः इ० म० पु० ए० व० पेठिथ रूप ले जाओ ॥

आत्मनेपदी रम् के रेमे रेमाते इत्यादि । ऐसेही मन् के मेने मेनाते इत्यादि । सह् के सेहे सेहाते इत्यादि । और लभ् इ० के लेभे लेभाते इत्यादि रूप होते हैं ॥

उभयप० तन् के ततान तेनतुः इत्यादि । मध्यम पु० ए० व० में तेनिथ । और आत्मनेपद में तेने तेनाते इत्यादि रूप क्रमसे ले जाओ ॥

परस्मैपदी

	(गम्)			(हस्)		
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	जगाम	जग्मतुः	जग्मुः	जहास	जहसतुः	जहसुः
म०	जगमिथ, जगन्थ	जग्मथुः	जग्म	जहसिथ	जहसथुः	जहस
उ०	जगाम, जगम	जग्मिव	जग्मिम	जहास, जहस	जहसिव	जहसिम

हन् के जघान जघ्नतुः इत्यादि। मध्यम पुरुष एकवचन में जघनिथ वा जघन्थ॥ गद् के जगाद जगदतुः इत्यादि। मध्यमपुरुष एकवचन में जगदिथ। त्यज् के तत्याज तत्यजतुः इत्यादि। मध्यमपुरुष एकवचन में तत्यजिथ वा तत्यक्थ॥

(ग्रह्)

	परस्मैपदी			आत्मनेपदी		
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	जग्राह	जगृहतुः	जगृहुः	जगृहे	जगृहाते	जगृहिरे
म०	जग्रहिथ	जगृहथुः	जगृह	जगृहिषे	जगृहाथे	जगृहिध्वे, जगृहिढ्वे
उ०	जग्राह, जग्रह	जगृहिव	जगृहिम	जगृहे	जगृहिवहे	जगृहिमहे

ऐसेही वृत् के ववृते इ० रूप ले जाओ। मध्यमपुरुष बहुवचन में केवल ववृतिध्वे॥

भिद्

	परस्मैपदी ॥			आत्मनेपदी ॥	
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	बिभेद	बिभिदतुः	बिभिदुः	प्र० बिभिदे	बिभिदाते	बिभिदिरे
म०	बिभेदिथ	बिभिदथुः	बिभिद	म० बिभिदिषे	बिभिदाथे	बिभिदिध्वे
उ०	बिभेद	बिभिदिव	बिभिदिम	उ० बिभिदे	बिभिदिवहे	बिभिदिमहे

उभय० छिद् इत्यादिके चिच्छेद चिच्छिदतुः इत्यादि और चिच्छिदे इत्यादि; क्षिप् इत्यादिके चिक्षेप, चिक्षिपतुः इत्यादि और चिक्षिपे इ०; दिश् इत्यादि के दिदेश इत्यादि और दिदिशे इत्यादि क्रमसे रूप होते हैं तथा परस्मैपदी विश्के विवेश इत्यादि रूप ले आओ ॥

परस्मैपदी ॥

	दृश्			सृज्		
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	ददर्श	ददृशतुः	ददृशुः	प्र० ससर्ज	ससृजतुः	ससृजुः
म०	ददर्शिथ, दद्रष्ठ	ददृशथुः	ददृश	म० ससर्जिथ, सस्रष्ठ	ससृजथुः	ससृज
उ०	ददर्श	ददृशिव	ददृशिम	उ० ससर्ज	ससृजिव	ससृजिम

कृष् इत्यादिके चकर्ष, चकृषतुः इत्यादि मध्यमपुरुष एकवचन चकर्षिथ। हृष् इत्यादि के जहर्ष इ०। म० पु० ए० व० जहर्षिथ। स्पृश् इत्यादिके पस्पर्श, पस्पृशतुः इ०। म० पु० ए० व० पस्पर्शिथ।

त्रिंश पाठ॥

संज्ञा॥

तकारान्त शब्द ॥

स्त्री० सरित् ॥

	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	सरिता	सरिद्भ्याम्	सरिद्भिः
च०	सरिते	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्यः
पं०	सरितः	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्यः
ष०	सरितः	सरितोः	सरिताम्
सप्त०	सरिति	सरितोः	सरित्सु

ऐसेही सब तकारान्त शब्दोंके रूप होते हैं ॥

दकारान्त शब्द ॥

पुं० सुहृद्

	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	सुहृदा	सुहृद्भ्याम्	सुहृद्भिः
च०	सुहृदे	सुहृद्भ्याम्	सुहृद्भ्यः
पं०	सुहृदः	सुहृद्भ्याम्	सुहृद्भ्यः
ष०	सुहृदः	सुहृदोः	सुहृदाम्
सप्त०	सुहृदि	सुहृदोः	सुहृत्सु

ऐसेही सब दकारान्त शब्दोंके रूप होते हैं

धकारान्त शब्द ॥

स्त्री० क्षुध् ॥

	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	क्षुधा	क्षुद्भ्याम्	क्षुद्भिः
च०	क्षुधे	क्षुद्भ्याम्	क्षुद्भ्यः
पं०	क्षुधः	क्षुद्भ्याम्	क्षुद्भ्यः
ष०	क्षुधः	क्षुधोः	क्षुधाम्
सप्त०	क्षुधि	क्षुधोः	क्षुत्सु

ऐसे ही सब धकारान्त शब्दों के रूप होते हैं ॥

क्रिया ॥

परोक्षभूत ॥

चुर्

परस्मैपद ॥

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	चोरयाञ्चकार	चोरयाञ्चक्रतुः	चोरयाञ्चक्रुः
म०	चोरयाञ्चकर्थ	चोरयाञ्चक्रथुः	चोरयाञ्चक्र
उ०	चोरयाञ्चकार, चोरयाञ्चकर	चोरयाञ्चकृव	चोरयाञ्चकृम

आत्मनेपद ॥

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	चोरयाञ्चक्रे	चोरयाञ्चक्राते	चोरयाञ्चक्रिरे
म०	चोरयाञ्चकृषे	चोरयाञ्चक्राथे	चोरयाञ्चकृढ्वे
उ०	चोरयाञ्चक्रे	चोरयाञ्चकृवहे	चोरयाञ्चकृमहे

चुरादिके सब धातुओंके और शेष नव गणोंके उन धातुओंके जिनमें एकसे अधिक स्वर पाये जावें और अय् (गत्यर्थक आत्मनेपदी भ्वादि) आस् (आत्म० अदादि) आदि कुछ धातुओ के रूप परोक्षभूत में चुर् के समान होते हैं। परस्मैपदी धातु हो तो परस्मैपदके समान, और आत्मनेपदी धातु हो तो आत्मनेपद के समान, और उभयपदी धातु हो तो दोनों पदों के समान रूप होते हैं। यथा—चुरादिगणीय कथ् धातु के रूप कथयाञ्चकार इत्यादि ॥

अदादिगणीय परस्मै० चकास् (चमकना) के चकासाञ्चकार इत्यादि, और आस् के आसाञ्चक्रे इत्यादि रूप होते हैं ॥

ऊपर दिखाये रूपों से अतिरिक्त चुर् धातुके और भी दो २ रूप होते हैं। यथा—

परस्मैपद ॥

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	चोरयाम्बभूव	चोरयाम्बभूवतुः	चोरयाम्बभूवुः
म०	चोरयाम्बभूविथ	चोरयाम्बभूवथुः	चोरयाम्बभूव
उ०	चोरयाम्बभूव	चोरयाम्बभूविव	चोरयाम्बभूविम

परस्मैपद ॥

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	चोरयामास	चोरयामासतुः	चोरयामासुः
म०	चोरयामासिथ	चोरयामासथुः	चोरयामास
उ०	चोरयामास	चोरयामासिव	चोरयामासिम

ऐसेही चुरादिके सब धातुओं के और शेष नव गणोंके उन धातुओं के जिनमें एकसे अधिक स्वर पाये जावें और अय् आस् आदि कुछ धातुओं के रूप भी परोक्षभूत में ऊपर दिखाये चुर् धातुके रूपोंके समान होते हैं । यथा—कथयाम्बभूव, कथयामास इत्यादि । और चकासाम्बभूव, चकासामास इत्यादि । आसाम्बभूव, आसामास इत्यादि । धातु चाहे किसी पदका क्यों न हो परन्तु बभूव व आस वाले रूप नित्य परस्मैपद ही में होंगे ॥

वाक्यरचना ॥

अव्यय-प्रसह्य (वलात्कारसे), ह (प्रसिद्धिबोधक)

वाक्य ॥

संस्कृत	हिन्दी
चिक्रीडु र्बालकास्तत्र ननृतुर्जहसुश्च ते ॥	उन्होंने उसके आनेका प्रयोजन पूछा ॥ He asked him the object of his visit
फलानि पेतुर्वृक्षेभ्यो (अ) जगृहुस्तानि बालकाः मोदकान् सा ददौ तस्मै भक्ष्यांश्च विविधाञ्छुभान् ॥	कुरुक्षेत्रके युद्धमें पाण्डवोंने जीता। The Pandavas gained the victory in the war of Kurukshetra.
ऊचतुस्तौ महात्मानं विश्वामित्रमिदं वचः ॥ शय्यायां स शिशुः शिश्ये ॥	अगस्त्यने सर्व वृतान्त कहा और मुनियोंने सुना ॥ Agastya related the whole story and the Munis listened to it.
आगते च ततो विप्रे देवः साधो ववर्ष ह ॥ वाल्मीकिः पूजयामास नारदं ब्रह्मणः सुतम् ॥	उन दोनोंने आपस में परामर्श किया। उनमें से एक बोला ॥
नागाञ्जिगाय गरुड़ो भक्षयामास तांस्ततः ॥ स चिरं चिन्तयामास शोकेन व्याकुलस्तदा ॥	The two persons counselled among themselves And one of them spoke

(अ) जिसे सकाश (समीप) से विभाग होता है उसको अपादान कहते है। अपादान अर्थ मे पञ्चमी विभक्ति लगती है ॥

वाक्यरचना ॥

वाक्य ॥

संस्कृत	हिन्दी
ते मिथो मन्त्रयाञ्चक्रिरे भ्रातरः पञ्च पाण्डवाः ॥ इमं श्लोकं जगुः शिष्याः शुश्रुवुश्च महर्षयः (सं) (३६) ॥ शशंस सर्वमादित्य शर्म्मा स शिवशर्म्मणे (अ) ॥ गिरा संस्कृतया राजा प्रश्नं पप्रच्छ पण्डितम् (आ) ॥ प्रसह्य सिंहः किल गाञ्चकर्ष ॥	ह्रदमें मगरने हाथी के पैरको पकड़ा और उसे खींचा ॥ The alligator seized the elephant by his leg and drew him into the lake सीताने मृगको देखा और राम-से कहा, इसे पकड़ो और मुझे दो ॥ Sita saw the deer and said to Rama "catch it and present it to me"

(स) (३६) अ वा आ के अनन्तर यदि ऋ आवे तो दोनों मिलके अर् हो जाता है। यथा देव+ऋषि =देवर्षि., महा+ऋषि =महर्षि. ॥

(अ) जिस उद्देश्यसे वा जिसके उद्देश्यसे क्रिया किई जावे वह चतुर्थी विभक्ति लेता है ॥

(आ) प्रच्छ इत्यादि धातुओं के दो २ कर्म्म होत हैं। इस वाक्य मे प्रश्न और पण्डित दोनों पप्रच्छ के कर्म्म है ॥

एकत्रिंश पाठ ॥

संज्ञा ॥

नकारान्त शब्द ॥

पुं० राजन्

	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
च०	राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्यः
पं०	राज्ञः	राजभ्याम्	राजभ्यः
ष०	राज्ञः	राज्ञोः	राज्ञाम्
सप्त०	राजनि, राज्ञि	राज्ञोः	राजसु

पुं० आत्मन्

	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः
च०	आत्मने	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
पं०	आत्मनः	आत्मभ्याम्	आत्मभ्य·
ष०	आत्मनः	आत्मनोः	आत्मनाम्
सप्त०	आत्मनि	आत्मनोः	आत्मसु

पुं० युवन्

	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	यूना	युवभ्याम्	युवभिः
च०	यूने	युवभ्याम्	युवभ्यः
पं०	यूनः	युवभ्याम्	युवभ्यः
ष०	यूनः	यूनोः	यूनाम्
सप्त०	यूनि	यूनोः	युवसु

पुं० श्वन्

	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	शुना	श्वभ्याम्	श्वभिः
च०	शुने	श्वभ्याम्	श्वभ्यः
पं०	शुनः	श्वभ्याम्	श्वभ्यः
ष०	शुनः	शुनोः	शुनाम्
सप्त०	शुनि	शुनो	श्वसु

पुं० स्वामिन्				पुं पथिन्		
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	स्वामिना	स्वामिभ्यां	स्वामिभि.	तृ० पथा	पथिभ्यां	पथिभिः
च०	स्वामिने	स्वामिभ्यां	स्वामिभ्यः	च० पथे	पथिभ्यां	पथिभ्यः
पं०	स्वामिन	स्वामिभ्यां	स्वामिभ्यः	पं० पथः	पथिभ्यां	पथिभ्यः
ष०	स्वामिनः	स्वामिनोः	स्वामिनाम्	ष० पथः	पथोः	पथाम्
सप्त०	स्वामिनि	स्वामिनोः	स्वामिषु	सप्त० पथि	पथोः	पथिषु

नकारान्त पुल्लिङ्ग वा नपुंसक शब्द जिनके अन्त में इन् हो उनके रूप स्वामिन् शब्दके समान होते हैं । पथिन् शब्दके रूपोंमें जो भेद होता है सो ऊपर दिखा दिया ॥

नकारान्त पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग वा नपुंसकलिङ्गमें जो शब्द राजन् शब्दके गणके हैं उनके राजन् के समान और जो आत्मन् शब्दके गणके हैं उनके आत्मन्के समान रूप होते हैं ॥

नपुं० अहन्

	ए०	द्वि०	ब०
तृतीया	अह्ना	अहोभ्याम्	अहोभिः
चतुर्थी	अह्ने	अहोभ्याम्	अहोभ्यः
पञ्चमी	अह्नः	अहोभ्याम्	अहोभ्यः
षष्ठी	अह्नः	अह्नोः	अह्नाम्
सप्तमी	अह्नि, वा अहनि	अह्नोः	अहःसु, वा अहस्सु

क्रिया ॥

सामान्यभूत (अ)

स्वरान्त धातु ॥

दा

	परस्मै०			आत्मने०		
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	अदात्	अदाताम्	अदुः	अदित	अदिषाताम्	अदिषत
म०	अदाः	अदातम्	अदात	अदिथाः	अदिषाथाम्	अदिढ्वम्
उ०	अदाम्	अदाव	अदाम	अदिषि	अदिष्वहि	अदिष्महि

ऐसे ही धा के अधात् इत्यादि और अधित इत्यादि रूप क्रम से होते हैं ॥ पानार्थक पा और स्था इनके रूप क्रम से अपात् इत्यादि और अस्थात् इत्यादि परस्मै० में होते हैं ॥

ज्ञा

	परस्मै०			आत्मने०		
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	अज्ञासीत्	अज्ञासिष्टाम्	अज्ञासिषुः	अज्ञास्त	अज्ञासाताम्	अज्ञासत
म०	अज्ञासीः	अज्ञासिष्टम्	अज्ञासिष्ट	अज्ञास्थाः	अज्ञासाथाम्	अज्ञाध्वम्
उ०	अज्ञासिषम्	अज्ञासिष्व	अज्ञासिष्म	अज्ञासि	अज्ञास्वहि	अज्ञास्महि

(अ) सामान्यभूत लकारमे भी अनद्यतनभूत लकार की भांति धातुके पूर्व अकार लगता है तथा धातुके आदि मे स्थित इ, ई, वा ए के स्थानमे ऐ और उ, ऊ, वा ओ के स्थान मे औ आदेश होता है । परन्तु निषेध वाचक "मा" अव्यय के साथ सामान्यभूत लकारका प्रयोग जब होता है तब इस नियम मे उक्त बातो मे से एक बात भी नही होती है । देखो ऋ० व्या० २ भाग अङ्क ५२ पृ० (अ) से अङ्कित वाक्य ॥

घ्राके रूप क्रमसे एक बार दाके समान अघ्रात् इत्यादि, और दूसरी बार ज्ञाके समान अघ्रासीत् इत्यादि होते हैं। शेष आकारान्त धातुओंके रूप ज्ञाके समान होते हैं ॥

गैके अगासीत् इत्यादि ज्ञाके ही समान होते हैं। ध्यैके रूप अध्यासीत् इ० ले जाओ ॥

नी

	परस्मै०			आत्मने०		
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	अनैषीत्	अनैष्टाम्	अनैषुः	अनेष्ट	अनेषाताम्	अनेषत
म०	अनैषीः	अनैष्टम्	अनैष्ट	अनेष्ठाः	अनेषाथाम्	अनेढ्वम्
उ०	अनैषम्	अनैष्व	अनैष्म	अनेषि	अनेष्वहि	अनेष्महि

ऐसे ही जि इत्यादि और भी (डरना) इत्यादि के परस्मैपद में और चि इत्यादि तथा क्री इत्यादि के उभयपदमे आपसे बनाके क्रमसे रूप ले जाओ ॥

परस्मै०

	श्रु			भू		
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	अश्रौषीत्	अश्रौष्टाम्	अश्रौषुः	अभूत्	अभूताम्	अभूवन्
म०	अश्रौषीः	अश्रौष्टम्	अश्रौष्ट	अभूः	अभूतम्	अभूत
उ०	अश्रौषम्	अश्रौष्व	अश्रौष्म	अभूवम्	अभूव	अभूम

पू

	परस्मै०			आत्मने०	
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	अपावीत्	अपाविष्टाम्	अपाविषुः	अपविष्ट	अपविषाताम्	अपविषत
म०	अपावीः	अपाविष्टम्	अपाविष्ट	अपविष्ठाः	अपविषाथाम्	अपविध्वम् / अपविढ्वम्
उ०	अपाविषम्	अपाविष्व	अपाविष्म	अपविषि	अपविष्वहि	अपविष्महि

कृ

	परस्मैपदी			आत्मनेपदी		
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	अकार्षीत्	अकार्ष्टाम्	अकार्षुः	अकृत	अकृषाताम्	अकृषत
म०	अकार्षीः	अकार्ष्टम्	अकार्ष्ट	अकृथाः	अकृषाथाम्	अकृढ्वम्
उ०	अकार्षम्	अकार्ष्व	अकार्ष्म	अकृषि	अकृष्वहि	अकृष्महि

ऋकारान्त धातुओंके ऐसे ही रूप ले जाओ। परन्तु वृ के परस्मैपदमें अवारीत् अवारिष्टाम् इत्यादि रूप होते हैं ॥

दीर्घ ॠकारान्त तॄ इत्यादिके अतारीत्, अतारिष्टाम् इत्यादि रूप होते हैं ॥

द्वात्रिंश पाठ ॥

संज्ञा ॥

पकारान्त शब्द ॥ स्त्री अप् ॥

	ब० व०
तृ०	अद्भिः
च०	अद्भ्यः
पं०	अद्भ्यः
ष०	अपाम्
सप्त०	अप्सु

रेफान्त शब्द ॥

स्त्री० गिर्

	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	गिरा	गीर्भ्याम्	गीर्भिः
च०	गिरे	गीर्भ्याम्	गीर्भ्यः
पं०	गिरः	गीर्भ्याम्	गीर्भ्यः
ष०	गिरः	गिरोः	गिराम्
सप्त०	गिरि	गिरोः	गीर्षु

स्त्री० पुर्

	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	पुरा	पूर्भ्याम्	पूर्भिः
च०	पुरे	पूर्भ्याम्	पूर्भ्यः
पं०	पुरः	पूर्भ्याम्	पूर्भ्यः
ष०	पुरः	पुरोः	पुराम्
सप्त०	पुरि	पुरोः	पूर्षु

स्त्री० द्वार्

	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	द्वारा	द्वार्भ्याम्	द्वार्भिः
च०	द्वारे	द्वार्भ्याम्	द्वार्भ्यः
पं०	द्वारः	द्वार्भ्याम्	द्वार्भ्यः
ष०	द्वारः	द्वारोः	द्वाराम्
सप्त०	द्वारि	द्वारोः	द्वार्षु

वकारान्तशब्द ॥

स्त्री० दिव्

	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	दिवा	द्युभ्याम्	द्युभिः
च०	दिवे	द्युभ्याम्	द्युभ्यः
पं०	दिवः	द्युभ्याम्	द्युभ्यः
ष०	दिवः	दिवोः	दिवाम्
सप्त०	दिवि	दिवोः	द्युषु

क्रिया ॥

सामान्यभूत ॥

व्यञ्जनान्त ॥

वप्

	परस्मै०			आत्मने०		
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	अवाप्सीत्	अवाप्ताम्	अवाप्सुः	अवप्त	अवप्साताम्	अवप्सत
म०	अवाप्सीः	अवाप्तम्	अवाप्त	अवप्थाः	अवप्साथाम्	अवब्ध्वम्
उ०	अवाप्सम्	अवाप्स्व	अवाप्स्म	अवप्सि	अवप्स्वहि	अवप्स्महि

आत्मने० में लभ् के प्र० पु० ए० में अलब्ध और म० पु० ए० में अलब्धाः रूप होता है। शेष अलप्सातां इत्यादि रूप वप् के समान होते हैं ॥

परस्मै०

	वद्			हन् (बध्)		
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	अवादीत्	अवादिष्टाम्	अवादिषुः	अबधीत्	अबधिष्टाम्	अबधिषुः
म०	अवादी	अवादिष्टम्	अवादिष्ट	अबधी	अबधिष्टम्	अबधिष्ट
उ०	अवादिषम्	अवादिष्व	अवादिष्म	अबधिषम्	अबधिष्व	अबधिष्म

व्रज् के और चर् इत्यादि रेफान्त और चल् इत्यादि लकारान्त धातुओं के रूप वद् धातु के समान होते हैं ॥

क्रम् इत्यादि मकारान्त और हस्, श्वस् तथा रक्ष् इत्यादि धातुओं के रूप बध् के समान होते हैं ॥

सह् के असहिष्ट इत्यादि; सेव् के असेविष्ट इत्यादि, मुद् के अमोदिष्ट इत्यादि रूप अपविष्ट इत्यादि के समान लेजाओ। नश्, शक्, गम्, श्रम्, और आप् इ० कई धातुओ के रूप पठ् धातु के अनद्यतनभूत के समान होते है। यथा अनशत् इ०, अगमत् इत्यादि। पद् का प्र० पु० ए० अपादि; शेष रूप अपत्साताम् इत्यादि। जन् का प्र० पु० ए० अजनि वा अजनिष्ट; शेष रूप अजनिषाताम् इत्यादि ॥

त्रयस्त्रिंश पाठ ॥

संज्ञा ॥

शकारान्त शब्द

पुं० नपुं० वा स्त्री० तादृश्

	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	तादृशा	तादृग्भ्याम्	तादृग्भिः
च०	तादृशे	तादृग्भ्याम्	तादृग्भ्यः
प०	तादृशः	तादृग्भ्याम्	तादृग्भ्यः
ष०	तादृशः	तादृशोः	तादृशाम्
सप्त०	तादृशि	तादृशोः	तादृक्षु

तालव्य शकारान्त शब्दों के रूप तादृश् शब्द के समान होते हैं ॥

षकारान्त शब्द ॥

पुं० द्विष्

	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	द्विषा	द्विड्भ्याम्	द्विड्भिः
च०	द्विषे	द्विड्भ्याम्	द्विड्भ्यः
पं०	द्विषः	द्विड्भ्याम्	द्विड्भ्यः
ष०	द्विषः	द्विषोः	द्विषाम्
सप्त०	द्विषि	द्विषोः	द्विट्सु

प्रायः मूर्द्धन्य षकारान्त शब्दों के रूप द्विष् शब्द के समान होते हैं ॥

क्रिया ॥

सामान्यभूत ॥

चुरादिगणीय धातु ॥

उभय०

रच्

	परस्मै०			आत्मने०		
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	अररचत्	अररचताम्	अररचन्	अररचत	अररचेताम्	अररचन्त
म०	अररचः	अररचतम्	अररचत	अररचथाः	अररचेथाम्	अररचध्वम्
उ०	अररचम्	अररचाव	अररचाम	अररचे	अररचावहि	अररचामहि

मन्त्र्

आत्मने०

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	अममन्त्रत	अममन्त्रेताम्	अममन्त्रन्त
म०	अममन्त्रथाः	अममन्त्रेथाम्	अममन्त्रध्वम्
उ०	अममन्त्रे	अममन्त्रावहि	अममन्त्रामहि

ऐसे ही परस्मै० कथ्के अचकथत् इत्यादि; आत्मनेपदी वञ्च्के अववञ्चत इ०; भर्त्स् के अबभर्त्सत इत्यादि; उभयपदी चुर्के क्रमसे अचूचुरत् और अचूचुरत इत्यादि; और परस्मै० गण्के अजगणत् इत्यादि वा अजीगणत् इत्यादि रूप होते हैं ॥

वाक्यरचना ॥

अव्यय—पुरा (प्राचीनकालमें)

वाक्य

संस्कृत ॥	हिन्दी ॥
अहं भैरवमाकारमकार्षम् ॥ औदत्तं तस्य सुहृदः स्वदेशस्य राजानमकार्षुः ॥ मास्माकमन्तिके स्थाः (अ) ॥ ते नगराद् बहि (आ) रावासमरचन् ॥ तानि फलानि सर्वेभ्योऽरोचिषत (इ) ॥	जब राम सीता और लक्ष्मण के साथ वनको गयेथे तब अयोध्याके लोग उनके पीछे (ई) चलेथे ॥ When *Rama* with *Sita* and *Lakshmana*, went to the forest the people of *Ayodhya* followed him

(अ) देखो ऋजुव्या० द्वि० भाग ४४ पृ० का (अ) से अङ्कित नियम । मा अस्था ऐसा रूप नहीं हुआ किन्तु मा स्था ऐसा रूप हुआ ॥ माके लगाने से सामान्यभूत का अर्थ नहीं होता किन्तु आज्ञा वा विधिका अर्थ होता है ॥

(आ) अन्यशब्द के अर्थवाले जितने शब्द है और ऋते (बिना) आरात् (दूर वा समीप पृथक् २ दोनो अर्थ) बहिः इत्यादि शब्दोंके प्रयोग मे पञ्चमी विभक्ति लगती है ॥

(इ) रुच् धातु के अर्थवाले जितने धातु है उनके प्रयोग मे जिसको रुचे उसके वाचक सज्ञा शब्द के उत्तर चतुर्थी बिभक्ति होती है ॥

(ई) अनु (पीछे), अभि (सम्मुख) , उप (समीप), प्रति (निकट), परितः (चारो ओर), अभितः (उभय पार्श्व) , धिक् (धिक्कार), इनके योग मे सज्ञा शब्द के उत्तर द्वितीया विभक्ति होती है ॥

वाक्य

संस्कृत ॥

महासत्त्व मा मां बधीः । मयि कृपां कुरु ॥

स तेषां नामानि नाज्ञासीत् ॥

अपाम सोमममृता अभूम ॥

यथाहमकृषि तथा त्वमकृथाः ॥

राजा तस्मिन्नुद्याने त्रीणि दिनानि अस्थात् (अ) ॥

अगमंस्ते पथा तेन कपयो दक्षिणां दिशम् ॥

अभूत् प्रकृत्या (आ) मधुरो रामो गुणवतां (इ) वरः ॥

अदाद् द्विजाय तत् सर्वं वित्तं राजा रघुर्महान् ॥

हिन्दी ॥

प्राचीन काल में देव और दानवों में बड़ी लड़ाई हुई थी ॥

In times of yore there was a great war between the *Devas* and *Danavas*

एक भिक्षु जो आंख का काना (ई) था अपने लँगड़े मित्र के साथ नगर के बाहिर चला ॥

A beggar blind of one eye went out of town with his lame friend

---

(अ) अत्यन्त (निरन्तर) सम्बन्ध बतलाने के लिये कालवाचक अथवा मार्गवाचक शब्द के अनन्तर द्वितीया विभक्ति लगती है ॥

(आ) प्रकृति इ० शब्दो और सह तथा तुल्य इन अर्थोंके वाचक शब्दोंके योगमे तृतीया विभक्ति लगती है ॥

(इ) समान प्रकार की वस्तुओं के समुदाय में से किसी विशेषता के कारण कुछ व्यक्तियों को पृथक् करना निर्धारण कहलाता है । जिनके समुदाय मे से पृथक् किया जाता है उनके अनन्तर षष्ठी वा सप्तमी विभक्ति लगाई जाती है, यथा—रामो गुणवतां वर , कविषु कालिदास श्रेष्ठ इ० ॥

(ई) जिस किसी अङ्गके दोष हो जाने से अङ्ग बिगड जाता है उस अङ्गके वाचक शब्द के उत्तर तृतीया विभक्ति लगती है यथा—अक्ष्णा काण , पादेन खञ्ज इत्यादि ॥

चतुस्त्रिंश पाठ ॥

संज्ञा ॥

सकारान्त शब्द ॥

पुं० चन्द्रमस्

	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	चन्द्रमसा	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभिः
च०	चन्द्रमसे	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः
पं०	चन्द्रमसः	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः
ष०	चन्द्रमसः	चन्द्रमसोः	चन्द्रमसाम्
सप्त०	चन्द्रमसि	चन्द्रमसोः	चन्द्रमःसु वा चन्द्रमस्सु

पुं० विद्वस्

	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
च०	विदुषे	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
पं०	विदुषः	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
ष०	विदुषः	विदुषोः	विदुषाम्
सप्त०	विदुषि	विदुषोः	विद्वत्सु

पुं० पुम्स्

	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	पुंसा	पुंभ्याम् / पुम्भ्याम्	पुंभिः / पुम्भिः
च०	पुंसे	पुंभ्याम् / पुम्भ्याम्	पुंभ्यः / पुम्भ्यः
पं०	पुंसः	पुंभ्याम् / पुम्भ्याम्	पुंभ्यः / पुम्भ्यः
ष०	पुंसः	पुंसोः	पुंसाम्
सप्त०	पुंसि	पुंसोः	पुंसु

दन्त्य सकारान्त पुं० वेधस् इत्यादि ; नपुं० मनस् इ० और स्त्रीलिङ्ग अप्सरस् इ० शब्दों के रूप चन्द्रमस् शब्द के समान होते हैं । विद्वस् और पुंस् शब्दों में जो भेद होता है सो ऊपर दिखा दिया ॥

स्त्री० आशिस्

	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	आशिषा	आशीर्भ्याम्	आशीर्भिः
च०	आशिषे	आशीर्भ्याम्	आशीर्भ्यः
पं०	आशिषः	आशीर्भ्याम्	आशीर्भ्यः
ष०	आशिषः	आशिषोः	आशिषाम्
सप्त०	आशिषि	आशिषोः	आशीष्षु, आशीःषु

नपुं० हविस्

	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	हविषा	हविर्भ्याम्	हविर्भिः
च०	हविषे	हविर्भ्याम्	हविर्भ्यः
पं०	हविषः	हविर्भ्याम्	हविर्भ्यः
ष०	हविषः	हविषोः	हविषाम्
सप्त०	हविषि	हविषोः	हविष्षु, हविःषु

दन्त्य सकारान्त शब्द जिनके अन्तमें "इस्" इतना अंश पाया जावे उनके रूप हविस् शब्दके समान होते हैं। आशिस् शब्दके द्विवंचन, और बहुवचनमें जो भेद है सो दिखा दिया ॥

नपुं० चक्षुस्

	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	चक्षुषा	चक्षुर्भ्याम्	चक्षुर्भिः
च०	चक्षुषे	चक्षुर्भ्याम्	चक्षुर्भ्यः
प०	चक्षुषः	चक्षुर्भ्याम्	चक्षुर्भ्यः
ष०	चक्षुषः	चक्षुषोः	चक्षुषाम्
सप्त०	चक्षुषि	चक्षुषोः	चक्षुष्षु, चक्षुःषु

दन्त्य सकारान्त शब्द जिनके अन्तमें "उस्" इतना अंश पाया जावे, जैसे जटायुस्, चिरायुस् इ०, उन शब्दोंके रूप तृतीयादिक विभक्तियों में चक्षुस् के समान होते ह ॥

क्रिया ॥

प्रेरणार्थक प्रत्यय ॥

प्रेरणा अर्थ बतलानेमें दशों गणके धातुओंके रूप सब लकारोंमें चुरादिगणके धातुओंके समान होते हैं ॥

स्वरान्त धातु ॥

नी के नाययति इत्यादि ॥

शी के शाययति इत्यादि (केवल परस्मै०में रूप होते हैं) ॥

उभय०में पानार्थ पाके क्रमसे पाययति इ० और पाययते इत्यादि ॥

पालनार्थ पाके पालयति इत्यादि ॥

दाके दापयति इत्यादि, गैके गापयति इत्यादि ॥

ज्ञाके एक वार ज्ञापयति इत्यादि और दूसरी वार ज्ञपयति इत्यादि रूप होते हैं ऐसे ही स्नाके स्नापयति और स्नपयति इत्यादि ॥

भूके भावयति इ०, कृके उभय०में क्रमसे कारयति इ० और कारयते इ०; तॄके तारयति इत्यादि और जागृके जागरयति इत्यादि रूप ले जाओ ॥

गमनार्थक ऋके अर्पयति इत्यादि रूप दान अर्थमें होते हैं ॥

व्यञ्जनान्त धातु ॥

पठ्के पाठयति इत्यादि; वप्के उभ०में क्रमसे वापयति इत्यादि और वापयते इत्यादि; गम्के गमयति इत्यादि, जन्के जनयति इत्यादि (केवल परस्मै०में) नम् के नमयति वा नामयति इत्यादि; और ज्वल् के ज्वलयति वा ज्वालयति इत्यादि रूप होते हैं ॥

लिख् के लेखयति इत्यादि ॥
कुप् के कोपयति इत्यादि ॥
रुह् के रोहयति या रोपयति इत्यादि ॥
दृश् के क्रमसे दर्शयति और दर्शयते इत्यादि ॥
सामान्यभूत में स्थाके अतिष्ठिपत् इत्यादि ॥

वाक्यरचना ॥

अव्यय—अजस्रं (निरन्तर), पुरः (आगे), यत् (कि) ॥

वाक्य ॥

संस्कृत ॥	हिन्दी ॥
तृषितं जलं पाययेत् क्षुधितञ्चान्नं भोजयेत् (अ) ॥	लेखकसे एक पत्र लिखाओ ॥ Get a letter written by a writer.
गृहस्थः पालयेद्दारान् शास्त्रञ्च पाठयेत् सुतान् ॥	धार्मिक राजा प्रजाको पालते है ॥ Good kings protect their subjects
भृत्यं भृत्येन (आ) वा कटं कारयति देवदत्तः ॥	

(अ) किसी क्रियाके करने मे कर्त्ताको जो प्रेरणा करता है वह प्रयोजक कर्त्ता कहलाता है। यथा—माता शिशु दुग्ध पाययति इस वाक्य मे माता प्रयोजक है। प्रयोजक कर्त्ता क्रियाके करने मे जिसकी प्रेरणा करता है उसे प्रयोज्य कर्त्ता कहते है। यथा—उक्त वाक्यमे शिशुशब्द। गत्यर्थक, बुद्धयर्थक, भोजनार्थक शब्दार्थक, वा शिक्षणार्थक तथा अकर्मकसे जो प्रेरणार्थक बनते है उनके प्रयोज्य कर्त्ता के अनन्तर द्वितीया विभक्ति लगती है। शेष धातुओं के प्रयोज्य कर्त्ता के अनन्तर तृतीया विभक्ति लगती है। यथा—व्यासो मुनीन् वेदानपीपठत्, देवदत्तो यज्ञदत्तेनान्न पाचयति इ० ॥

(आ) कृ और हृ धातुके प्रयोज्य कर्त्ता के उत्तर पारीपारा द्वितीया और तृतीया दोनो विभक्तिया लग सकती है ॥

वाक्य ॥

संस्कृत ॥

अध्ययनस्य काले विद्यार्थी कोपं व्याकरणञ्च आत्मनः समीपे स्थापयेत् ॥

पश्य अजस्रं चालयति लाङ्गूलं श्वा यत् तस्य स्वामी तुष्येत् ॥

देवदत्तो यज्ञदत्तेनान्नं पाचयति ॥

व्यासो मुनीन् वेदानपीपठत् ॥

हिन्दी ॥

उसको जता दो कि मैं अस्वस्थ हू ।

Let him know that I am unwell

न उसे वायु सुखाता है और न जल भिगाता है ।

Wind does not dry it up nor water moisten it

युधिष्ठिरने एक सभामण्डप मयनाम दानवसे बनवाया ।

Yudhishthira got a *mandapa* made by a Danava whose name was Maya

इतिहास वा भूगोल पढ़ते समय विद्यार्थी मानचित्र अपने साम्हने रख लेवें ।

Students should place an atlas before them when reading history or geography

पञ्चत्रिंश पाठ ॥

संज्ञा ॥

हकारान्त शब्द ॥

	पुं० मधुलिह्				स्त्री० उपानह् ॥		
	ए०	द्वि०	ब०		ए०	द्वि०	ब०
तृ०	मधुलिहा	मधुलिड्भ्याम्	मधुलिड्भिः	तृ०	उपानहा	उपानद्भ्याम्	उपानद्भिः
च०	मधुलिहे	मधुलिड्भ्याम्	मधुलिड्भ्यः	च०	उपानहे	उपानद्भ्याम्	उपानद्भ्यः
प०	मधुलिह	मधुलिड्भ्याम्	मधुलिड्भ्य	प०	उपानहः	उपानद्भ्याम्	उपानद्भ्यः
ष०	मधुलिह	मधुलिहो	मधुलिहाम्	ष०	उपानह	उपानहो	उपानहाम्
सप्त०	मधुलिहि	मधुलिहो	मधुलिट्सु	सप्त०	उपानहि	उपानहो	उपानत्सु

हकारान्त शब्दो के रूप मधुलिह् शब्द के समान होते है ॥

क्रिया ॥

नाम धातु ॥

संज्ञा वा अव्यय शब्दों से जो धातु बनाये जाते हैं वे नामधातु कहाते हैं। यथा–तपस् शब्द से तपस्य् (तपस्या करनी) और नमस् अव्यय से नमस्य् (नमस्कार करना) इ० । इनके वर्त्तमानादि चार लकारोंमें तपस्यति और नमस्यति इत्यादि रूप दिवादिगण के धातुओं के समान होते है ॥

अनद्यतनभविष्यमें तपसिता इत्यादि ॥
भविष्यमें तपसिष्यति इत्यादि ॥
क्रियातिपत्तिमें अतपसिष्यत् इत्यादि ॥
आशिसमें तपस्यात् इत्यादि ॥

परोक्षभूत में तपसाञ्चकार वा तपसाम्बभूव अथवा तपसामास इत्यादि रूप होते हैं ॥

सामान्यभूत में अतपसीत् अतपसिष्टाम् इत्यादि रूप होते है। ऐसे ही नमस्य् इत्यादि के रूप ले जाओ ॥

चिर शब्द से चिरय् (विलम्ब करना) परस्मैपदी धातु और शब्द से शब्दाय् (शब्द करना) आत्मनेपदी धातु बनता है। इनके क्रमसे चिरयति और शब्दायते इत्यादि रूप होते ह ॥

अनद्यतन भविष्यादि में चिरयिता और शब्दायिता इत्यादि रूप क्रम से होते हे ॥

वाक्यरचना ॥

वाक्य ॥

संस्कृत ॥

असौ तपस्यत्यपरस्तपस्वी ॥

नमस्यामो देवान् ॥

शब्दायन्ते गोष्ठेषु वृषभाः ॥

कथं चिरयति जानकी। बलवदुत्कण्ठितोऽस्मि (अ) तस्यादर्शनाय ॥

सुखयति मां शिशिरो वातः ॥

(अ) क्रियाविशेषण शब्द का नपु० द्वितीया विभक्तिके एकवचन मे प्रयोग होता है। यथा बलवत् इस प्रयोग मे देखते हो परन्तु जो क्रियाविशेषण अव्यय होते है उनके लिये यह नियम अनावश्यक है।

हिन्दी ॥

सुनो गाय रम्भाती है ॥

Listen, the cow is bellowing

खल के वचन हमको दुःख देते हे।

The words of the wicked pain me

तुमने विलम्ब किया। क्यो शीघ्र नहीं आये ॥

You have delayed long. Why did you not come soon ?

बच्चो की बोली हमारे कानोंको सुख देती है ॥

The lispings of children delight my ears

षट्त्रिंश पाठ ॥

संज्ञा ॥

सर्वनाम ॥

पु० और नपुं० अकारान्त सर्व				स्त्री० आकारान्त सर्वा		
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
तृ०	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
च०	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः	सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
प०	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः	सर्वस्याः	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
ष०	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्	सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्
सप्त०	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु	सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वासु

पुं० और नपुं० मे प्रथम आदि शब्दोंको छोडके शेष पूर्वादि शब्दों की पञ्चमी और सप्तमीके ए० व० में एकवार बालक शब्द के समान दूसरी वार सर्वशब्द के समान, यों दो २ रूप होते हैं।

यथा—पञ्चमी—पूर्वात् वा पूर्वस्मात् इ० ॥

सप्तमी—पूर्वे वा पूर्वस्मिन् इ० ॥

पूर्वादि शब्दोके शेष रूप सर्व शब्दके समान पुं० और नपुं०में होते हैं। परन्तु प्रथमादि शब्दोंके रूप पु० और नपुं०में बालक शब्दहीके समान होते हैं। द्वितीय और तृतीय इन दो शब्दोंकी चतुर्थी, पञ्चमी और सप्तमी के ए०व०में एकवार बालक शब्दकी नाईं और दूसरी वार सर्व शब्दकी नाईं, यों दो २ रूप पु० और नपुं० में होते हैं॥ द्वितीय तथा तृतीय शब्दके शेष रूप बालक शब्दके समान होते हैं॥

प्रथमा आदि शब्दोंको छोड़के शेष पूर्वा आदि आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दोंके रूप सर्वा शब्दके समान होते हैं। प्रथमा आदि आकारान्त

स्त्रीलिङ्ग शब्दोंके रूप विद्या शब्दहीके समान होते हैं। स्त्री० द्वितीया और तृतीया इन दो शब्दोंकी चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी और सप्तमी के एक वचन में एकबार विद्या शब्दके और दूसरी वार सर्वाशब्दके समान, यों दो २ रूप होते हैं। यथा—

पु० वा नपुं०		स्त्री०	
ए०		ए०	
च० द्वितीयस्मै	वा द्वितीयाय	च० द्वितीयस्यै	वा द्वितीयायै
प० द्वितीयस्मात्	वा द्वितीयात्	प० द्वितीयस्याः	वा द्वितीयाया.
		ष० द्वितीयस्याः	वा द्वितीयायाः
सप्त० द्वितीयस्मिन्	वा द्वितीये	सप्त० द्वितीयस्याम्	वा द्वितीयायाम्

ऐसेही तृतीय और तृतीया शब्दके रूप होते हैं॥ द्वितीया तथा तृतीया शब्दके शेष रूप विद्याशब्दके समान होते हैं॥

क्रिया ॥

इच्छार्थक प्रत्यय ॥

धातुके अर्थकी इच्छा प्रकाश करने अर्थमें धातुके उत्तर पहिले "स" प्रत्यय लगाया जाता है तिसके अनन्तर विभक्तियां जोड़ी जाती हैं। धातुके उत्तर "स" प्रत्यय लगाने से धातुके रूपमे अवश्य हेर फेर होता है। जो धातु जिस पदकी विभक्तियां पाता है वह उक्त "स" प्रत्यय के लगने पर भी उसी पदकी विभक्तियां पाता है (अ)॥

"स" प्रत्ययके लगाने अनन्तर परस्मैपदी धातुओंके रूप पठ् धातु के रूपोंके समान होते हैं, और आत्मनेपदी धातुओंके रूप लभ् धातु के रूपोंके समान होते हैं॥ यथा—

(अ) परन्तु ज्ञा, श्रु, स्मृ और दृश् ये धातु "स" प्रत्यय के लगनेपर आत्मनेपद की विभक्तिया पाते है॥

परस्मै०में पा के प्र० ए० पिपासति, पिपासतु, पिपासेत्, अपिपासत्, पिपासिता, पिपासिष्यति, अपिपासिष्यत्, पिपास्यात्, पिपासांचकार वा पिपासाम्बभूव अथवा पिपासामास, अपिपासीत्, यों क्रमसे ॥

और आत्मने०में ज्ञाके जिज्ञासते, जिज्ञासताम्, जिज्ञासेत, अजिज्ञासत, जिज्ञासिता, जिज्ञासिष्यते, अजिज्ञासिष्यत, जिज्ञासिषीष्ट, जिज्ञासाञ्चक्रे वा जिज्ञासाम्बभूव अथवा जिज्ञासामास, अजिज्ञासिष्ट यों क्रमसे वर्त्तमानादि दशों लकारोंमे पृथक् २ रूप होते हैं ॥

कृ के क्रमसे चिकीर्षति, और चिकीर्षते इत्यादि ॥
ऐसे ही हृके क्रमसे जिहीर्षति और जिहीर्षते इत्यादि रूप होते हैं ॥

भूके बुभूषति इत्यादि और श्रुके शुश्रूषते इत्यादि, रूप क्रमसे ले जाओ॥

पठ्के पिपठिषति इत्यादि; गम्के जिगमिषति इत्यादि और दृश्के दिदृक्षते इत्यादि रूप होते हैं ॥

दाके क्रमसे दित्सति और दित्सते इ०, आप् के ईप्सति इ० और लभ्के लिप्सते इत्यादि रूप होते हैं ॥

वाक्यरचना ॥

वाक्य ॥

संस्कृत ॥

पिपठिषामि कृत्स्नं व्याकरणम् ॥
अध्ययनाय काशीं जिगमिषामि ॥
अहमाचार्यं धर्मस्य तत्त्वं जिज्ञासे ॥
कथयामि वत्स यत् त्वं शुश्रूषसे ॥
भो ब्राह्मण पिपासामि ॥
कथं पानीयं न दित्ससि ॥
जिघ्रासामि पुष्पाणि ॥
दिदृक्ष उपवनस्य शोभाम् ॥
य आरोग्यं लिप्सते स पथ्यं चिकीर्षते ॥

हिन्दी ॥

नहानेके लिये नदीको जाना चाहता हू ॥

I wish to go to the river to bathe

जो सुख पाने चाहे वह विद्या लाभ करे ॥

He who wishes to obtain happiness should acquire learning.

मै पुत्रका मुख देखना चाहता हू और उसका भाषण सुनना चाहता हू ॥

I wish to see the face of my child and to hear his lispings

विश्वामित्र ब्राह्मण होना चाहते थे। इसलिये उन्होने तप किया ॥

Visvamitra wished to become a Brahman And for this object he practised penances.

सप्तत्रिंश पाठ ॥

संख्यावाचक

अकारान्त संख्यावाचक "एक" शब्द के रूप पुं० वा नपुं० में बहुधा केवल एकवचनही में प्रयुक्त होते हैं और सर्वशब्द के समान होते हैं ॥

आकारान्त संख्यावाचक स्त्री० "एका" शब्द के रूप केवल एकवचन ही में प्रयुक्त होते हैं और सर्वा शब्द के समान होते हैं ॥

इकारान्त संख्यावाचक द्वि शब्द के रूप पुं० नपुं० वा स्त्री० में समान होते हैं और केवल वे द्विवचन ही में प्रयुक्त होते हैं ॥ यथा—

पुं० नपुं० वा स्त्री०

	द्विवचन
तृतीया	द्वाभ्याम्
चतुर्थी	द्वाभ्याम्
पञ्चमी	द्वाभ्याम्
षष्ठी	द्वयोः
सप्तमी	द्वयोः

तीनों लिङ्गों में समान संख्यावाचक कति शब्द के रूप कविशब्द के समान केवल बहुवचनही में होते हैं ॥ कति शब्द के समान यति (जितने) और तति (तितने) इन शब्दों के रूप भी सब विभक्तियों के बहुवचन ही में होते हैं ॥

ह्रस्व इकारान्त संख्यावाचक त्रि शब्द के रूप तीनों लिङ्गों में केवल ब० व० में ही होते हैं और पुं० तथा नपुं० मे समान होते हैं। यथा—

	पुं० वा नपुं०	स्त्री०
	ब०	ब०
तृ०	त्रिभिः	तिसृभिः
च०	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः
पं०	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः
ष०	त्रयाणाम्	तिसृणाम्
सप्त०	त्रिषु	तिसृषु

रेफान्त संख्यावाचक चतुर् शब्द के रूप तीनों लिङ्गों में केवल बहुवचनहीमें होते है और पुं० तथा नपुं० में समान होते हैं॥ यथा—

	पुं० वा नपुं०		स्त्री०
	ब०		ब०
तृ०	चतुर्भिः	तृ०	चतसृभिः
च०	चतुर्भ्यः	च०	चतसृभ्यः
पं०	चतुर्भ्यः	पं०	चतसृभ्यः
ष०	चतुर्णाम्	ष०	चतसृणाम्
सप्त०	चतुर्षु	सप्त०	चतसृषु

पञ्चन् शब्दसे लेके दशन् शब्दपर्य्यन्त संख्यावाचक शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में समान केवल बहुवचनही में होते हैं॥ यथा—

पुं० नपुं० वा स्त्री०

	पञ्चन्		अष्टन्
	ब०		ब०
तृ०	पञ्चभिः	तृ०	अष्टभिः वा अष्टाभिः
च०	पञ्चभ्यः	च०	अष्टभ्यः वा अष्टाभ्यः
पं०	पञ्चभ्यः	पं०	अष्टभ्यः वा अष्टाभ्यः
ष०	पञ्चानाम्	ष०	अष्टानाम्
सप्त०	पञ्चसु	सप्त०	अष्टसु वा अष्टासु

नकारान्त सङ्ख्यावाचक शब्दों के रूप पञ्चन् शब्द के समान होते हैं। अष्टन् शब्द में जो भेद होता है सो दिखा दिया ॥ एकादशन्—(ग्यारह) इ० शब्दो के लिये वही नियम है जो दशन् शब्द के लिये है ॥

षष्

पुं० नपुं० वा स्त्री०

ब०

तृ०	षड्भिः
च०	षड्भ्यः
पं०	षड्भ्यः
ष०	षण्णाम्
सप्त०	षट्सु

ह्रस्व इकारान्त नित्य स्त्रीलिङ्ग सङ्ख्यावाचक विंशति इत्यादि के और एकविंशति इत्यादि शब्दों के भी रूप स्तुति शब्द के समान होते हैं ॥

तकारान्त नित्य स्त्रीलिङ्ग संख्यावाचक त्रिंशत् इत्यादि के और एक-त्रिंशत् इत्यादि शब्दों के भी रूप सरित् शब्द के समान होते हैं ॥

अकारान्त संख्यावाचक शत इत्यादि शब्दों के रूप नित्य नपुं० तृतीयादि विभक्ति में बालक शब्द के समान होते हैं ॥

वाक्यरचना ॥

अव्यय—खलु (निश्चय), किल (प्रसिद्धिबोधक) ॥

वाक्य ॥

संस्कृत ॥	हिन्दी ॥
पूर्वं वैयाकरणा द्वादशभिर्वर्षैः (अ) व्याकरणं पठन्ति स्म किल ॥	दश विद्यार्थियों को पारितोषिक देना चाहता हूं ॥
विंशतये विद्यार्थिभ्यः पुस्तकानि दित्सामि ॥	I wish to present reward to ten students
राजा एकविंशतिं दिनानि वने चचार ॥	हमारे आचार्य चारों वेदों के तत्त्वों को जानते थे ॥
शतं वर्षाणि जीव आयुष्मन् ॥	My teacher knew the substance of the four *Vedas*
गतेषु चतुर्दशसु वर्षेषु (आ) रामो भूयोऽयोध्यां ददर्श ॥	

(अ) फलप्राप्ति का बोध कराने में कालवाचक वा मार्गवाचक शब्दों के अनन्तर तृतीया विभक्ति होती है ॥

(आ) जो अपनी क्रिया के काल से किसी दूसरी क्रिया के काल की समानता बोध कराता है उसके उत्तर सप्तमी विभक्ति लगती है ॥

वाक्य ॥

संस्कृत ॥

भागवतस्य सप्तभिः रामायणस्य तु नवभिरहोभिः पौराणिकाः पारायणं कुर्वते खलु ॥

त्रिभिर्मासैस्त्रिभिः पक्षैस्त्रिभिर्वर्षैस्त्रिभिर्दिनैः अत्युत्कटस्य पापस्य-पुण्यस्य (वा) फलमश्नुते (लोकः) ॥

देवदत्तो यज्ञदत्ताय सहस्रं धारयति ॥ (इ)

हिन्दी ॥

रामसिंह दश गांव के परन्तु लक्ष्मण सिह बीस गांवके ठाकुर हैं ॥

Ram singh is the lord of ten villages and Lakshman Sinogh of twenty

पांचों तत्त्वोंके नाम बताओ ॥

Give the names of the five elements.

अट्ठारहों पुराण का पाठ इन्होंने किया है ॥

He has recited the eighteen *Puranas*

(इ) ऋणिया जिसके ऋणको उधारता है उसके उत्तर चुरादिगणीय धृ धातुके योगमें चतुर्थी विभक्ति लगती है ॥

अष्टात्रिंश पाठ ॥

कर्मवाच्य और भाववाच्य ॥

यहांलों जो क्रियाओंके रूप बतलाये गये उनका कर्त्ता प्रथमा और कर्म द्वितीया विभक्ति पाता है और वे कर्तृवाच्य कहे जाते हैं ॥

जब सकर्मक क्रियाका कर्त्ता तृतीया विभक्ति और कर्म प्रथमा विभक्ति पाता है, अथवा अकर्मक क्रियाका कर्त्ता तृतीया विभक्ति पाता है, तब उस क्रियाके धातु के उत्तर सदा आत्मनेपदकी विभक्तियां लगती हैं। और सकर्मक क्रियाओंके वैसे उन रूपों को कर्मवाच्य और अकर्मक क्रियाओंके वैसे उन रूपोंको भाववाच्य कहते हैं ॥

संस्कृतमें भी हिन्दीहीकी नाईं कर्त्तृवाच्यमें कर्त्ताके और कर्मवाच्यमें कर्मके वचन अनुसार क्रियाके वचन होते हैं, परन्तु भाववाच्यमें क्रियाका प्रयोग नियम से प्रथम पुरुषके एक वचन में होता है।

वर्त्तमानादि चार लकारोंमें बहुत करके समस्त धातु दिवादि गणके धातुओं के समान रूप पाते हैं। यथा भू धातुके भूयते इत्यादि, पठ् धातुके पठ्यते इ०, क्षिप्के क्षिप्यते इ०, दाके दीयते इ०, स्था स्थीयते इत्यादि, पाके पीयते इत्यादि, गै के गीयते इ०, वप्के उप्यते इ० स्वप्के सुप्यते इ०, वच्के उच्यते इ०, वह् के उह्यते इत्यादि, स्मृके स्मर्यते इत्यादि, शीके शय्यते इ०, ग्रह्के गृह्यते इ० प्रच्छ्के पृच्छ्यते इ०, बन्ध्के बध्यते इ०, और ग्रन्थ् इत्यादिके ग्रथ्यते इत्यादि रूप होते हैं ॥

अनद्यतन भविष्य से लेके परोक्षभूत पर्यन्त लकारों में कर्मवाच्य वा भाववाच्य में प्रायः धातुओं के रूप नित्य आत्मने० में वैसे ही

होते हैं जैसे उनके कर्त्तृवाच्य मे होते हैं। यथा—दा के दाता, दास्यते, अदास्यत, दासीष्ट और ददे इत्यादि।

सामान्यभूत में भी बहुधा नित्य आत्मने० में वैसे ही रूप होते हैं जैसे उनके कर्त्तृवाच्य में होते हैं। केवल प्र० पु० के ए० वचन में सर्वदा भेद होता है। यथा—नीके सामान्यभूत के प्र० पु० के ए० व० में अनायि ऐसा रूप होता है और शेष अनायिषाताम् इ० रूप पूर्ववत् होते हैं। ऐसे ही पठ् इ० के अपाठि, अपाठिषाताम् इ० रूप होते हैं॥

वाक्यरचना ॥

वाक्य ॥

संस्कृत ॥	हिन्दी ॥
कोलाहलात् तस्य स्वरो नाश्रूयत ॥ वसन्ते वनेषु कोकिलानां कला गिरः शुश्रुविरे ॥ प्रज्ञया सर्वं साध्यते ॥ किमुच्यते कृतघ्नानां चरितम् ॥ नाहं दोषेण स्पृश्ये ॥ अनेन मद्व्याकरणमपाठि ॥	जो पोथी आपने लिखने के लिये दी थी सो लिखी जाती है ॥ The book which you gave me is being copied. जो पत्र तुमने लिखा था सो सभा में आज पढ़ा गया ॥ The letter you wrote was read in the meeting to day मेरा छाता चोरी गया ॥ उसको खोज की जावे ॥ My umbrella has been stolen Let it be searched जो पराये का उपकार करता है वह साधु कहाता है ॥ He who does good to others is called a *Sadhu*

एकोनचत्वारिंश पाठ ॥

उपसर्ग ॥

प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निर्, दुर्, वि, आ, नि, अधि, अपि, अति, सु उत्, अभि, प्रति, परि, उप, ये सब प्रादि अव्यय शब्द हैं। इनमें से जब जो किसी धातु के पूर्व में लगाया जाता है तब वह उपसर्ग कहा जाता है। धातु के पूर्व में एक ही उपसर्ग लगाने का नियम नहीं है, परन्तु कभी कई उपसर्ग भी लगते हैं। यथा—नयति से आनयति और प्रत्यानयति इत्यादि रूप बनते हैं ॥

धातु के पूर्व में उपसर्ग के लगने से कभी २ तो धातु का अर्थ ज्यों का त्यों समझा जाता है। जैसे—प्रयच्छति (देता है) इस प्रयोग में उपसर्ग के लगने से दाण् (देना) धातु का अर्थ ज्यों का त्यों बना रहा। परन्तु बहुधा धातु के पूर्व में उपसर्ग के लगने से धातु का मूल अर्थ छुटके और ही कुछ का कुछ अर्थ हो जाता है। जैसे—भू से बने हुए प्रभवति का, समर्थ होता है—ऐसा अर्थ हो जाता है। क्योंकि प्र उपसर्ग के लगने से भू धातु का मूल अर्थ होना नहीं रहता, किन्तु समर्थ होना अथवा उत्पन्न होना ऐसा अर्थ हो जाता है। कभी २ तो धातु के पूर्व में किसी उपसर्ग के लगने से धातु के मूल अर्थ के ठीक विपरीति अर्थ होता है। जैसे—स्मृ धातु का मूल अर्थ स्मरण करना है परन्तु उसके पूर्व में जब वि उपसर्ग लगता है तब मूल अर्थ के ठीक विपरीत अर्थात् भूल जाना अर्थ हो जाता है। यथा-विस्मरति=भूल जाता है ॥

कहीं २ धातुके पूर्वमें किसी विशेष २ उपसर्गके लगनेसे विभक्तियोंके पद (अर्थात् परस्मैपद वा आत्मनेपद) पलट जाते हैं। जैसे—स्था धातु परस्मैपदी है, परन्तु जब उसके पूर्वमें प्र, सम्, अव, वि, इनमेंसे कोई उपसर्ग लगता है तब वह आत्मनेपदी हो जाता है। यथा—प्रतिष्ठते =प्रस्थान करता है इत्यादि ॥

वाक्यरचना ॥

उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते ।
प्रहाराहारसंहार विहारपरिहारवत् ॥

वि + तॄ = देना; वि + रम् = ठहरना, प्र + स्था = चलना; अनु + स्था
(अनुष्ठा) = करना; अनु + इष् (दिवादि) = ढूंढ़ना; वि + धा = करना;
अभि + धा = कहना ; परि + धा = पहिरना ; आ + नी = लाना : आ + दा
लेना, व्या + दा = बाना (मुखादिका) ; आ + गत्यर्थक धातु = आना, अव
+ गत्यर्थक धातु = जानना; आ + रभ् = आरम्भ करना ॥

वाक्य ॥

संस्कृत ॥	हिन्दी ॥
...रोतं कुकुटाश्चरुच्वा चरणेन च ...हार्पुः ॥	तुमने कब संस्कृत पढ़ना आरम्भ किया ॥ When did you begin the study of Sanskrit ?
...रत्नो कानिचित् फलान्यानैषीत् ॥	अपने देशके कपड़ों को पहिना करो ॥ Use cloths manufactured in your own country
...ज्ञापयास्यत्र कुशलं भोः ॥	रत्न मनुष्य को नहीं ढूंढता, पर लोगोंसे वह ढूंढा जाता है ॥ Jewels do not seek after men, but they are sought after by men
...शंसे तत्र तत्त्वास्तु ॥	भूखेको अन्न पियासेको पानी नंगेको वस्त्र देहु तुम दानी ॥ O generous man, give food to the hungry, drink to the thirsty; clothing to the naked.
...निपुणं निरीक्षते ॥	
...राध्यायश्छात्रान् परीक्षते ॥	
...णामहं प्रतीक्षे ॥	
...चुकोपारये (अ) राजा	
...ड्डेन प्रजघान च ॥	
...वेहि मा क्रुध्यस्मष्टमूर्तेः ॥	

(अ) क्रोधार्थक धातुओं के योग में जिसपर क्रोध किया जाता है उसके अनन्तर चतुर्थी विभक्ति होती है ॥

चत्वारिंश पाठ ॥

पदव्यवस्था ॥

उभयपदी धातुओं के प्रयोग में जब क्रिया का फल कर्त्ता ही को प्राप्त होता है तब उसके उत्तर आत्मनेपद की विभक्तियां लगाई जाती हैं। अन्यथा परस्मैपद की विभक्तियां लगाई जाती हैं। यथा—जब बोनेवाला अपने प्रयोजन से बोता है तब वपते इत्यादि रूप बोले जाते हैं। अन्यथा वपति इत्यादि व्यवहार किये जाते हैं ॥

वि + क्री = बेंचना वि अथवा परापूर्वक जि आ + दा स्वरादि वा स्वरान्त उपसर्ग पूर्वक युज् सम् + गम् (अकर्मक)	इनके उत्तर सदा आत्मनेपद की विभक्तियां लगती हैं ॥
वि, आ, वा परि पूर्वक रम् अनु वा परा पूर्वक कृ	इनके उत्तर सदा परस्मैपद की विभक्तियां लगती हैं ॥

उप + रम् उभयपद की विभक्तियां पाता है ॥

मृ धातु वर्त्तमानादि चार लकारों में और सामान्यभूत, तथा आशिस में आत्मनेपदकी विभक्तियां और शेष लकारादिकों में परस्मैपदकी विभक्तियां पाता है ॥ यथा—परोक्षभूत में ममार इ० और सामान्यभविष्य इ० में मरिष्यति इत्यादि रूप होते हैं ॥

वाक्यरचना ॥

वाक्य ॥

संस्कृत ॥	हिन्दी ॥
कुमारी कन्या पितुर्गृहेऽवतिष्ठेत ॥	आप प्रयाग से काशी को कब पधारियेगा ॥ When will you go from Prayaga to Kasi ?
रामो दक्षिणां दिशं प्रतस्थे ॥	आठ का मोल लिया और दश पर बेंचा ॥ What he purchased for eight rupees, he sold for ten
लङ्कायां रणे रावणं विजिग्ये च ॥	अब तुम ठहरो दूसरा आरम्भ करे ॥ You stop now. Let the next begin
विद्यार्थी विद्यामादत्ते ॥	पोथी लाओ। चलो चलें ॥ Bring the book Let us go.
साधु विक्रमते वाजी ॥	न्यायवान् विचार कर्त्ता घूस (उत्कोच पु०) नहीं लेते ॥ An honest judge does not take a bribe.
माणवकमुपनयत आचार्य्यः ॥	
भार्यामुपयच्छते देवदत्तः ॥	
भुवं भुनक्ति भूपालः ॥	
ओदनं भुङ्क्ते वटुः ॥	
वृद्धो जनो दुःखशतानि भुङ्क्ते ॥	
वत्स रोदनाद् विरम (अ) मुखं व्यादेहि; मोदकं ते ददामि ॥	

(अ) विराम, प्रमाद और जुगुप्सा (घिन) अर्थवाले धातुओ के योग मे जिससे विरामादि होवे उसके उत्तर पञ्चमी विभक्ति होती है। जिससे पढते सुनते, लजाते, हारते, चूकते, वा छिपते है उसके उत्तर भी पञ्चमी विभक्ति होती है।

ऋजुव्याकरणम् ॥

तृतीय भाग ॥

कृदन्त ॥

धातुके उत्तर ति, तः, अन्ति और ते इत्यादि प्रत्यय जैसे लगाये जाते है वैसे ही ति त, तव्य, तुम्, त्वा इत्यादि प्रत्यय भी लगाये जाते है। इनको व्याकरणमे कृत् प्रत्यय कहते है। धातुके उत्तर कृत् प्रत्यय लगानेसे जो शब्द बनते है उन्हे कृदन्त कहते है ॥

कृदन्त सिद्ध शब्द कोई २ तो क्रियावाचक संज्ञा, कोई २ क्रियावाचक विशेषण और कोई २ अव्यय होते है ॥

किसी २ कृत् प्रत्यय परे रहते किसी २ धातुके उत्तर इ लगता है, किसी २ के उत्तर नहीं लगता और किसी २ को एक वार लगता है एक वार नहीं लगता। सो व्यवहार से जानोगे। कृत् प्रत्यय लगने से धातुओके रूपमे भी हेर फेर होता है। सो आगे उदाहरणोंमे देखोगे ॥

क्रियावाचक संज्ञा ॥

धातुका अर्थ बतलानेके लिये अ, अन, ति वा त इत्यादि प्रत्यय होते है ॥

अ प्रत्ययान्त प्रायः पुल्लिङ्ग, ति प्रत्ययान्त स्त्रीलिङ्ग, अन और त प्रत्ययान्त नपुंसकलिङ्ग होते है ॥

अ प्रत्ययान्त यथा—भू से भावः, जि से जयः, भी से भयं इ० ॥
अन प्रत्ययान्त यथा— गम्से गमनं, भुज्से भोजनं इत्यादि ॥
ति प्रत्ययान्त यथा— स्थासे स्थितिः, कृसे कृतिः, गम्से गतिः इ० ॥
त प्रत्ययान्त यथा—गम्से गतं, जीव्से जीवितम् इत्यादि ॥

क्रियावाचक विशेषण ॥

वर्त्तमान कालकी क्रियाका कर्त्ता बतलानेके लिये परस्मैपदी धातुके उत्तर अत् होता है ॥ यथा—भूसे भवत्, गम्से गच्छत्, पच्से पचत् ॥ और आत्मनेपदी कुछ धातुओंके उत्तर आन, और कुछ धातुओंके उत्तर मान प्रत्यय लगता है ॥ यथा— दासे ददान, सेव्से सेवमान इत्यादि ॥

भविष्यत्कालकी क्रिया का कर्त्ता बतलानेके लिये परस्मैपदी धातुके उत्तर स्यत् और आत्मनेपदी धातुके उत्तर स्यमान प्रत्यय लगता है ॥ यथा कृसे—क्रमसे करिष्यत् और करिष्यमाण इत्यादि ॥

वर्त्तमानकालकी क्रियाका कर्म बतलाने के लिये धातु मात्रके उत्तर यमान लगता है ॥ यथा—पच्से पच्यमान, सेव्से सेव्यमान इत्यादि और भविष्यत्काल की क्रियाका कर्म बतलाने के लिये स्यमान लगता है ॥ यथा—कृसे करिष्यमाण, लभ्से लप्स्यमान इत्यादि ॥

भूतकालकी क्रियाका कर्त्ता बतलाने के लिये धातुमात्रके उत्तर तवत्; और अकर्मक धातुके उत्तर तथा गति आदि कई एक अर्थवाले धातुके उत्तर त प्रत्यय लगता है। यथा—कृसे कृतवत्, गम्से गत इत्यादि ॥

भूतकालकी क्रियाका कर्म बतलाने के लिये सकर्मक धातुओंके उत्तर त प्रत्यय लगता है। यथा—कृसे कृत, सेव्से सेवित इत्यादि ॥

क्रिया का कर्त्ता बतलाने के लिये धातु के उत्तर इन्, अक, अ इत्यादि प्रत्यय लगते है। यथा—कृ से कारिन्, कारक, (कुम्भ)-कार इत्यादि ॥

क्रियाका कर्म बतलाने के लिये तव्य, अनीय, वा य प्रत्यय लगता है (अ)। यथा—दातव्य, दानीय, देय, कार्य, कृत्य इत्यादि ॥

क्रियावाचक अव्यय

निमित्त बतलानेके लिये धातुके उत्तर तुम् होता है। यथा—दासे दातुम्; गम्से गन्तुम्; पत्से पतितुम् इत्यादि ॥

पूर्वकाल बोध कराने मे धातुके उत्तर त्वा प्रत्यय होता है। यथा—कृसे कृत्वा, पत्से पतित्वा, और क्रीसे क्रीत्वा इत्यादि। परन्तु धातुके पूर्व उपसर्ग अथवा नमः इत्यादि शब्द रहे तो त्वा न लगके य होता है। यथा—निपत्य, विक्रीय, नमस्कृत्य इत्यादि ॥

(अ) केवल धात्वर्थ अथवा औचित्य अर्थ बतलाने के लिये भी तव्य, अनीय वा य प्रत्यय लगता है ॥

वाक्यरचना ।

वाक्य (अ)

संस्कृत	हिन्दी
रामस्य पञ्चवट्यां गमनं तत्र च सीताया हरणं (आ) जटायुषश्च मरणं इत्यादिकथा अरण्यकाण्डे वर्णिता ॥	मुझको यह काम करना है ॥ This work is to be done by me
गृद्ध्रं च निहतं दृष्ट्वा हृतां श्रुत्वा च मैथिलीम्। + + + राघवो विललाप ॥	तुमको वहां जाना है ॥ You have to go there
गृद्ध्रं दग्ध्वा वने भ्रमन् रामो राक्षसं ददर्श। + + + तंच निहत्य ददाह ॥	लडका सोया हुआ है ॥ The child is asleep.
शबर्य्या पूजितो रामः पम्पातीरे हनूमता संगतः ॥	दौडते हुए हरिणको सिंहने पकड़ा ॥ The lion seized a stag that was running

(अ) नीचेके हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करते समय स्मरण रखना कि यथासम्भव कृदन्त शब्दका प्रयोग करना चाहिये ॥

(आ) धातुके उत्तर कालादिबोधक ति इत्यादि जो प्रत्यय लगते हैं वे आख्यात कहलाते हैं। यद्यपि कृदन्त शब्दका प्रयोग संज्ञादि के रूपमें व्यवहार किया जाता है परन्तु कभी २ उससे आख्यात की नाई अर्थ मिलता है। ऐसे स्थलमें आख्यात की क्रियाकी नाई कृदन्त क्रियाका कर्त्ता वा कर्मकी विभक्ति होती है, यथा—मया कार्य्याणि कर्त्तव्यानि। तेन पुस्तकानि लिखितानि। स पत्रं पठितवान्। बालकाः पाठशालां गताः ॥ परन्तु धात्वर्थमात्र बोधक कृदन्तका प्रयोग केवल नपुंसक प्रथमाके एकवचन में होता है, यथा—मया गन्तव्यं, त्वया कर्त्तव्यं इत्यादि ॥

वाक्य ॥

संस्कृत	हिन्दी
सोऽभिगम्य महात्मानं कृत्वा रामं प्रदक्षिणं (अ) + + + सीता दृष्टेति न्यवेदयत् ॥ अभिषिच्य (३७) च लङ्कायां राक्षसेन्द्रं विभीषणम् । + + + रामः प्रमुमुदे ॥ देवताभ्यो वरं प्राप्य समुत्थाप्य च वानरान् । + + + अयोध्यां प्रस्थितो रामः ॥ पुष्पकं तत्समारुह्य नन्दिग्राम ययौ तदा ॥ नन्दिग्रामे जटां हित्वा भ्रातृभिः सहितोऽनघः । रामः सीतामनुप्राप्य राज्यं पुनरवाप्तवान् ॥	पाठशाला में पहुच कर गुरु के सम्मुख जाकर उनको पहिले प्रणाम करो । पीछे पाठ आरम्भ करो । On reaching your school, go to your teacher and salute him Then begin your lesson पत्र पढ़कर उत्तर लिखो ॥ Having read the letter reply to it

ऊपर कहे प्रयोगोंमे भिन्न प्रयोगोंके स्थलो मे कृदन्त क्रियाके कर्त्ता वा कर्म बहुत करके षष्ठी विभक्ति पाता है । यथा रामस्य जन्म, रावणस्य वध , अन्नस्य पाकः, ब्राह्मणाना भोजन इत्यादि । यहा तृतीया वा द्वितीया विभक्ति न होकर षष्ठी हुई ॥

(अ) जो दहिनी अलङ्ग हो उसे प्रदक्षिण कहते है । प्रदक्षिण यह प्रयोग अव्ययीभाव समास का है । इस समास का वर्णन ऋजुव्या० द्वि० भाग १२ पृ० मे देखो ॥

(सं० ३७) जिस उपसर्ग के अन्त में इ, वा उ हो उसके उत्तर सिच् इत्यादि सकारादि धातुओंके दन्त्य सकार के स्थानमे मूर्द्धन्य षकार आदेश होता है, यथा अभि + सिच्य = अभिषिच्य इत्यादि ॥

तद्धित

संज्ञाशब्द वा किसी २ अव्यय शब्द के उत्तर अ, इ, इक, वत्, मत्, य, ता इत्यादि प्रत्यय अपत्य (सन्तान), अधिकार, योग्यता इत्यादि अर्थ बतलानेके लिये लगाये जाते हैं, उनको तद्धित कहते हैं ॥

तद्धित प्रत्यय लगाने पर प्रकृति (अ) के स्वरूप में बहुधा हेर फेर होता है ॥

तद्धित प्रत्ययान्त शब्द कोई २ तो संज्ञा, कोई २ विशेषण और कोई २ अव्यय होते हैं ॥

तद्धितान्त संज्ञा

उत्पत्ति वा अपत्य अर्थ बतलाने के लिये अ, एय, आयन, इन प्रत्ययों में से कोई प्रत्यय लगता है। यथा—कुशिकस्य अपत्य कौशिकः। धृतराष्ट्रस्य अपत्यं धार्त्तराष्ट्रः। द्वीपे भवः द्वैपायनः इत्यादि ॥

अकारान्त और सुमित्रा इत्यादि कई शब्दोंके उत्तर अपत्य अर्थ बतलाने के लिये इ प्रत्यय लगता है। यथा—दशरथस्य अपत्यं दाशरथिः। सुमित्रायाः अपत्यं सौमित्रिः ॥

भावादि अर्थ बतलाने के लिये त्व, ता, अ, य, इमन् इत्यादि प्रत्यय लगते हैं। यथा—लघु से लघुत्व, लघुता, लाघव, लघिमा और धीर से धैर्य्य इत्यादि ॥

कभी २ प्रत्यय तो लगता है पर मूल शब्द का अर्थ नहीं बदलता, यथा—चोर से चौर, बन्धु से बान्धव इत्यादि ॥

(अ) जिसके उत्तर प्रत्यय आता है उसको प्रकृति कहते है ॥

तद्धितान्त विशेषण

सम्बन्धादि अर्थ बतलानेके लिये अ, इक, य, इय, ईय, ईन इत्यादि प्रत्यय होते हैं। यथा इन्द्र से ऐन्द्र,, विष्णुसे वैष्णव, वर्षसे वार्षिक, धर्मसे धर्म्य (धर्मयुक्त) और धार्मिक, क्षत्रसे क्षत्रिय, नारदसे नारदीय, ग्रामसे ग्रामीण इत्यादि ॥

हिन्दी में संज्ञा शब्द के उत्तर जो अर्थ बतलानेके लिये "वाला" प्रत्यय लगता है वही अर्थ बतलानेके लिये संस्कृतमें किसीके उत्तर मत्, किसीके वत्, किसीके इन् और किसीके विन् प्रत्यय लगता है। यथा—बुद्धिसे बुद्धिमत्, धनसे धनवत्, गुणसे गुणिन्, तेजस्से तेजस्विन्, मेधासे मेधाविन् इत्यादि शब्द सिद्ध होते हैं ॥

उत्कर्ष बतलानेके लिये तर वा ईयस् और अति उत्कर्ष बतलानेके लिये तम वा इष्ठ प्रत्यय शब्दके उत्तर लगता है, यथा—गुरु से गुरुतर वा गरीयस् और गुरुतम वा गरिष्ठ इत्यादि ॥

दोके मध्य एकका उत्कर्ष भी बतलानेके लिये तर वा ईयस् और बहुत में एकका उत्कर्ष बतलानेके लिये भी तम वा इष्ठ प्रत्यय लगता है॥ यथा-भीमार्जुनयोर्भीमो ज्यायान् ॥ पाण्डवानां युधिष्ठिरो ज्येष्ठः ।

अ, तीय, थ, म, और तम ये पूर्ण अर्थ बतलानेके लिये संख्या-वाचक शब्दोंके उत्तर आते है। इनमेंसे जिस किसीको किसी संख्यावाचक शब्दके उत्तर पाना उस शब्दको उस संख्याको पूर्त्ति बतलानेवाला विशेषण समझना। यथा—द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम, षष्ठ, एकादश, विंश वा विंशतितम इत्यादि ॥

तद्धितान्त अव्यय ॥

उपमा अर्थ बतलानेके लिये वत् प्रत्यय लगता है। यथा ब्राह्मणवत्, शूद्रवत् इत्यादि ॥

प्रकार अर्थ बतलानेके लिये संख्या शब्दके उत्तर धा प्रत्यय लगता है। यथा—पञ्चधा, नवधा इत्यादि ॥

बहुतसे तद्धितान्त अव्यय शब्द इस व्याकरण के वाक्यरचनाके प्रकरणोंमें दिये गये हैं। यथा—यदा, कदा, यत्र, कुत्र, अत्र, तत्र, इत्यादि ॥

वाक्यरचना ॥

वाक्य (अ)

संस्कृत ॥	हिन्दी ॥
अपत्यं पाण्डवः पाण्डो रपत्यं राघवो रघोः। सौमित्रिश्च सुमित्रायाः पर्वतस्यापि पार्वती ॥ विनताया वैनतेयः कुन्त्याः कौन्तेय उच्यते। द्रोणस्य पुत्रो द्रौणिः स्याद् रावणस्यापि रावणिः ॥ यस्य हन्ता दाशरथि- रासीद्दशरथात्मजः ॥ इत्याद्यो ह्यपत्यार्थ- तद्धितान्ता उदाहृता. ॥	हे कुन्तीके पुत्र तुम युद्ध करो। नहीं तो धृतराष्ट्रके पुत्र तुमको भीरु समझेंगे ॥ Fight, O son of Kunti, lest the sons of Dhritarashtra take you for a coward दशरथके दो बेटोंने अपनी माताओंका दर्शन किया ॥ The two sons of Dasarath saw their mothers कवियों मे कालिदास सबसे बड़ा है ॥ Kalidasa is the best of poets.

(अ) हिन्दीसे सस्कृतमे अनुवाद करते समय स्मरण रखना कि यथासम्भव तद्धितान्त शब्दोंका प्रयोग करना चाहिये ॥

वाक्य

संस्कृत ॥

इन्द्रस्येदं भवेदैन्द्र-
मस्त्रादि यद्विवक्षितं ।
वायव्यं च पाशुपत-
माग्नेयं वैष्णवं तथा ।
पितुर्यत् पैतृकं तत् स्या-
न्मातुश्च मातृकं तथा ।
कायिकं कायसम्बन्धि
वाक्सम्बन्धि च वाचिकं ॥
तार्किकस्तर्कवेत्ता स्या-
न्मान्त्रिको यान्त्रिकस्तथा ।
रथिकः स्याद्रथचरो
धर्म्मं चरति धार्म्मिकः ॥
लघोर्भावो लघुत्वं स्या-
ल्लघुता लाघवं तथा ।
लघिमा च भवेद्रूपं
गुरुत्वादि गुरोरपि ॥
बुद्धिमान् बलवान् वाग्मी
यशस्वी वत्सली धनी ।
हृदयालुर्दयालुश्च
मानी दानी च राघवः ॥
तद्धितान्तानि शब्दानां
रूपाण्येवं भवन्ति हि ॥

हिन्दी ॥

फलवन्त पेड़ों पर पक्षी बहुधा बैठते है ॥

Birds generally resort to trees that bear fruit

सींगवाले पशुओंसे दूर रहा करो ॥

Keep off from horned animals

गुरु शिष्य को पुत्र की नाईं देखे ॥

A teacher ought to look upon his pupil like his own son

गुरु के साथ शिष्य पुत्र की नाईं आचरण करे ॥

A pupil ought to behave like a son towards his teacher

पराये द्रव्यको मिट्टी के तुल्य देखना चाहिये ॥

One ought te regard another's property as though it were a lump of clod.

समास ॥

अनेक पदोंकी विभक्तियों का लोप करके (अ) एक पद बनाने को समास कहते हैं। समास से सिद्ध शब्द कोई तो संज्ञा होते हैं, कोई विशेषण होते हैं और कोई अव्यय होते हैं। समास करने में समास के घटक पदों के स्वरूप में कहीं २ हेर फेर होता है और कहीं २ अन्त में अ, क इत्यादि प्रत्यय भी लगते हैं ॥

समास छः प्रकार के होते हैं। अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, बहुव्रीहि और द्वन्द्व ॥

समास-संज्ञा ॥

तत्पुरुष

जिस समास में प्रथमा और सम्बोधन को छोड़ के और कोई विभक्ति बहुधा पूर्वपद के अन्त में रहे तो उसको तत्पुरुष समास कहते है। तत्पुरुष का लिङ्ग अन्तपद के अनुसार होता है। यथा—दुःखमतीतो दुःखातीतः, शंकुलया (सरौंते से) खण्डः शंकुलाखण्डः; यूपाय (यज्ञ के खम्भे के लिये) दारु यूपदारु; चोराद्भयं चोरभयं, राज्ञः पुरुषो राजपुरुषः; स्थाल्यां पक्वः स्थालीपक्वः इत्यादि ॥

(अ) समास मे क्वचित् पूर्वपद की विभक्ति का लोप नही भी होता—यथा वनेचर, दिवोदास. इत्यादि

कर्मधारय और द्विगु

विशेषण और विशेष्य (अ) के समास को कर्मधारय कहते हैं यथा—नीलम् उत्पलं नीलोत्पलं । परन्तु जब संख्यावाचक विशेषण के साथ विशेष्य का समास हो और उसका प्रयोग स्त्रीलिङ्ग वा नपुंसक लिङ्ग के एकवचन में होय, तब उस समास को द्विगु कहते हैं । यथा— त्रयाणां लोकानां समाहारः (समूहः) त्रिलोकी, त्रयाणां भुवनानां समाहारः त्रिभुवनम् इत्यादि ॥

जिस समास में प्रत्येक पद का अन्वय किसी एक क्रिया से हो उसे द्वन्द्व कहते हैं । द्वन्द्व समास दो प्रकार का होता है । इतरेतर योग और समाहारद्वन्द्व । समाहारद्वन्द्व सदा नपुंसकलिङ्ग एकवचनान्त होता है और इतरेतर योग द्वन्द्वका लिङ्ग अन्तिम पदके अनुसार होता है समाहारद्वन्द्व का उदाहरण यथा—अहीनां नकुलानां च समाहारः अहिनकुलं, रथानां अश्वानां गजानांच समाहारः रथाश्वगजं इ० । इतरेतर योग द्वन्द्वका उदाहरण यथा—हरिश्च हरश्च हरिहरौ; हरिश्च हरश्च गुरुश्च हरिहरगुरवः इत्यादि ॥

कभी २ द्वन्द्व समास न होके उसके घटक पदोंमें से और २ शब्दोंका लोप हो कर कोई एक शब्द शेष रह जाता है । यथा माता च पिता च पितरौ ॥ हंसश्च हंसी च हंसौ ॥ इस प्रक्रिया को एकशेष कहते हैं एकशेषको समास में नहीं गिनते ॥

(अ) कभी २ केवल विशेषण पदोका भी परस्पर कर्म्मधारय समास होता है- यथा—शीतञ्च तदुष्णञ्च शीतोष्णम्, महाश्चासौ राजा च महाराजः इत्यादि ॥

समास विशेषण ॥

बहुव्रीहि

विशेषण और विशेष्य का समास यदि किसी अन्य पदार्थ का विशेषण बनाने के लिये किया जावे तो उसे बहुव्रीहि कहते हैं। बहुव्रीहि समास में अन्य पदार्थ का बोध कराने के लिये विग्रह (अ) वाक्य में यद् और तद् शब्द के प्रयोग—यस्य सः, येन सः इत्यादि रूप में व्यवहार किये जाते हैं। यथा—दीर्घा ग्रीवा यस्य स दीर्घग्रीवः; जितः क्रोधो येन स जितक्रोधः ॥

सह शब्द के साथ जो तृतीयान्तपद का समास किसी अन्य पदार्थ-का विशेषण बनाने के लिये किया जावे तो उसे भी बहुव्रीहि कहते हैं। और बहुधा सह के हकार का लोप हो जाता है। यथा—लक्ष्मणेन सह सलक्ष्मणः ॥

निषेधार्थक अ अथवा न इन दो अव्ययों में से कोई एक अव्यय पूर्वपद हो के जब किसी शब्द के साथ समस्त (आ) हो तो उसे तत्पुरुष कहते है। यथा— न ब्राह्मणः=अब्राह्मणः, न अति शीतोष्णम्=नातिशीतोष्णम्; परन्तु किसी अन्य पदार्थका विशेषण बनानेके लिये यदि यही (उपर्य्युक्त) समास किया जाय तो बहुव्रीहि कहलाता है। यथा—नास्ति पुत्रो यस्य सः अपुत्रः ॥